हंसा मोती चून

प्रेरिका

वसिमालाणी उद्धारिका साध्वीश्री
सुलोचना श्री जी म० सा०



लेखिका :
वर्धमान तपाराधिका साध्वी
सुलक्षणाश्रीजी म० सा०

समर्पण

श्री धीराज बहादुर सिंह जी दुगड़

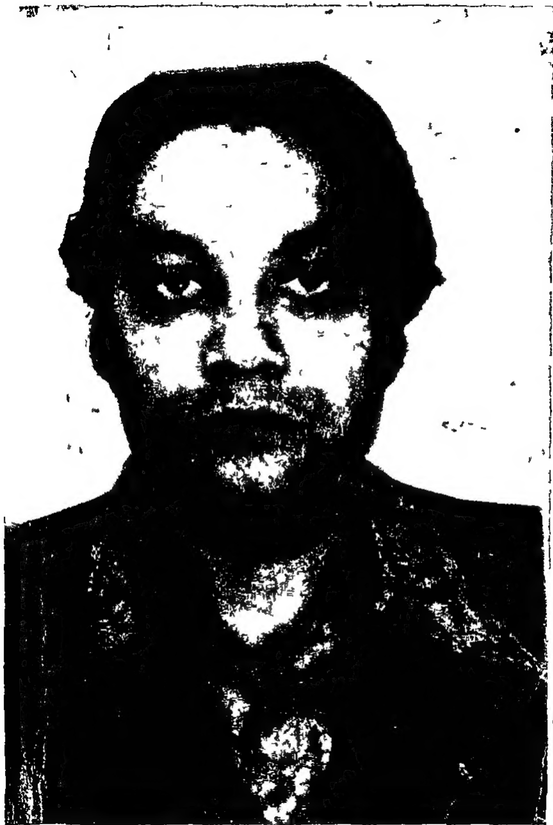
की पुण्य स्मृति में

विजय कुमारी दुगड़ द्वारा

समर्पण

प्रभात कुमार दुगड़, शरद कुमार दुगड़

ऋषभ दुगड़



धीराज बहादुर सिंह दुगड

जीवन झाकी

समय सरिता के प्रवाह के समान प्रवाहित हो रहा है। ससार परिवर्तनशील और इसमे जन्म मृत्यु का क्रम तो अनवरत अबाधित रूप से गतिमान है। यहॉ जो आज है वह कल नहीं और जो कल था वह आज नही। बसत के फूल समय पाकर धूल मे मिल जाते हैं। उसमे अपनी वृति मलकीट की भॉति नहीं जल कमलवत निर्लिप्त भाव वाली बनाई ऐसे कुछ लोग अपने चुम्बकीय व्यक्तित्व से समाज परिवार मे अमिट छाप छोड जाते है ऐसी ही जन जन के लोकप्रिय समाज के अग्रणी नररत्न मुर्शिदाबाद नगर निवासी धनपत सिह जी दुगड हुए। आपका व्यक्तित्व उज्ज्वल एव कर्त्तव्य अनूठा अनुपम है। धार्मिक प्रवृत्ति और पापमय जीवन से निवृत्ति मूलक जीवन था। आप प्रकृति से सरल स्वभाव से दयालु और हृदय से द्रवीभूत थे। आपके पौत्र श्री ताज बहादुर सिह जी के सुपुत्र श्री धीराज बहादुर सिह जी थे। बाल्यकाल से ही माता पिता के सुसस्कारो से आपका जीवन धर्मबीज से पल्लवित पुष्पित बना। नया उत्साह नया आनद नयी उष्मा नया ओज था। सरल सात्विक स्वभाव के अत्यधिक प्रिय थे। अध्ययन के साथ व्यवसाय धर्म समाज सेवा का अद्भुत साम्य। निष्ठापूर्वक पारिवारिक सामाजिक उत्तरदायित्व का निर्वहन करने लगे। वाणी मे मधुरता व्यवहार मे कुशलता स्वभाव मे नम्रता हृदय मे कोमलता चेहरे पर हसमुखता कार्य मे बुद्धिमत्ता मन मे अगाढ धर्म श्रद्धा आदि गुणो से सुभोभित जीवन अपने अदम्य साहस ईमानदारी एव कठिन परिश्रम बुद्धिमत्ता एव लगन से कार्य मे सफलता प्राप्त की। समाज के चहुमुखी विकास की नयी नयी योजना को क्रियान्वित करने मे अग्रसर रहे। आप अनेक सस्थाओ को मुक्त हाथो से भरपूर दान देते रहे। 'बहता जल निर्मल भला दौलत देता भला इस उक्ति के अनुसार आपके पूर्वजो ने देव गुरु धर्म मे दृढ श्रद्धा रखकर पालीताणा महातीर्थ मे बाबू का मदिर धनवसी टूक बनाकर अपनी चचल लक्ष्मी का सद्व्यय करके महापुण्योपार्जन किया। परमात्मा के प्रति समर्पित सद्भावना से अष्ट धातु की अनेक प्रतिमाएँ भरवाई एक लाख स्वर्णाक्षरीय

श्रद्धा-सुमन

अशरीरी होकर जो जीवित है भारत के कण कण मे प्रत्येक जन-जन के अन्तर्मन मे, जिनकी सुपावन स्मृतियाँ एव वैराग्य से आपूरित वाणी विश्व के कोने कोने मे अकित है जिनकी आदर्श यशोगाथा दिग् दिगान्त मे प्रसारित है उस ज्योतिस्तम्भ अध्यात्म पुरुष युगप्रभावक स्व आचार्य श्री जिन कान्ति सागर सूरीश्वरजी म० सा० के पावनीय चरणाम्बुजो मे अनत आस्थायुक्त प्रतिपल श्रद्धासभर वन्दन/प्रणमन उनकी 13वी पुण्य तिथि की वेला मे तथा माडवला मे जहाज मदिर गुरु मन्दिर की प्रतिष्ठा (30 . 1 99) के स्वर्णिम अवसर पर सादर समर्पित

सुलक्षणाश्री

प्रकाशकीय

वि स० 2055 श्री जिनकुशल सूरि जैन साउथ एक्सटेशन भाग 2 नई दिल्ली नगर मे परम पूज्या वनिगालानी उद्धारिका सुलोचना श्रीजी म० सा० प० पू० वर्धमान तपाराधिका सुलक्षणाश्रीजी म० सा० के ज्ञान ध्यानतप स्वाध्याय त्रिवेणी सगम रूप अभूत पूर्व अनेक विध शासन प्रभावना युक्त ऐतिहासिक चातुर्मास के उपलक्ष मे प्रकाशित धर्मनिष्ठ दानवीर स्व० श्रीमान धीराज बहादुर सिह जी दुगड की धर्म पत्नी विजय कुमारी दुगड की विविध तपश्चर्या निमित्ते धीराज बहादुर सिह जी दुगड के सुपुत्र प्रभात कुमार जी, शरद कुमार जी, ऋषभ कुमार दुगड दिल्ली (मुर्शिदाबाद) द्वारा प्रदत्त उदार अर्थ सहयोगी, परम पूज्या विदुषी गुरुवर्या सुलोचना श्रीजी म० सा० की पवित्र प्रेरणा से लोक हितार्थ प्रकाशित।

इस पुस्तक प्रकाशन मे स्वाध्याय हृदया आत्मीय प्रियकल्पना श्रीजी म० सा० प्रिय श्रद्धाजना श्रीजी म० सा० प्रिय स्नेहाजनाश्रीजी म० सा० प्रिय भव्याजना श्रीजी म० सा० का परम बौद्धिक सहयोग सराहनीय रहा उसके लिये परम आभारी है।



अन्त प्रेरणा

हर ज्ञान सम्यकज्ञान नहीं होता। जो ज्ञान विश्व और विश्व नश्वरता की यथार्थता का बोध कराता है वही सम्यकज्ञान है। जो ज्ञान भोगलिप्सा को बढाता हुआ विनाश के मार्ग पर ले जाये वह सम्यक्ज्ञान नहीं हो सकता।

जिनेश्वर परमात्मा का विज्ञान जड और चेतना की यथार्थता का निरूपण करता है। उन्होने केवलज्ञान के आलोक मे पदार्थ और उसकी परिणति को जिस स्वरूप मे देखा उसे यथार्थ रूप मे प्रस्तुत किया । उसमे अ-सत्य का एक अश भी नहीं हो सकता। आज से 2500-2600 वर्ष पूर्व परमात्मा महावीर ने जो फरमाया विज्ञान आज सिद्ध कर रहा है । एकमात्र जैन दर्शन ने ही शब्द को पुद्गल माना जबकि अन्य वैशेषिक आदि दर्शनो ने शब्द को आकाश का गुण बताया। वर्तमान विज्ञान की प्रयोगात्मक प्रक्रिया के शब्द-सरक्षण भण्डारण की सरचना से जैन दर्शन के इस सिद्धान्त की पुष्टि हुई है। इसी प्रकार पानी व वनस्पति मे जीवो की उपस्थिति के सिद्धान्त भी परमात्मा महावीर की वाणी मे ही मुखरित हुए और सिद्ध हुए। वर्तमान विज्ञान की नई खोज 'ब्लेक हॉल्स या ब्लू हॉल्स भी जैन आगमो मे अधी गुफा के रूप मे प्रतिष्ठित है ।

यदि जैनागम का कोई सिद्धान्त हमारी प्रज्ञा प्रक्रिया से परे है तो इसमे अपनी बुद्धि की अल्पता का ही अनुभव करना चाहिये। इसके लिये हम जैनागमो की एक पक्ति को भी असत्य नहीं ठहरा सकते।

समस्या रूचि की है। हमे महावीर तो मिल गये । महावीर के मदिर भी मिल गये पर महावीर की देशना नहीं मिली। अर्थात् महावीर की वाणी और सिद्धान्त समझने की रूचि नहीं मिली।

काम और अर्थ में डूबे हम दुनिया की दीवार के उस पार' के यथार्थ सत्य को देख ही नहीं पा रहे हैं। 'काम' के 'लालिये और अर्थ' के 'पीलिये से ग्रस्त त्रस्त और उसी की अभ्यस्त हमारी ऑखो का जीवन की

उपयोगिता समझ मे ही नही आती। अर्थ मे डूबा व्यक्ति जीवन का अर्थ समझे बिना ही अपनी अर्थी निकाल देता है।

यथार्थ ज्ञान के अभाव मे अपना जीवन हार जाता है। यथार्थ ज्ञान ही वह दीया है जो जीवन की हर अनुकूल किवा प्रतिकूल 'परिस्थिति मे रोशनी प्रदान करता है और जीवन की राह आसान बनाता है।

उसी यथार्थ ज्ञान को आसान भाषा, रूचिकर शैली और आकर्षक विद्या मे प्रस्तुत पुस्तक मे परोसा गया है। प्रश्नोत्तर के रूप मे गुम्फित इस पुस्तक की आकल्पना विदुषी साध्वी श्री सुलक्षणा श्री जी म. ने की है। इसमे विद्वता का प्रदर्शन नही अपितु जिज्ञासा–समाधान का साक्षात् दर्शन है। इसमे शास्त्रीय–दुरूहता न होकर साहित्यिक प्रवाहमयी शब्द-लालित्य और भाव-विभोरता की छोक है, जो पाठक को बोध रखती है।

पुस्तक छोटी है, पर इसका भाव-परिणाम गहन है।

वर्धमान तपाराधिका साध्वी श्री सुलक्षणाश्रीजी म० का यह प्रयास स्तुत्य और अनुमोदनीय है।

आशा है पाठक गण इसका पूरा-पूरा लाभ उठाकर स्वाध्याय की प्रेरणा पाकर अपने अन्तर्मन की शुद्धता को जीवन का लक्ष्य बनायेंगे और परमात्म वाणी का प्रसाद पाकर परम-प्रासाद का वरण करने का पुरुषार्थ करेगे।

सिणधरी

मणिप्रभसागर

शुभ कामना

जैन दर्शन पूर्णत आध्यात्मिक आत्म चिंतन का दर्शन है। इसमे अध्याय की सिर्फ चर्चा ही नहीं की गई बल्कि इस दर्शन मे अध्यात्म की ओर समाज को अग्रसर करने की अध्यात्म शक्ति भी है। व्यक्ति अपने प्रवृति प्रधान जीवन जीते हुए भी निवृति कैसे प्राप्त करे ? किस आराधना साधना के माध्यम से व्यक्ति निवृति प्रधान मार्ग पर प्रगति करे ? जैन दर्शन इन्हीं बातो का प्रत्युत्तर देता हुआ यथार्थ की प्रतिती कराता है। व्यक्ति समाज की एक लघुतम अपितु सशक्त इकाई है। वह समाज में जीता है और समाज मे निवसित अनेक व्यक्तियो से व्यवहृत होता है। भारत की मनोभूमि के कण कण मे अगाध ज्ञान के ज्योतिर्मय कण बिखरे पडे हैं। जैनागमो की प्रत्येक पक्ति तथा प्रतिवाक्य मे आत्म बोध की समुज्ज्वल ज्योत्सना अभिभाषित हो रही है। पिटको मे जहाँ कही आपकी नजर जाएगी आप पाएगे कि बोधि ज्ञान की अन्त सलिला सरस्वती प्रवाहित है। उपनिषदों के अधिकाश पृष्ठो पर दिव्य अध्यात्म ज्योति के दर्शन होते है। स्वाध्याय के समान दूसरा तप न कभी अतीत मे हुआ नवर्तमान मे कहीं है और न भविष्य मे कभी होगा। बृहत्कल्पभाष्य मे कहा है— 'नवि अत्थि नवि अ होही सज्झाय सम तवोकम्म' ज्ञानावरणीय कर्म का क्षय इसीसे होता है। स्वाध्याय प्रत्येक युग मे फलवती होता है। इसके बिना जीवन इस प्रकार है जैसे बिना भगवान के मदिर बिना काति के मोती बिना हरियाली के उपवन और बिना शाति के मन। चाद आकाश के अचल को स्पर्शित करता है चादनी भूमि के तल को। अधकार बाहर भी है और भीतर भी है। बाहरी तम तो लाइट सूर्य की रोशनी के द्वारा हटाया जा सकता है परन्तु भीतर मे जो अज्ञान का गहन अधकार है उसे मिटाने हेतु उस दिव्य चन्द्रमा की अनिवार्य उपयोगिता है आचार्य मानतुग सूरि ने कहा—

नित्योदय दलित मोहमहान्धकार गम्य न राहु वदनस्य न वारिदानाम्।
विभ्राजते तव मुखाब्ज मनल्पकान्ति विद्योतयज्जदपूर्व शशाक बिम्बम्।।

जो सदैव उदित रहे, मोह के सघन अंधकार का अनावरण करे, जिसे राहु ग्रसित न कर सके । जिसे बादल आवृत न कर सके तथा जो सम्पूर्ण विश्व को अपूर्व प्रकाश प्रदान करे, ऐसा अद्भुत अलोकिक चन्द्रमा है अध्यात्म। इसके द्वारा जीवन मे सत्पथ की प्राप्ति, सम्यक् बोध की उपलब्धि होती है। और अध्यात्म स्वाध्याय से भीतर मे छाये अधकार का नाश होता है। साहित्य ज्ञानराशि का संग्रहित कोष है। परन्तु बडा खेद है कि आधुनिक युग मे अधतन सिर्फ ऐसा साहित्य रचा जाता है जो व्यक्तिगत कुण्ठाओ और उत्पीडन की अभिव्यक्ति हो, या 21वी सदी के पाश्चात्य साहित्य की अश्लीलता की नकल आदि भौतिक से सत्रस्त जीवन मे सुख, शाति, समाधि का अभाव हे। जहॉ तहॉ अश्लील साहित्य के कारण अनैतिकता को बढावा मिल रहा है। मन को अशुभ विचार, अशुभ चिन्तन मे से रोककर शुभ विचार शुभ चिन्तन की ओर मोडे ने की अक्षुण्ण उर्जा एकमात्र सत्साहित्य, अध्यात्म से ओत-प्रोत कृतियो मे है।

मुझे यह व्यक्त करते हुए अत्यन्त आनद हो रहा है कि मेरी कनिष्ठ भगिनी अन्तेवासिनी सुसाध्वी श्री सुलक्षणाश्रीजी ने विविध विषयो पर तीर्थ, सम्यग्दर्शन परमात्मा, जनरल जानकारी के प्रश्न-उत्तर के माध्यम से अपनी सम्यक् प्रज्ञा को अभिव्यक्त किया है। पुस्तक का शीर्षक एव नामकरण **"हंसा मोती चून"** अत्यन्त सार्थक उपयुक्त है। साध्वीश्री का प्रयास स्तुत्य है सराहनीय है।

आध्यात्मिक सगीत से आप्लावित यह कृति अवश्य पाठक के प्राणो मे रसधार बनकर प्रवाहित होगी, जन मानस मे जैन धर्म के प्रति निष्ठा उत्पन्न करने के साथ नैतिक सस्कार परिमार्जित करेगी।

अन्त मे, तप ध्यान साधना के साथ साध्वीश्री रत्नत्रय की सम्यक् आराधना, ज्ञानाराधना के क्षेत्र मे अभिवृद्धि करती रहे, यही अन्तर की गहराई से शुभाशीर्वाद एवं मगल कामना।

साध्वी सुलोचनाश्री

स्वकथ्य

विश्व की प्रत्येक आत्मा अनत एव अपरिमित शक्तियो का पुज है। उसमे अनतज्ञान अनतदर्शन अनत सुख शाति और अनत शक्ति का अस्तित्व अतर्निहित है। समस्त महाशक्तियो का स्रोत उसके अन्दर निहित है। वह अपने आप मे ज्ञानमय ज्योतिर्मय शक्तिसम्पन्न महान है। वह स्वय ही अपना विकासक और स्वय ही विनाशक है । इतनी विराट शक्ति का आधिपत्य पाने के बौजूद भी वह अनेक बार इतस्तत भटक जाती है पथ भ्रष्ट हा जाती है ससार सागर मे गोते खाती है अपने गतव्य स्थल तक नहीं पहुँच पाती। ऐसा क्यो होता है ? जीवन मे आत्म चिन्तन, स्वबोध यथार्थज्ञान का अभाव है। मानव मन मे विचारो मे और जीवन में एकाग्रता स्थिरता तन्मयता नहीं होने के कारण भटकता है। अत अनत शक्तियो को अनावृत करने आत्म ज्योति को ज्योतित करने और अपने लक्ष्य तक पहुँचने हेतु सत्साहित्य का अध्ययन मनन आवश्यक है। जैसे पानी मे तेजाब मिलाकर उसमे विद्युत शक्ति का स्पर्श करने से हाइड्रोजन और ऑक्सीजन वायु अलग-अलग हो जाती है। वैसे ही आत्मा और कर्म को पृथक करने के लिए स्वाध्याय यम नियम रूप तेजाब तथा एकाग्रता रूप विद्युत दोनो आवश्यक है। दोनो का सामजस्य सम्यग्ज्ञान (सम्यग्बोध) है। मानव जीवन का चरम लक्ष्य है जन्म जन्मान्तर के बधन से मुक्ति। सन्मति सुसस्कार उस परम लक्ष्य की प्राप्ति के मार्ग है। देश से तेज रफ्तार से बढ रही पाश्चात्य शिक्षा प्रणाली इसके प्रचार-प्रसार से हमारी अपनी सस्कृति को गहरी क्षति पहुँच रही है। शिक्षा की अनदेखी करके कोई भी समाज आगे नहीं बढ सका। स्वाध्याय सस्कृति का ऐसा अविभाज्य एव अनूठा अग है। हृदय की सुप्त आकाक्षाओ को उभार कर कार्य रूप मे परिणत करने की अदम्य क्षमता स्वाध्याय मे है।

जीवन के प्रति प्रभात कदम कदम पर नई नई समस्याआ के तीक्ष्ण शूल चुभ रहे है साझ ढलते ही नये प्रश्नो की पीडा मन को परेशान करती है। कहीं भी कोई सुख शाति प्रसन्नता या खुशी की रोशनी परिलक्षित नहीं

होती, मानव के पास बुद्धि, वैभव सत्ता सम्पत्ति, वैज्ञानिक सारी सुविधाऍं उपलब्ध है फिर भी क्यो अशाति, बेचैनी, असतुष्टि है इसका कारण है अभी तक हम बाह्य परिवेश मे जीते रहे, बाह्य साधन सामग्री मे ही लुप्त हो आकठ डूबे रहे। भीतर मे निहित अक्षय ज्ञान की धारा मे प्रवाहित न होकर वर्तमान युगीन अध पतन मे बहते गये। यही मूल कारण है हमारी अशाति का। अत आत्मकि शांति, शाश्वत सुख पाने हेतु हमे अश्लीलता का त्याग कर यथार्थ का ज्ञान पाना होगा। कामोदीप्त, कुसाहित्य से विमुख बनकर भग महावीर, सर्वज्ञ कथित प्राप्त वचनो पर सश्रद्धा मनन करना है।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य मे शातिमय जीवन जीने हेतु आध्यात्मिक सत्साहित्य की महती आवश्यकता है। जैसे सरिता की शोभा सलिल से है वैसे ही जीवन की शोभा स्वाध्याय से है। स्वाध्याय जीवन का नदन वन है। स्वाध्याय से जीवन का सुन्दर निर्माण हो सकता है।

आर्य सस्कृति जो विश्व सस्कृति की जननी पदवी से विभूषित थी, उसे तहस नहस करने मे कटिबद्ध अग्रेजो ने अन्तिम प्राण घातक विस्फोट किया। टी०वी० विडियो व स्टार चेनलो के द्वारा हमारी सस्कृति माता की ललाट खून से सन दी गई। जहाँ घर-घर मे, रसोई घर मे, पणिडे मे देवताओ का वास रहता था आज वहाँ पर इष्टदेव टी०वी० देवता अपना सिहासन लगाकर विराजमान हो गये। हमारे आर्य लोग सुबह से शाम तक आँखे फाड कर टी०वी० देखते रहते। अब तो स्टार टी०वी०, जी० सिनेमा एम० टी०वी० आदि विभिन्न चैनलों द्वारा युवा वर्ग को गुमराह बनाया जा रहा है। चार-चार देशो के कार्यक्रम सरलता से घर बैठे देख सकते है अस्सी करोड़ व्यक्तियो के मस्तिष्क में अनार्य सस्कृति का डेरा फिर करने का षड़यंत्र विकास के ओट मे चल रहा है। इसी कारण स्वाध्याय पद्धति छूटती जा रही है। स्वाध्याय करने की रूचि नही जगती है। लोगो को कुछ ज्ञानोपार्जन हो इसके लिए सघ मे एक नवीनतम प्रयोग चल रहा है प्रश्न पेपरो का प्रकाशन। प्राय देखा गया है कि लोग प्रश्नो के उत्तर ढूँढने के लिए बहुत सजक बन गये। टी०वी० वि०सि०आर० क्लब, होटल आदि को भूलकर धार्मिक पुस्तको को हाथ मे लेते है जिन पुस्तको पर कई समय से

धूल चढी हुई थी। घर घर मे यही चर्चा होती है फोन पर भी यही बात होती है। रात को 1-2 बजे तक उत्तर खोजने मे लगे रहते है। सचमुच लोगो का समय धर्म ध्यान मे व्यतीत होता है॥ विगत चातुर्मास चैन्नाई आदोनी हैदराबाद मुम्बई इन्दौर ब्यावर दिल्ली क्षेत्र मे प्रश्न पेपर निकाले गये। लोगो की जिज्ञासा मुझे पुस्तक लिखने के लिए प्रेरणा दी। इसी प्रेरणा का मूर्त रूप है 'हसा मोती चून'।

इस कृति के अन्तर्गत आगम तत्त्व दर्शन, कर्मवाद इतिहास व्यवहारिक ज्ञान सामान्य ज्ञान सम्बन्धी प्रश्न सग्रहित किये गये है इसमे जीवन्त स्पर्श है परमात्मा के आचार विचार और दर्शन का जो युग के साथ जीवन जीता है युग की समस्याओ मे जीता है उन्हे समाधान देती है यह कृति। यह सच्चाई का बिम्ब है। हम इसे पढे देखें चिन्तन मनन करे। समस्याओ का समाधान करके जन्म मरण दुख शोक की भयकर व्याधि से मुक्त बन कर निजत्व को प्राप्त करे।

परमात्मा श्री जिनेश्वर देव देवाधिदेव की अनुपम कृपा और गुरुदेवो का दिव्य आशीर्वाद है। परम पूज्य युग प्रभावक प्रज्ञा पुरुष आचार्य श्री जिन कान्ति सागरसूरिश्वरजी म०सा के अनत उपकारो को कभी भूला नहीं सकती। मेरे शासन प्रभावना के कार्यों मे आप श्री की अदृश्य कृपा का सबल सदैव मेरे साथ रहा और रहेगा।

जिन शासन के महान चमकते सितारे शात प्रशात हृदय के धनी अक्षय ज्ञान पुज परम पूज्य गणिवर्य श्री मणिप्रभ सागर जी म०स० एव प० पू० वरिमालाणी उद्धारिका मम जीवन दीप वात्सल्य वारिधि, श्रद्धेया गुरुवर्या श्री सुलोचना श्री जी०म०सा की सबल प्रेरणा एव शुभ आशीर्वाद का सुफल है यह कृति। एव पूज्या श्री का समय समय पर मार्ग दर्शन व लेखन म सतत प्रेरणा स्रोत इसी प्रकार बना रहे। यह सब मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है। आप मेरी ससारी प्रिय दीदी भी है। रक्त के प्रत्येक बूद मे वात्सल्य भाव निहित है। मेरी प्रिय भगिनी परम सयोगी प्रीति सुधाश्रीजी एव मेरे सतकार्यो म सतत् सहायक और मेरे साथ साया बनकर रहने वाले प्रीतियशाश्रीजी आदि साध्वी मडल को भी भूला नहीं सकती। मेरे सहायक

बनने के आशय से सहायता की है उन नामी अनामी उपकारियों को भी भूला नही सकती। इस शुभ वेला मे अपनी मातु श्री लाडबाई एव अट्ठाई से वीसस्थानक तप की आराधना करने वाले, कर्मवाद, तत्त्व ज्ञान के प्रकाण्ड विद्वान महान तपस्वी पिताश्री गुमानमलजी वेद का अविस्मरणीय प्रेरणा समय-समय पर मिलती रही। उस आभार को शब्दो मे व्यक्त नही कर सकती। धन्य है ! ऐसा माता-पिता को जिन्होने अपनी ममता को मारकर अपनी दोनो ही सन्तान को जिन शासन को समर्पण किया है।

आशा है तत्त्व जिज्ञासुओ से, कम परिश्रम से ज्ञान गगा मे अवगाहन कर आत्म शाति को उपलब्ध करेगे। पवित्रतम जीवन जीने को कृत सकल्पी बनेगे। यही अन्तर अभिप्सा।

साध्वी सुलक्षणाश्री

श्रद्धा दीप

(1) श्रेय कल्याण गुरु लोक प्रियम् ।
प्रभु वीर वाणी भव्योपदेशकम् ।।
परम पूज्यवता सर्व सुख दायक ।
जगत पूज्य गुरु कातिसूरि नम ।।

(2) परमात्मा भक्तौ रग रग व्याप्तौ ।
सचिदानद आत्म सुख निर्मितौ ।।
महामुनि वैराग्य तप साधन उत्कर्षतौ ।
जगत पूज्य गुरु कान्ति सूरि नम ।।

(3) जिनेन्द्रय निरन्तर भक्त गुरौ ।
सत्य मार्ग विचक्षण दर्शितौ ।।
ज्ञान रश्मि तत्त्व मुक्ताफल विक्सितौ ।
जगत पूज्य गुरु कान्ति सूरि नम ।।

(4) प्रभु चरण शरण स्वीकारितौ ।
दुख पाप मिथ्या निवारकौ ।।
सम्यग् दर्शन हृदय व्याप्तौ ।
जगत पूज्य गुरु कान्ति सूरि नम ।।

(5) कान्ति सूरि पट शिष्य शौभतौ ।
जहाज मन्दिर भव्य दीप्तौ ।।
जन लोक सुलोचन केन्द्र आकर्षितौ ।
जगत पूज्य गुरु कान्ति सूरि नम ।।

अभिवन्दना

(1) श्रद्धेय चरण सद्ज्ञानी सुरासुर सुपूजित ।
लोकप्रिय सदा शान्तो ज्ञान ध्यान तपोरतः ।।
महाधीरो महावीरो मणिप्रभयो मुनिवर. ।
भव्यानन. सदानदी क्षमाशीलो विचक्षण ।।

(2) महाज्ञानी महाध्यानी महायोगी महातपोनिधि
सरलो मधुरो धीमान्समाजोन्नति. कारक. ।
अनेक गुण सयुक्तो मणिप्रभसागर महामुनि .
प्रज्ञावन्तो मनीषिमान मधुवर्षीसुतथ्य वाक् ।।

(3) शान्तञ्चन्द्राच्छतसो रतिसम सुदीप्तिमान,
एसो मुनिवरौ योग्यौ धर्मोद्योत करौ प्रियौ ।
धर्माऽमृत सरोवरौऽऽध्यात्मिक प्रवचन पटुः ,
गणि मणिप्रभ निर्भयौ श्रद्धा सुमनौऽर्चक . ।।

(4) सहजानंदी आत्मानंदी स्वरमण करतः मुनिवर :,
करुणानंदी भव्यानदी कल्पतरु दीपित ।
ज्ञानानदी ध्यानानंदी भव्यजीव बोध दायकः ,
मणिप्रभसागर महानदी उपसम रस झिलित. ।।

(5) जहाज मदिर स्मारक भव्य जग निर्मितौ ,
जन जनस्य नयन आकर्षक केन्द्र तव दर्शितौ ।
जिन गुरौ प्रतिष्ठा महोत्सव रचनात्मक कारितौ ,
सुकलश मणि कीर्ति ध्वज लहरायो सुलोचन दर्शन वारितौ ।।

सुलोचन सौरभ

श्रद्धेय गुरु पद पकज निर्मल पूजितम्
क्षमाशील करुणावत मुख चन्द्र दीप्तितम्
ज्ञान ध्यान रक्त तप सयम दर्शितम्
सुलोचना सहस्र चरण कमल भावे वन्दितम्

योग अनिष्ट ईष्ट करि शुद्ध भाव आलोकितम्
बहु भव्यलोक सम्यग् मार्गे हृदय रञ्जितम्
सहज करूणा लोक प्रिये आत्मसाधन प्रवर्तितम्
सुलोचना सहस्र चरण कमल भावे वन्दितम्

मोक्ष मार्ग साध्य साधन ज्ञान दर्शन चरित्रतम्
क्षायिक समकित जीव तत्व कर्ममल विनाशितम्
अलिप्त भावे निजात्म रूपे आत्म स्वरूप चिन्तितम्
सुलोचना सहस्र चरण कमल भावे वन्दितम्

मृदुल मधुर भाषी प्रेम वाणी वीर प्रचारितम्
सरल सहज शान्तमुद्रा भव्य जीव आनद कारितम्
वर्षायाम् नयने सौम्यता मधुरता दिव्य विभूतितम्
सुलोचना सहस्र चरण कमल भावे वन्दितम्

सुखद वीर शासन ज्योति भक्ति युक्त मम दीपितम्
जैन शासन नभमणि मोह तिमिर हर नाशितम्
कोटि सूर्य चन्द्र कान्ति शरण सुखकर लक्ष लक्षितम्
सुलोचना सहस्र चरणकमलभावे वन्दितम्

:: अनुक्रमणिका ::

अध्याय | पृष्ठ

प्रथम विभाग

अध्याय	पृष्ठ

द्वितीय भाग

चलें मुक्ति निलय

1

(1) एक अन्तर्मुहूर्त मे आत्मा अनत काल के अर्जित कर्म को नष्ट कर देती है ऐसा कौन-सा एटम बम है ?

(2) मिथ्यात्व रूप महा विषको अति शीघ्रता से दूर कर देता है। ऐसा कौन-सा गारूडी यत्र है ?

(3) एक ऐसी कौन-सी निधि प्राप्त हो जाने पर भौतिक निधि पर आसक्ति नही रहती ?

(4) गज सुकुमाल के पास कौन-सी शक्ति थी जिससे अपने ससुर पर रोष नहीं आया ?

(5) आत्मा को अन्तर्मुहूर्त मे सात राज दूर मुक्ति पुरी मे पहुँचाने वाली कौन सी लिफट है ?

(6) ऐसा कौन-सा चिन्तामणि रत्न है अनेक भावो मे ससारिक सुखदे कर अन्त मे शाश्वत सुख देता है ?

(7) खदक कुमार मुनि की चमडी उतारने पर भी क्रोध नहीं आने का कारण क्या है ?

(8) मुक्तिमजिल को प्राप्त करने की कौन-सी सीढी है ?

(9) आत्मा से पुद्‌गल भिन्न है ऐसी दृढ मान्यता किसकी है ?

(10) ऐसा कौन-सा घडा है जिसमे तपरूपी जल भरा जाये जिसे वह शीतल बन जाता है ?

(11) खंदक सूरिके 499 शिष्यो को घाणी मे पीलने पर भी किसने आत्मभावो को बिगडने नही दिया ?

(12) नवपूर्व के अध्येता को अज्ञानी की सज्ञाओ मे से ज्ञानी की संज्ञाओ मे ट्रान्सफर करने वाला कौन है ?

(13) अनाथी ने श्रेणिक को ऐसा कौन-सा गारूडी मत्र दिया ?

(14) किस आत्मा का चक्रवर्ती का सुख भी दुख रूप मे दिखाई देता है ?

(15) चौदह राजलोक के वास्तविक स्वरूप को दर्शाने वाली गाईड कौन सी है ?

(16) पाडवो की पत्नी द्रौपदीसती किसके प्रभाव से कहलाई ?

(17) जिनवाणी का श्रवण एकाग्रता से कौन-सी आत्मा पर सकती है ?

(18) सातराज दूर रहे हुये मुक्तआत्माओ के स्वरूप का दर्शन कराने वाली कौन सी दूरबीन है ?

(19) प्रभव चोर भौतिक सप्रति लेने गये अध्यात्मिक सपत्ति किसके प्रभाव से पाई ?

(20) दमयन्ती को वन म छोडने वाल नल के प्रति दमयन्ती का प्रेम भाव वैसा ही रहा इसका क्या कारण है ?

(21) ससाररूपी समुद्र से मुक्ति रूपी किनारे पर ले जाने वाली कौन सी नौका है ?

(22) आत्म प्रदेशो पर अनादिकाल के पाप को दूर करने वाला विशिष्ट सूर्य कौन सा है ?

(23) अत्यत दुख कष्ट सहन करने पर भी सुभद्रा को जिन धर्म पर किसने टिकाये रखा ?

(24) आत्मा के परिणामो को शुद्ध कौन रखता है ?

(25) जीव अजीव आदि तत्वा की वास्तविकता कौन दर्शाता है ?

(26) समृद्धिशाली सुख म झुलने वाले को सयम के झुले मे किसने झुलाया ?

(27) आत्म तत्व को वास्तविक स्वरूप दृष्टि गोचर करने के लिये कौन सा दर्पण है ?

(28) एगोऽह नत्थि मे कोई नाह मन्नस कस्सवी इस प्रकार का चिन्तन, जागृत दशा किस आत्मा की रहती है ?

(29) भाव चारित्र को प्राप्त कर अतर्मुहूर्त म मोक्ष कौन प्राप्त कर सकता है ?

(30) आत्म प्रदेशो पर अनादि काल के कर्म चिपके हुए है उनको दूर करने मे कौन सायी है ?

(31) आत्म को भौतिक सपत्ति का स्पष्ट रुप से दर्शन कराने वाला विशिष्ट चक्षु कौन-सा है ?

(32) आत्मा का अर्द्धपुद्गल परावर्तन काल शेष रहता है उसकी भवितव्यता अनुकूल हो तो उस समय क्या प्राप्त होता है ?

(33) कौन-सी आत्मा पाप करने से डरती है ?

(34) मुक्ति महल मे पहुँचाने वाला राकेट कौन-सा है ?

(35) चन्दन बाला को मूला ने भवरे मे डाल दिया फिर भी रोष नहीं आया। इसका क्या कारण ?

(36) आर्द्र कुमार को आर्य देश मे आने के भाव किसने प्रकट किये ?

(37) तीन लोक के नाथ बनाने की शक्ति किसमे है ?

(38) मोहनीय कर्म को निर्मल बनाने वाला पावर फूल साधन क्या है ?

(39) दुख आरम्भ से उत्पन्न होता है ऐसा कौन कहता है ?

(40) कौन-सी आत्मा को पाप बध अति अल्प होता है ?

(41) तप चारित्र रहित श्रेणिक ने किस बल पर तीर्थंकर नाम का बध किया ?

(42) कुष्ट रोगी के साथ शादी करने पर भी मैना के मुँह पर अश मात्र परिवर्तन नही यह किसका प्रभाव ?

(43) शाश्वत अशाश्वत का बोध कराने वाला प्रोफेसर कौन है ?

(44) ससार मे सुलगते हुए दावानल से बचाने वाली विशिष्ट मशीन कौन-सी है ?

(45) छोटे बालक अतिमुक्त को केवल ज्ञान की समृद्धि किसने दी ?

(46) आत्मा व देह की एकमेकता के भ्रम को नष्ट करने वाला एटमबम्ब कौन-सा है ?

(47) एक अद्वितीय सूर्य कौन है जो आत्मा को अधकार से प्रकाश की ओर ले जाता है ?

(48) भवो की गिनती कब से होती है ?

(49) धर्म क्रिया तथा धर्म को पहुँचाने हेतु सर्वोत्तम थर्मामीटर कौन सा है ?

(50) मिथ्यात्व रूपी अजीर्ण को दूर करने की श्रेष्ठ औषधी क्या है ?

(51) कौन सा भोमिया है जो भयानक भव अटवी को पारकर मुक्ति मे पहुँचा देता है ?

(52) सभी जीवो पर मैत्रीभाव किस आत्मा मे प्रकट होता है ?

(53) कौन-सा वैद्य है जा मिथ्यात्व रूपी कैंसर की गाठ को उखाड कर फैंक देता है ?

(54) आत्मा और कर्म को दर्शाने वाली कौन सी दूरबीन है ?

(55) कौन सी कपनी है क्रियारूपी सेर खरीदने वाला लाभ मे ही रहता है ?

(56) कौन सी आत्मा ज्ञान रूपी रत्नो की इच्छा करता रहता है ?

(57) कौन सा द्वार है जिसमे प्रवेश किये बिना मोक्ष मे नहीं जा सकता है ?

(58) वह स्वीच कौन-सा है जो भौतिक पदार्थों की लाईट को बद कर देता है ?

(59) धर्मरूपी रत्नो को रखने हेतु सर्वोत्तम तिजोरी कौन-सी है ?

(60) ऐसा कौन सा स्तभ है जिसके आधार बिना मुक्ति निलय मे नहीं जा सकते ?

(61) 60 हजार पुत्रो की मृत्यु के समाचार सुनने पर भी आर्तध्यान से किसने बचाया ?

(62) भरत को मारने के लिये मुष्ठि उठाई परन्तु बाहुबल ने स्वय का लोच किया वह किस की कृपा से ?

(63) पुण्या श्रावक की वीर प्रभु से लेकर आज तक सामयिक की यशोगाथा किसके प्रभाव से गाई जाती है ?

(64) कृष्ण अविरति होने पर भी तीर्थंकर नाम कर्म का बध किसके प्रभाव से किया ?

(65) 12 वर्ष कोशा के घर रहने वाले स्थूलभद्र को मुनिपद से सुशोभित किसने किया ?

(66) कुर्मापुत्र को गृहस्थावस्था मे केवल ज्ञान के सहायक कौन बने ?

(67) नेमिनाथ के किस आधार पर कृष्ण को कहा तुम मेरे जैसे बनोगे ?

(68) छः खड के अधिपति भरत को आत्मसाधना में अग्रसर किसने बनाया ?

(69) सुलसा के पास कौन-सी साधना थी जिसे वीर प्रभु ने धर्मलाभ कहलाया ?

(70) आनद श्रावक को बारह मे देवलोक की ध्वजा किसके प्रभाव से दिखाई दी ?

(71) गुणसेन ने 13 भव तक समता की झील मे किसने झुलाया ?

(72) पालने मे झुलते हुए वज्र कुमार को 11 अग किसकी कृपा से याद हुआ ?

(73) कुष्ठ रोगी अभयदेव सूरि जयतिहुअण स्तोत्र की रचना करते हुए रोग नष्ट हो गया यहाँ किस का चमत्कार हुआ ?

(74) सप्रति को सवा क्रोड जिनबिब सवा लाख मदिर बनाने की प्रेरणा किसने दी ?

(75) 1444 ग्रंथ की रचना हरिभद्र सूरि ने किसके आधार पर की ?

(76) बेडियों से जकडे हुए मानतुगाचार्य को भक्तामर स्त्रोत बनाने की प्रेरणा किसने दी ?

(77) जिनदत्त सूरि के पास कौन-सा चमत्कारी मंत्र था जो एक लाख तीस हजार अजैन को जैन बनाया ?

(78) हेमचन्द्राचार्य ने कुमारपाल से कौन-सा फाउंडेशन मजबूत करवाया ?

(79) हेमचन्द्राचार्य को कलिकाल सर्वज्ञ की उपमा से किसने अलंकृत किया ?

(80) जिनदत्त सूरि ऐसी कौन-सी आराधना के प्रभाव से एकावतारी बने ?

(81) राणी के प्रेम सागर मे न्हानेवाले धन्नाजी का सयम सागर मे किसने न्हलाया ?

(82) तोरण पर से लौट ने पर भी नेमि पर रोष नहीं तथा सयम की भावना राजुल के दिल मे किसने जगाई ?

(83) आर्तध्यान रौद्रध्यान से कौन सी आत्मा बच सकती है ?

(84) मृगावती चन्दनबाला को केवल ज्ञान की सत्ता किसने दी ?

(85) धर्मरूपी स्टिमर मे बैठने पर कौन-सा जल तिराने का काम करता है ?

(86) सुदर्शन ने कैसे जाना नवकार मत्र मे अचित्य शक्ति है ?

(87) विजय सेठ व विजया सेठाणी ब्रह्मचर्य मे दृढ किसके प्रभाव से रहे ?

(88) धर्म के खातिर कौन सी आत्मा अपना बलिदान देती है ?

(89) एसी कौन सी आत्मा है वह जिनबिब जिन आगम की रक्षा करती है ?

(90) गणधरो को वीर प्रभु पर श्रद्धा किसने कराई ?

(91) ऐसा कौन सा व्यक्ति है जिसने अहिसा का बगुल बजाया है ?

(92) अभयदेवसूरि ने नवागी टिका की रचना किसे प्रभाव स की ?

(93) ऐसा कौन सा व्यक्ति है राष्ट्रपति है जो जन्ममरण की फॉसी से बचा सकते है ?

(94) अनिवृति करण मे ग्रथिभेद से जीव आत्मा को किसकी उपलब्धि होती है ?

(95) रेवती ने तीर्थंकर नाम कर्म का बध किसके प्रभाव से किया ?

(96) शूलपाणी यक्ष भगवान को कष्ट दिया भगवान ने उसको क्या दिया ?

(97) अबड के पास कौन सी निधि थी जो आने वाली उत्सर्पिणी मे देवनाथ 22वा तीर्थंकर बनेगा ?

(98) भगवान महावीर ने नयसार के भव मे क्या प्राप्त किया है ?

(99) वीतराग वाटिका मे प्रवेश करने का सर्टिफिकेट कौन-सा है ?

(100) मुक्ति महल की मजिल पर पहुँचने के लिये प्रथम सीढी कौन-सी है ?

(101) पाप धोने की वाशिंग मशीन कोन-सी है ?

(102) सिद्ध का सेम्पल क्या है ?

(103) ज्ञान की दिवाली किसने प्रगटावी ज्ञान का दिवाला किसने निकाला ?

(104) दर्शन की जगमगाती ज्योत किसने प्रगटावी, दर्शन का दिवाला किसने निकाला ?

(105) चारित्र की दिवाली किसने मनाई, चारित्र का दिवाला किसने निकाला ?

(106) तपकी ज्योति किसने जलाई, तप का दिवाला किसने निकाला ?

(107) काया छोटी भावना मोटी, काया छोटी भावना खोटी ?

(108) उपसर्ग सहते सहते संसार किसने बढाया, उपसर्ग सहते सहते ससार किसने घटाया ?

2) प्रश्न :

(1) पाप भीरू. . ... मोक्ष मे है। लोक भीरू . .. .नरक मे गये।

(2) मामा. . ..मोक्ष मे है भाणजा . . . .भटकता है।

(3) ससुर ... . .मोक्ष मे है जवाई. .. . . भटकता है।

(4) माता . . . . मोक्ष मे है पुत्र. .... . भटकता है।

(5) भगवान महावीर का भक्त .... नरक मे शत्रु. ... . .देवलोक मे।

(6) शिकार खेलते-खेलते .... वैराग्य हुआ।

(7) पानी की बूद से .... . .वैराग्य हुआ।

(8) पढते-पढते . . .भगवान बन गये।

(9) पत्थर पर.. . ... भगवान बने गये। सचित पर सिद्ध . ... हुये।

(10) काया की कुबानी से   केवल ज्ञान हुआ। शब्द सुनकर..
केवल ज्ञान हुआ।

(11) गाली खाकर .. .. गुणवान बने। प्रण पालकर .. .. ..प्राण रक्षा की।

(12) सहार करते करते.. .. सिद्ध मार्ग पर गये। हराने गये स्वय हार गये।

(13) स्तम देखकर .. ..सत बने। सग्राम करते करते .. साधु बने।

(14) चोर को देखकर ..चेत गये। अदत्तादान से सेवन करते अदत्तादान का त्याग।

(15) हिसा करते हुए अहिसा के हिमायति .. .. राजा बने।

(16) परठने जाते.. ....परमात्मा बने। पैर की पीडा से रहित .. ..बने।

(17) प्राण बचाकर.. परमात्मा बने। मार खाकर ... मोक्ष मे गय।

(18) नारी को देख नारी .. ने तजी। समोसरण देखकर .. .. केवल ज्ञान हुआ।

(19) भगवान को देखकर .. ..भगवान बने।

(20) साधु को आहार बहराते देखकर ... ... अज्ञान चला गया ?

(21) आलोचना करते .... अरिहत बने। लाल शस्त्र से लडकर ... .शिवरमणीवरी।

(22) दो निकट के सम्बधी बिना मुहपत्ती ओघा स ... .. केवल ज्ञान पा लिया।

(23) प्रश्न पूछकर .. .. प्रवज्या पथ पर बढे।

(24) भाले के अग्र भाग पर .. .. को केवल ज्ञान हुआ।

(25) ससार खरीदने की पूँजी.......... ...है विकास खरीदने की पूँजी .... है।

प्रश्न 3. नीचे लिखे हुए वाक्यों के आधार पर खाली जगह भरो। जवाबी शब्द के अक्षर कोष्ठक में दी गई संख्या के अनुसार होने चाहिये जवाबी शब्दों के प्रथम अक्षरों को जोड़ने से दोहे की एक लाईन बनती है संयुक्त अक्षर एक ही गिना जायेगा।

(1) . . . (5) तुमने मुझ पर 13 भवतक मरणान्त उपसर्ग किये फिर भी मैने परमात्मा पद को पा ही लिया।

(2) .. .. . . (5) मेरे पास इतनी सम्पत्ति होने पर भी मुझे नरक मे जाना पडा।

(3) .. .. (5) मै क्या करूँ दिखने मे बडा सुन्दर हूँ खाने मे अति मीठा हूँ परन्तु मुझे खाने वाला चीर निद्रा मे सो जाता है।

(4) .. . . (4) मै इतना गूढ हूँ मुझे जाने वाला श्रद्धा करने वाला मोक्ष मे जाता है।

(5) .... (3) मुझे इतना कमजोर मत समझो मैं नरक के दलिये तोड सकता हूँ।

(6) .. .. (2) मेरे स्पर्श से अनेक जीव मोक्ष मे जा सकते है ?

(7) . . ... (4) भावना भाते भाते संसार किसने घटाया।

(8) ... .(5) मै वेश्या के हाथो पर बिक जाने पर भी जिन शासन की महान साध्वी बनी।

(9) .. . .(2) हे वृद्ध मेरे सहायता के बिना गिरिराज की यात्रा नही कर सकता।

(10) . . . .(3) भाई के बीच अत्यन्त स्नेह प्रीति प्रेम के सम्बन्धो को भी क्षण मात्र मे तोड देता हूँ।

(11) .... (3) मैं इतनी भाग्यशालीनी हूँ भगवान महावीर ने मुझे जिनपद का दान दिया।

(12) (3) मेरे नेत्र से भले दिखाई नहीं देता परन्तु मेरे परिश्रम से मेरे पुत्र को जन्म से राज्य मिला।

(13) (6) मैं ऐसी प्राण घातक बिमारी हूँ शरीर को क्षीण बना देती हूँ।

(14) (2) हमने लोभवश मदन मजरी के पति पर हमारी जाति का आरोप लगाया।

(15) (4) मेरे पुत्र को गणधर भगवत भी देखने आये करुणा से हृदय भर गया।

(16) (4) मैं भी एक देवी हूँ मेरी सर्वत्र पूजा होती है मुझे तो साधु साध्वी व अन्य लोग भी आराध्य देवी की तरह पूजते है मेरे नाम का जाप करते है।

(17) (4) मै वही पवित्र स्थान हूँ जहाँ शितलनाथ भगवान ने पारणा किया।

(18) (7) मेर यहाँ पर आप जरूर पधारे मैं नूतन तीर्थ के नाम से प्रख्यात हूँ।

(19) (4) हाथ मेरे हाथ से निरापराधि प्राणी मारा गया बिचारा बडी मुश्किल से साधना के द्वारा चन्द्रहास खडग को पाया उससे ही प्राणघात प्रहार हुआ।

प्रश्न 4 नीचे के वाक्यो में से सही हो उसके आगे ✓ का चिन्ह एव गलत ✗ का चिन्ह लगावे।

(1) आपको सिद्ध बनना अच्छा लगता है।
(2) केवली कवल आहार करते है।
(3) गृहस्थ वेश मे मोक्ष जा सकते हैं।
(4) निकाचित आयु बीच मे से टूट सकती है।
(5) लोक मे रहे 6 द्रव्यो को हम देख सकते हैं।

(6) महावीर का जीव सर्वार्थ सिद्धि से आया क्या ?
(7) सोलह सती सभी मोक्ष मे गयी।
(8) नारकी से निकलकर जीव तीर्थकर होता है।
(9) अढाई द्वीप से बाहर मनुष्य नही होते है।
(10) अधोलोक मे मनुष्य नही होते है।
(11) तिर्यच पचेन्द्रि मे वैक्रिय लब्धि होती है।
(12) दश चक्रवर्ती मोक्ष मे गये।
(13) देव परिग्रही होते है।
(14) एक समय मे एक सिद्ध होते है।
(15) सिद्धगति के जीव हमको देख सकते है।
(16) देवता बीमार पडते है।
(17) अलोक से लोक बडा है।
(18) जम्बूद्वीप मे एक चद्र एक सूर्य है।
(19) देवता प्रत्याख्यान कर सकते है।
(20) पुष्करार्ध द्वीप का आधा भाग करने वाला मानुषोत्तर पर्वत है।
(21) छकाय मे तुम्हारा नाम है।
(22) लट को चार इद्रिय होती है।
(23) सिद्ध भगवान की अवगाहना बराबर होती है।
(24) छट्ठी नरक से निकला जीव श्रावक बन सकता है।
(25) 5 महाविदेह की कुल 160 विजय है।

5. प्रश्न :

1 2	10		6		8
		4	5 12	4	
3				11	
1			9 13		

आडी चावी

(1)	कौन सी आत्मा मोक्ष मे जाती है।	(6)
(2)	इग्यार अग मे से एक अग का नाम	(4)
(5)	किसने अपनी पत्नी के लिये अग्नि प्रवेश की तैयारी की	(3)
(7)	पच परमेष्ठि को नमस्कार किस सूत्र मे आता है।	(4)
(9)	नवग्रह मे से एक ग्रह का नाम	(2)
(11)	पालने मे किसने 11 अग याद किया	(2)
(13)	बगाल का प्रसिद्ध कवि	(3)

उभी चावी

2	रत्न त्रय मे से एक नाम	(5)
4	24 भगवान के यक्ष मे से एक का नाम	(3)
6	वीसस्थानक का एक पद	(2)
8	परमात्मा अपने ज्ञान से कितने लोक को देखते है।	(4)
10	युगबाहू को किसने मारा	(4)
12	एक वेश्या का नाम	(3)
14	चपा द्वार किसने खोला	



समरो मंत्र भलो नवकार

2

प्रश्न 1 (1) नवकार महामत्र...... ... .. और.. .. . . . .आदि से लिया गया है।

(2) नवकार महामत्र के कुल. .... पद है।

(3) नवकार महामत्र मे..... ... सपदा है।

(4) नवकार महामत्र के पॉच पदो म...... .. .अक्षर है।

(5) नवकार महामत्र मे सर्व.. ....अक्षर है।

(6) नवकार महामत्र मे मूल पद . . .. .. है।

(7) नवकार महामत्र मे .. .. पद नीद लेते है।

(8) नवकार महामत्र मे देव .... है।

(9) नवकार मत्र मे गुरु .... है।

(10) पॉचो पदो मे ..... . गुण होते है।

(11) नवकार महामंत्र के पॉचो पदो का ध्यान . . .. वर्ण मे किया जाता है।

(12) नवकार महामत्र मे .. .. पद से गुरु चेले को नमस्कार करता है।

(13) नवकार मत्र मे ... पद मे गणधर आते है।

(14) नवकार महामत्र का ध्यान करने से . .....सागरोपम के अशुभ कर्म नष्ट होते है।

(15) सिर्फ "न" से ... .सागरो पम के अशुभ कर्म क्षय होते है।

(16) एक पद का जाप करने से . . ... सागरोपम का पाप नष्ट होता है।

(17) नवकार मत्र ..है।

(18) माला के .. .. मण के हाते है।

(19) नवकार मत्र मे .... पद चश्मा लगाते है।

(20) नवकार महामत्र .... पूर्व का सार है।

(21) नवकार महामत्र का नाम .. ..है।

(22) नवकार महामत्र मे .. .. तीर्थों की यात्रा होती है।

(23) नवकार महामन्त्र का जाप करने से... ... प्राप्त होते हैं।

(24) नवकार महामत्र मे साध्य .. .. है।

(25) नवकार महामन्त्र मे साधन .. .. है।

(26) नवकार महामत्र मे .. .. शब्द बार बार आता है।

(27) नवकार महामत्र का सक्षिप्त रूप ...... है।

(28) नवकार महामत्र पाँच पद तीर्थ सूचक ....है।

(29) नवकार मत्र 9 लाख जाप करने वाला .. मे नहीं जाता है।

(30) नवकार महामत्र 9 करोड़ का जाप करने वाला... .. .. भव मे मोक्ष जाता है।

(31) नमोऽर्त सूत्र .... ने बनाया

(32) नवकार महामन्त्र में साधुपन पालते हैं।

(33) नवकार महामत्र मे अक्षर .. है ... .. अधिक गहन है

(34) नवकार महामन्त्र मे .. .. .. पदो को नमस्कार किया गया है

(35) नवकार महामन्त्र मे .... पद ऐसा है जिसे तीर्थंकर की अनुपस्थिति मे तीर्थंकर तुल्य माना गया हैं।

(36) 14 पूर्वी भी अत समय मे ....स्मरण करते हैं।

(37) नवकार महामत्र का स्मरण .... गति के जीव कर सकते है।

(38) नवकार महामत्र मे .. .. साधक है।

(39) नवकार महामत्र का विस्तृत वर्णन ... ...सूत्र मे आता है।

(40) नवकार मत्र का स्मरण ...... से प्रारम्भ है।

(41) नवकार का विधिपूर्वक जाप करने से. .... है। तीर्थकर नाम कर्म का उपर्जान होता है।

(42) 80 80 88 08 नवकार का जाप करने वाला प्राणी.. ....भव मे निश्चित शाश्वत सुख को पाता है।

(43) नवकार के अतिम चार पदो को .... कहते है।

(44) 14 पूर्वी आचार्य भद्रबाहुस्वामी ने नवकार मत्र पर .. ..की रचना की।

(45) नवकार मत्र के .... को याद करने से अपने अविनाशी पद का भान होता है

(46) आचार्य हेमचन्द्र सूरिजी म० ने अपनी माता साध्वी पाहिनी के अन्त समय मे पुण्य के रूप मे . . . . . नवकार मंत्र गिनने का अभिग्रह लिया।

(47) किसी भी नाण की क्रिया के प्रारम्भ मे ..... नवकार गिनते है।

(48) नवकार मे "नमो" शब्द .. . . का सूचक है।

(49) नवकार के प्रथम पॉच पदो मे व्यजन सहित .... लघु अक्षर है।

(50) नवकार की महिमा गाते हुये प० यशोविजय जी उपाध्याय म० की गुर्जर भाषा मे . . .नाम कृति है।

(51) नवकार के अक्षरो मे '68544 ... .. रही हुई है।

(52) अन्त समय एकाग्रता के साथ गिना हुआ नवकार मंत्र जीव को ... देवलोक मे ले जाता है।

(53) अरिहत परमात्मा सयम लेते समय नवकार मत्र के पद मे से . पद का स्मरण करते है।

(54) नवकार मत्र का जाप करते समय   दिशा सन्मुख मुख रख कर करना चाहिये।

(55) नवकार मत्र मे पचपरमेष्ठि के नाम से जा बनता वह एक शब्द   है।

(56) नवकार महामत्र मे   सयुक्त अक्षर है।

(57) पू० आचार्य जिनचन्द्रसूरिजी म० रचित नवकार महिमा गर्भित स्तोत्र का नाम   है।

(58) नवकार की चूलिका के   अक्षर है।

(59) नवकार महामत्र मे .. .. श्वासोश्वास प्रमाण माना जाता है।

(60) नवकार महामत्र के अधिकारी बनाने के लिये 18 दिन.. करना पडता है।

(61) नवकार मत्र मे   सिद्धिदायक है।

(62) नवकार महामत्र मे चूलिका मे व्यजन सहित लघु अक्षर है।

(63) नवकार की चूलिका मे   गुरु अक्षर है।

(64)   मोहनीय कर्म शेष रहने पर नवकार मत्र का अधिकारी बनता है।

(65) नवकार महामत्र   का प्रणाशक है।

(66) 108 नवकार के जाप से   सागरोपम के पाप नाश होते है।

(67) नवकार मत्र   भाषा मे रचा हुआ है।

(68) नवकार के   पद वाले कभी निद्रा नहीं लेते है।

(69) साध्वी नवकार के   पद मे आती है।

(70) नवकार के _   पद वाले स्वप्न देख सकते है।

(71) नवकार मे   जाति अजाति कर्म रहित है।

(72) नवकार मे   सशरीरी है।

(73) नवकार मे पॉचो पदो मे . . नियमा तद्‌भव मुक्ति गामी है।

(74) नवकार मे . . स्थिर पद है।

(75) नवकार मत्र के पॉचो पदो से ... को नियमा केवल ज्ञान होता है।

(76) नवकार के पॉच पदो मे . . को जन्म मरण हो सकते है।

(77) नवकार के . . पदो मे मति एव श्रुत ज्ञान अवश्यक होता है।

(78) नवकार मे . . . . चार अघाती कर्म वाले है।

(79) नवकार के स्मरण से. . .मर कर तिर्यच गति से देव गति मे गया।

(80) बाल्यावस्था मे ही नवकार मत्र के स्मरण से... .... ने अग्नि को शान्त किया।

(81) नवकार आराधक जिनदत्त ने . . .. को अत समय नवकार सुनाकर सद्‌गति का यात्री बनाया।

(82) नवकार मे . पदो मे चश्मा नही लग सकता है।

(83) नवकार मत्र के प्रभाव से . . . . को सुवर्ण पुरुष की उपलब्धि हुई।

(84) नवकार मत्र के प्रभाव से ... . शूलि का सिहासन बनाया।

(85) श्रीमति के नवकार स्मरण से . . . .की फूल माला बनी।

(86) नवकार मत्र के प्रभाव से ... . .ने चपा द्वार खोला।

(87) नवकार मत्र के प्रभाव से बैल भुवन पति मे . . . . नाम के देव बने।

(88) नवकार मत्र से . . .मत्रो की उत्पत्ति हुई।

(89) नवकार महामत्र .. . प्रकार से गिना जाता है।

(90) नवकार मत्र की अनानुपूर्वी गिनने से उपवास का लाभ मिलता है।

(91) नवकार मत्र गर्भित 'नमस्कार महात्मय की रचना .. की है।

(92) नवकार मत्र म न ण अक्षर का प्रयोग.. ... बार हुआ है।

(93) नवकार महामत्र मे .. पूजा होती है।

(94) नवकार मत्र म .. कर्मो का नाश होता है।

(95) नवकार के ध्यान को .. ध्यान कहते है।

(96) नवकार मे .. ..और ..है।

(97) ....ने नवकार मत्र के प्रभाव से सिह रथ राजा से अपनी शील की रक्षा की।

(98) नमो अरिहन्ताण शब्द को .... .. मे प्रयोग किया है।

(99) यशोभद्र ने अन्तिम समय मे अपने बेटे को....... सिखाया।

(100) वर्तमान युग मे भी महान चमत्कारी ...... से कैन्सर जैसे रोगी भी स्वस्थ बनते हैं।

(101) नवकार महामत्र के एक अक्षरमात्र की .. .. देवता सेवा करते है।

प्रश्न 2. नीचे लिखे हुये वाक्यों के आधार पर खाली जगह भरो जवाबी शब्द के अक्षर कोष्ठ में दी गई सख्या के अनुसार होने चाहिये जवाबी शब्दो के प्रथम अक्षरों को जोडने से प्राचीन स्तवन का चरण बनता है।

(1)	.. ..	(5)	मेरे आन पर सभी जीवा से क्षमा याचना मागी जाती है।
(2)	... ..	(9)	लाईट को देखकर लाईट किसने पाई।
(3)	.. ..	(4)	पैर का काटा निकालते कर्म का काटा किसने निकाला।
(4)	...	(4)	कुलपाक तीर्थ की माणिक्य स्वामी की मूर्ति देवो ने किसको दी।
(5)		(4)	चौदह राज लोक की नाडी का क्या नाम है
(6)		(4)	जगल म मगल किसने किया।

(7) . . . . . (2) पुत्र ने पिता को 12 वर्ष तक किस माध्यम से चारित्र मार्ग पर जाने से रोका।

(8) . (3) पद्म नाभ तीर्थकर का जीव अभी कहाँ है।

(9) . (8) दूसरे तीसरे आरे मे सघयण कौन-सा था।

(10) . .. . (4) मेरी क्या पहचान दूँ मै तो हूँ एक समुन्दर

(11) .. . (4) पत्नी को सजाते सजाते केवल ज्ञान किसे प्राप्त हुआ।

प्रश्न 3. अक्षर मिलाने से सूत्र का नाम बनाता है।

(1) 1 + 2 एक सख्या बनती है।

(2) 1 + 4 पुरुष का पर्यायवाची शब्द बनता है।

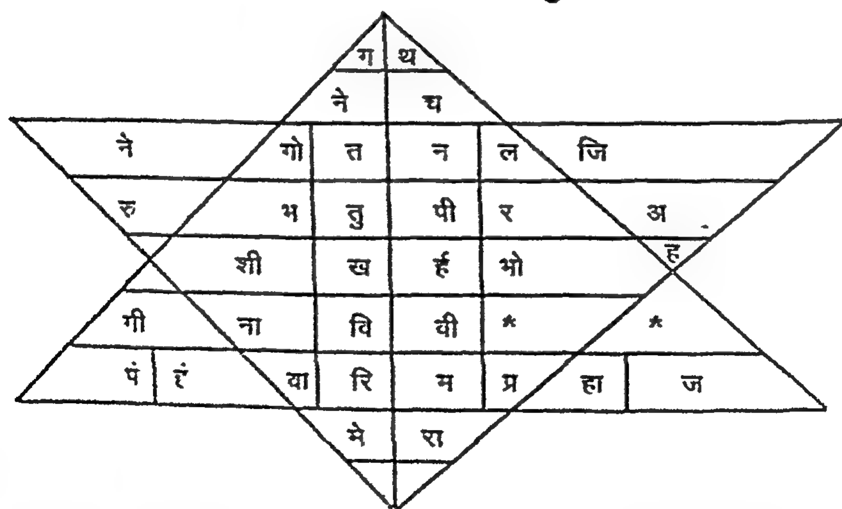
(3) 2 + 1 जगल का पर्यायवाची शब्द बनता है।

(4) 3 + 4 वाहन का पर्यायवाची शब्द बनता है।

(5) 2 + 4 दुल्ला का पर्यायवाची शब्द बनता है।

(6) 3 + 1 एक इन्द्रिय का नाम

प्रश्न 4. चमकते हुये सितारे में परमात्मा के नाम खो गये। 21 नाम आप उन्हें ढूंढ निकाले एक अक्षर का प्रयोग दुबारा हो सकता है।



प्रश्न 5. नवकार मंत्र के विषय में आपकी क्या जानकारी है, क्या चमत्कार है इस विषय में **10** लाइन लिखिये।



| ५ं ७ ~

श्रावक व्रत सुरतरू फलियो

3

प्रश्न 1 सही उत्तर खाली स्थान में भरें।

(1) श्रावक .. .. पद की इच्छा करता है।

(2) श्रावक .. ..को नियमो को धारणा चाहिये।

(3) श्रावक .. .... के विरूद्ध लडता है।

(4) श्रावक को .. द्रव्यो से अधिक द्रव्य नहीं खाने चाहिये।

(5) श्रावक सूर्योदय से .. ....मिनिट पहले उठता है।

(6) श्रावक को दवाई के तीन डोज की तरह ... . करनी चाहिए।

(7) श्रावक को .... वचन मे पूर्ण श्रद्धा रखनी चाहिये।

(8) श्रावक को पूजा मे सर्वश्रेष्ठ ....पूजा करनी चाहिये।

(9) श्रावक की पहिचान............ ...से होती है।

(10) श्रावक प्रभात कालीन पूजा से रात्रि के ....का नाश करता है।

(11) जिनको ....बनना पसन्द हो वह श्रावक है।

(12) श्रावक मध्याह्न कालीन पूजा से .. .. के पापो को नाश करता है।

(13) श्रावक को प्रतिदिन दोनो समय..... ....करना चाहिये।

(14) श्रावक सध्याकालीन पापा से.............जन्मो के पापा को नष्ट करता है।

(15) श्रावक को प्रतिदिन सवेरे .... को प्रणाम करना चाहिय।

(16) श्रावक को घर मे ....का निर्माण अवश्य करना चाहिए।

(17) श्रावक को वर्ष मे कुल मिलकार ....प्रतिक्रमण करने चाहिये।

(18) श्रावक को जिनालय के लिये कम से कम...... ..उपकरण रखने चाहिये।

(19) श्रावक का जीवन ...... .विरत्ति का जीवन है।

(20) श्रावक को जिन पूजा . ...मे प्रकार की शुद्धि रखनी चाहिए।

(21) श्रावक का गुणस्थानक... . .होता है।

(22) श्रावक को जीवन मे . ..प्राप्ति के लिए पूजा करनी चाहिए।

(23) श्रावक के सामान्य कर्त्तव्य . .. है।

(24) श्रावक को . . . . यात्रा अवश्य करनी चाहिये।

(25) साधुता की महानता का रस स्वाद करने श्रावक को .. ... प्रतिदिन करना चाहिए।

(26) श्रावक को अपनी सम्पत्ति का सदुपयोग . .. .क्षेत्र मे करना चाहिये।

(27) प्रभु दर्शन किये बिना श्रावक को मुँह मे . . . . .डालना नही चाहिए।

(28) श्रावक को सूर्योदय के पूर्व, रात्रि के अवशिष्ट रहने पर .... स्मरण करना चाहिए।

(29) श्रावक को पर्यूषण महापर्व मे ... .कर्त्तव्य करने चाहिए।

(30) श्रावक को प्रतिदिन यथाशक्ति . ...करना चाहिये।

(31) श्रावक को पक्ष दिवस मे ... . .तप करना चाहिये।

(32) श्रावक को प्रतिदिन . ... .को वंदन करना चाहिये।

(33) प्रतिवर्ष श्रावक को . . .... कर्त्तव्य करने चाहिये।

(34) श्रावक को .. .भक्ति और ... .दान देने के बाद भोजन करना चाहिये।

(35) . . ..की प्राप्ति के लिए श्रावक को जिन मंदिर में तीन प्रदक्षिणा देनी चाहिये।

(36) श्रावक को विद्वानो के साथ . . . . के .. .. .. की विचारणा करनी चाहिये।

(37) श्रावक की सामायिक . . .. .मिनिट की होती है।

(38) श्रावक को अष्टमी और चतुर्दशी को ... . करना चाहिये।

(39) श्रावक .. .बिना सामायिक नही कर सकता।

(40) श्रावक को ... ..वस्तु और पानी का त्याग करना चाहिये।

(41) परमात्मा के दर्शन होते ही श्रावक को ....बालना चाहिए।

(42) श्रावक को शराब आदि .. .. वस्तुओ का त्याग अवश्य करना चाहिये।

(43) वादना देते समय श्रावक को .. .. ..अवश्यक का पालन करना चाहिये।

(44) श्रावक को .. .. व्यसनो का त्याग करना चाहिय।

(45) श्रावक को.... .. सडासा पूर्वक खमासमण देना चाहिये।

(46) श्रावक को .. ओली की आराधना करनी चाहिये।

(47) श्रावक को .. ..बोल बोलते हुए मुहपत्ति का पडिलेहन मुहपत्ति करना चाहिये।

(48) श्रावक को... ... . प्राप्ति के लिए प्रिय वस्तु का त्याग करना चाहिये।

(49) चलते रास्ते मे गुरु महाराज का अभिवादन...... ..बोलकर श्रावक को करना चाहिये।

(50) श्रावक को प्रतिवर्ष पापो की.. ....लेनी चाहिये।

(51) श्रावक को प्रतिदिन ....प्रकार की पूजा करनी चाहिये।

(52) श्रावक को ....स्थानों की व्यवस्था सभालनी चाहिये।

(53) श्रावक को श्रावक से भेट हो तब ....बोलकर अभिवादन करना चाहिए।

(54) श्रावक का ....द्रव्य.......द्रव्य.. .... द्रव्य मे वृद्धि करनी चाहिए।

(55) ....अगो का भूमिस्पर्श करते हुए श्रावक को खमासमण देना चाहिए।

(56) श्रावक के ....मूल कर्त्तव्य होते हैं।

(57) श्रावक को सामायिक म .... दोष टालने चाहिये।

(58) श्रावक को पानी ....पीना चाहिए।

(59) वैज्ञानिको ने एक बूद पानी मे . . . .जीव वताये है।

(60) श्रावक सामायिक पारे विना लगातार . . ....सामायिक कर सकता है।

(61) 'जय जय आरती आदि जिणदा' आरती के रचयिता ....थे।

(62) . की तरह भावपूर्वक प्रतिदिन श्रावक को आरती उतारनी चाहिये।

(63) धर्म ग्रन्थो के अनुसार रात्रिभोजन.. ... ..के समान है।

(64) जघन्य से जिन मदिरमे श्रावक को . ....आशातना नही करनी चाहिये।

(65) रात्री भोजन करने वाले मरकर.. .... .बनते है।

(66) श्रावक को प्रतिदिन थाली धोकर पीने से. .....का लाभ मिलता है।

(67) श्रावक को ...... व्रत होते है।

(68) जिन मदिर से बाहर निकलते समय .... नही करना चाहिये।

(69) श्रावक को प्रतिदिन. .... द्रव्य से पूजा करनी चाहिये।

(70) श्रावक को संध्या काल मे मदिर मे..... .करना चाहिये।

(71) श्रावक को प्रतिदिन शाम को कम से कम.. . . ..का पच्चक्खाण करना चाहिये।

(72) श्रावक को मुनिराज को ..... . .आहार बहराना चाहिये।

(73) श्रावक को प्रतिदिन जिन मंदिर मे ... ...त्रिक का पालन करना चाहिए।

(74) श्रावक को गुरु की .... आशातना को टालनी चाहिये।

(75) श्रावक को परमात्मा के .... बाजू मे खडा रहकर स्तुति बोलना चाहिए।

(76) श्रावक को सुबह मे कम से कम.... . . .का पच्चक्खान करना चाहिये।

(77) भोजन के समय कुछ कम खाकर श्रावक को.. ...तप करना चाहिए।

(78) ....तप की अनुमोदना के लिए श्रावक को एक लूखी रोटी खानी चाहिए।

(79) ... का श्रवण श्रावक को प्रतिदिन करना चाहिए।

(80) ... .अभक्ष का त्याग श्रावक को अवश्य करना चाहिये।

(81) उत्कृष्ट रूप से जिनमदिर मे .. आशातनाओ का त्याग करना चाहिये।

(82) ....नरक का द्वार है।

(83) ससार भमण निवारण के लिए मदिर मे श्रावक देता है।

(84) श्रावक .. ... वीसा दया का ही पालन कर सकता है।

(85) जीवन निर्वाह हेतु श्रावक को से व्यापार करना चाहिए।

(86) भाव श्रावक के ... ..गुण होते है।

(87) श्रावक ससार को.. रूप मानता है।

(88) श्रावक .. ..को चिन्तामणी और कल्पवृक्ष की प्राप्ति से अधिक माने।

(89) श्रावक को कम से कम ... विगई का त्याग करना चाहिए।

(90) भगवान महावीर के .....श्रावक 11 पडिमाधारी थे।

(91) श्रावक को जिनालय चलने के लिए ..प्रेरणा करते हैं।

(92) श्रावक ....दिन का उपधान तप करने के पश्चात ही ....का अधिकारी बनता है।

(93) भगवान महावीर के ....प्रमुख श्रावक थे।

(94) श्रावक को............भावनाओं का चिन्तन करना चाहिये।

(95) 12वें देवलोक की ध्वजा को ... .. श्रावक ने देखा था।

(96) विवाह करन के पश्चात् .... श्रावक ने ब्रह्मचर्य का पालन किया।

(97) श्रावक का ज्ञान वर्धन के लिए प्रतिदिन .. ...करनी चाहिये।

(98) श्रावक को .... की अनुमोदना और ......की आलोचना करनी चाहिये।

(99) श्रावक को 4 शरण और नवकार मंत्र का स्मरण करते हुए .... लेनी चाहिये।

(100) उत्कृष्ट रूप से .. ..श्रावक ने सामायिक की थी।

(101) श्रावक को . ...आवश्यक से प्रतिक्रमण करना चाहिये।

प्रश्न 2. उत्तर लिखे।

1. नीचे दिये गये वाक्यों के आधार पर रिक्त स्थान भरो। जवाबी शब्द के अक्षर कोष्ठक में दी गई संख्या के अनुसार होने चाहिए। जवाबी शब्दों के प्रथम अक्षरों से देवचन्द्र कृत 'स्नात्र पूजा' की प्रसिद्ध पंक्ति प्रगट होनी चाहिए।

(1) .... (4) के पालन से खुश होकर फिरोजशाह ने महण सिह को करोड पति बनाया था।

(2) .... (5) की यात्रा नही की तो जन्म असफल गया।

(3) .... (4) का पालन नहीं किया तो असाता को भोगना ही है।

(4) .... (4) वेश्या के हाथ बिकने पर भी जिन शासन की साध्वी बनी

(5) ... .(3) भाव दिल मे नही है तो निश्चय ही मिथ्यात्वी हूँ

(6) ....(2) देखकर बडे-बड़े महात्मा भी सयम से पथ भ्रष्ट हो जाते है।

(7) ....(3) मिल गया तो धन्य बन गये।

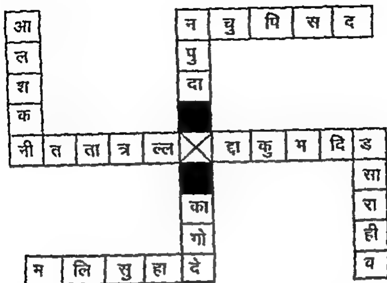
(8) ....(3) व्यक्ति दुर्जन का भी भला ही करते हैं।

(9) .... (4) की रानी के ललाट पर तिलक जन्म से ही शोभित था।

(10) . ... . . (2) के बीना वरघोडे की शोभा नही है।

(11) ... ... (4) मे ही हमारा वास्तविक स्थान है।

प्रश्न 3



उपरोक्त स्वस्तिक मे से भगवान महावीर के श्रावको का नाम खोज कर लिखो। एक अक्षर का प्रयोग दुवारा हो सकता है।

प्रश्न 4 'श्रावकाचार इस विषय पर 20 पक्तियो का निबध लिखिए।



वीतराग वाटिका के पुष्प चुनिये

4

करो "वि वी" की विचारणा

(1) इस प्रश्न पेपर को आप क्या करके लिखेगे ?
(2) चौवीस मे भगवान का नाम क्या है ?
(3) अरिहंत परमात्मा का एक विशेषण लिखो ?
(4) शाश्वत तीर्थ का नाम लिखो ?
(5) कितने भगवान की निवार्ण कल्याणक भूमि सम्मेत शिखर है ?
(6) कुडलपुर जाने के लिये श्रीपाल महाराजा की सहायता किसने की?
(7) नवकारसी से क्या दूर होती है ?
(8) सुगधी धूप से पूजा करने से सात मे भव मे केवल ज्ञान किसको हुंआ ?
(9) राजगृही के एक पहाड का नाम लिखो ?
(10) देलवाडा के ऊपर एक सुशोभित टुक का नाम लिखो ?
(11) जिसकी आराधना से अरिहत बनते है उस तप का नाम लिखो ?
(12) वस्तुपाल तेजपाल ने किसको कहा कि आपकी आज्ञा चौथे नम्बर मे है ?
(13) इग्यारा अग मे से एक अग का नाम लिखो ?
(14) चन्द्रराजा को कुकडा किसने बनाया ?
(15) साधु साध्वी चातुर्मास मे क्या नही करते ?
(16) जिस तीर्थकर परमात्मा के माता–पिता का नाम एक है वह लिखो ?
(17) अकेले दीक्षा लेने वाले तीर्थंकर का नाम लिखा ?
(18) श्रीपाल महाराजा के रास के रचयिता कौन है ?
(19) महाविदेह मे विचरते एक परमात्मा का नाम लिखो ?

(20) दशहरा का दूसरा नाम लिखो ?

(21) भरत महाराजा के केवल ज्ञान का निमित्त क्या था ?

(22) एक महापूजन का नाम लिखो ?

(23) तीन अज्ञान मे से एक अज्ञान का नाम लिखो ?

(24) चौसठ प्रकार की पूजा किसने बनाई ?

(25) उद्‌घाटन प्रसग का दूसरा नाम लिखो ?

(26) बडी शान्ति मे किस देवी का नाम आता है ?

(27) श्रद्धा का पर्यायवाची शब्द लिखो ?

(28) आयुष्य किसके जैसा चचल है ?

(29) चिलाती पुत्र को चारण मुनि द्वारा दी गई त्रिपदी मे से एक का नाम लिखो ?

(30) असमाधि के कितने स्थान है ?

(31) देवता ने धूल की वृष्टि कहाँ की ?

(32) वर्तमान चौवीसी के दूसरे बलदेव का नाम लिखो ?

(33) चिकागो विश्वधर्म परिषद् मे जैन धर्म का प्रतिनिधित्व किसने किया ?

(34) धर्म ध्यान का एक भेद ?

(35) वर्तमान मे अनुपमा देवी कहाँ विचरण कर रही है ?

(36) ब्रह्मचर्य की नववाड मे से एकवाड का नाम लिखो ?

(37) भुवनपति के एक देव का नाम लिखो ?

(38) सिद्धसन दिवाकर सूरि किससे प्रतिबोध पामे ?

(39) वर्धमान तप के पाया की पूर्णाहुति कितने दिन से होती है ?

(40) ज्ञान के 51 भेद मे से एक भेद लिखो ?

(41) रक्षाबधन क दिन बहन किसके राखी बाधती है ?

(42) एक पर्व का नाम लिखा ?

(43) छप्पन दिक्कुमारियो मे से एक का नाम लिखो ?

(44) जो केवल पुरुष बोल सकते है ऐसे प्रतिक्रमण सूत्र का नाम लिखो ?

(45) किसने आदिनाथ भगवान की भक्ति से विद्याधर पद पाया ?
(46) चौदह नियम में से एक नियम का नाम लिखो ?
(47) नाम कर्म के एक भेद का नाम लिखो ?
(48) कालचक्र का प्रमाण लिखो ?
(49) जिसका अर्थ बेइन्द्रिय तेइन्द्रिय चउरिन्द्रिय होता है उसका शास्त्रीय शब्द ?
(50) इस अवसर्पिणी के अन्तिम केवली के पूर्वभव का नाम लिखो ?
(51) पाण्डव कितने मुनियों के साथ मोक्ष गये ?
(52) 14 चातुर्मास एक स्थान पर किस भगवान ने किये ?
(53) सरस्वती का प्रिय वाजित्र कौनसा है ?
(54) श्रीपाल गुणसुन्दरी के साथ शादी करने गये जब नगर जन क्या कर रहे थे ?
(55) तिर्यंच पचेन्द्रिय के भेद कितने ?
(56) अन्तराय कर्म की एक प्रकृति का नाम लिखो ?
(57) विद्या किससे शोभती है ?
(58) सरस्वती देवी की आराधना से क्या प्राप्त होती है ?
(59) भगवान महावीर की 16वे भव मे किसने मजाक की ?
(60) नौ रस मे से एक रस का नाम लिखो ?
(61) गृहस्थ जीवन मे आजीवन ब्रह्मचर्य किसने पाला ?
(62) स्कूल का एक विषय (सब्जेक्ट) क्या है ?
(63) कलावती को बेरखा किसने भेजा ?
(64) अनुत्तर देव का एक भेद लिखो ?
(65) राणा ने मीरा को क्या भेजा था ?
(66) दो लाख योनि किसकी होती है ?
(67) सोलवे भव मे भगवान महावीर का क्या नाम था ?
(68) वैशाख सुदी एकादशी के दिन शासन की स्थापना किसने की ?
(69) घर-घर मे सस्कार का सत्यानाश करनेवाला आधुनिक साधन क्या ?

(70) भरहेसर मे मगधाधिपति के पुत्र का नाम ?
(71) एक चउरीन्द्रिय जीव का नाम लिखो ?
(72) गौतम स्वामी ने क्या बोलते विचारते घाती कर्म खपाये ?
(73) पार्श्वनाथ भगवान के 108 नाम मे से एक नाम लिखो ?
(74) पूजन प्रतिष्ठा अजनशलाका मे किसकी जरूरत पडती है ?
(75) अभ्यन्तर तप का एक भेद लिखो ?
(76) एक आचार का नाम लिखो ?
(77) सागर चक्रवर्ती का जन्म स्थल ?
(78) स्नात्र पूजा की एक लाईन लिखो जो वि से शुरू होती हो ?
(79) बहुत पूजाएँ होती है उस पुस्तक का नाम क्या ?
(80) भगवती सूत्र का दूसरा नाम क्या ?
(81) एक मद का नाम लिखो ?
(82) 12-36 के समय को क्या कहते है ?
(83) आदिनाथ भगवान का राज्याभिषेक किस नगरी मे हुआ था ?
(84) जो स्नेहिओ को दु खदायी बनाता है ?
(85) जिनदास 84000 साधु की भक्ति का लाभ देने के लिये किसको विनती की ?
(86) सुलसा को धर्मलाभ किसने कहलाया ?
(87) सयम का दूसरा नाम क्या ?
(88) 60 लाख वर्ष का आयुष्य किस भगवान का था ?
(89) अतीत चौवीसी के एक तीर्थंकर का नाम लिखो ?
(90) मुनिसुव्रत स्वामी की काया का प्रमाण लिखो ?
(91) भगवान की माता का नाम लिखो ?
(92) 15 लाख वर्ष का चारित्र किसने पाला ?
(93) कौरवों और पाण्डवो के काका का क्या नाम है ?
(94) एक ऋषिराज का नाम लिखो ?
(95) कौन से मत्री ने वश से भी अधिक जिन प्रसाद का महत्त्व बताया ?
(96) वर्धमान स्वामी 82 दिन गर्भ मे कौन स कुल मे रहे ?

(97) ब्राह्मी सुन्दरी ने बाहुबलजी को क्या उपदेश दिया ?
(98) कुबेरदत्त–कुबेरदत्ता भाई बहन को पहचानने की निशानी क्या ?
(99) चरम तीर्थपति के बाद जम्बुस्वामी युग प्रधान कब बने ?
(100) श्रेणिक महाराजा की चित्ता मे से क्या ध्वनि प्रकट हुई ?
(101) राजकथा, भक्तकथा, देशकथा, स्त्रीकथा इन चार कथाओ को क्या कहते है ?
(102) तेरह काठियो मे से एक काठिये का नाम लिखो ?
(103) उपााध्याय के 25 गुणो मे से एक नाम लिखो ?
(104) वर्तमान मे भरूच तीर्थ का तीर्थोद्वार किसने कराया ?
(105) श्रीपाल महाराजा ने नवपद की आराधना से क्या पाया ?
(106) द्वेपायन ऋषि के द्वारा द्वारिका का क्या हुआ ?
(107) पाण्डवो ने अज्ञातवास कहाँ बिताया ?
(108) श्रेणिक महाराजा की एक पत्नी का नाम लिखो ?
(109) अध कुमार ने मौका पाकर किसका गला काटा।
(110) अशनि वेग के साथ किसने दीक्षा ली।
(111) राजानन्द ने चन्द्र गुप्त को मारने के लिये क्या तैयार किया।
(112) प्रभुवीर ने गौतम को त्रिपदी बताई उसमे से एक पद लिखो।
(113) बारह प्रकार के तप मे से एक तप का नाम लिखो।
(114) चौदहवे गुण-स्थान मे कौन सी आत्मा का अभाव होता है।
(115) हेमचन्द्र आचार्य ने किस स्तोत्र की रचना की।

प्रश्न 2. नीचे लिखे हुये वाक्यों के आधार पर खाली जगह भरो। जवाबी शब्दों के अक्षर कोष्टक में दी गई संख्या के अनुसार होने चाहिए। शब्दों के प्रथम अक्षर से बनने वाली पंक्ति इस प्रकार है।

"महावीरनाथ मेरे तारण हारा" सयुक्त अक्षर एक ही गिना जायेगा।

(1) ... (4) शादी के प्रथम दिन ही भाई की मजाक से मैने चारित्र स्वीकार किया।

(2) . (2) मेरे पर बैठकर प्रथम मुक्ति रमणि का वरण किया मै कितना भाग्यशाली हूँ।

(3) (4) आप मुझ नही जानते मैंने ही अपने पुत्र को मुर्गा बनाया।

(4) (4) मेने द्रव्य स पत्नी का शृगार किया परन्तु भाव से आत्मा का शृगार करक केवल ज्ञान पा लिया ।

(5) (4) मे इतना भाग्यशाली हूँ कि इन्द्र ने मेरा लालन पालन किया।

(6) (7) आप मुझे जानते हो । मे शिवलिग से प्रकट हुआ हूँ।

(7) (5) भगवान महावीर ने ही मुझे चारित्र म स्थिर किया था।

(8) (3) शुद्ध भावो से मुनि को दान देने स मैंने तीर्थंकर नाम कर्म का बध किया।

(9) (3) आप मेरे यहाँ पर आना 142 फुट ऊँचाई पर नयनाभिराम अजित नाथ परमात्मा के दर्शन होगे।

(10) (5) भगवान महावीर की वाणी को चार अनुयागो म किसने विभाजित किया।

(11) (5) 14 पूर्व का सार मेरे अन्दर समाविष्ट है।

(12) (2) जिन कल्पि मुनि आहार किसग करत थे।

(13) (3) प्रभु भक्ति का अखण्ड रखने के लिय मैंन अपन शरीर की नस का काट कर वीणा म जोड दी।

प्रश्न 3 इस जाली में 12 चक्रवर्तिया के नाम बिखर गये हैं कृपया आप ढूँढकर निकालिए। एक अक्षर का प्रयोग दूसरी बार हो सकता है।

भ	सु	ध्य	म	न	न्ति
त	ह	कु	ण	अ	रि
प	ज	त	र्ती	भू	ग
च	क्र	*	रा	द	र
र	त	शा	स	वे	दग
थु	ला	ब्र	व	न	*
ग	म	घ	र	न	*

प्रश्न 4. पॉच अक्षर का एक नाम

(1) 1 + 2 से एक पाउडर का नाम

(2) 4 + 5 से एक चौंघडिया बनता है।

(3) 3 + 5 से एक कलर बनता है।

(4) 1 + 2 + 3 से एक लडकी का नाम बनता है

(5) 3 + 5 + 4 से लोभ का पर्यायवाची बनता है।

प्रश्न 5. वीतराग के विषय पर 20 लाईन लिखें।



ईश्वर का ध्यान करें

5

इ ई से प्रत्येक प्रश्न का उत्तर दीजिये ।

(1) परमात्मा का जन्म कल्याणक मेरु पर्वत पर कौन मनाते है ?
(2) माता के गर्भ म तीर्थंकर का जीव आते ही प्रभु की स्तुति कौन करता है ?
(3) सूर्य किरण के आलम्बन से अष्टापद तीर्थ की यात्र किसन की ?
(4) नर्तकी के पीछे मोहित कौन हुआ था ?
(5) परमात्मा का दूसरा नाम क्या है ?
(6) मानव से मानव हमेशा क्या करता है ?
(7) भगवान अरनाथ ने कितने हजार वर्ष क बाद शादी की थी ?
(8) दिल्ली का प्रथम नाम क्या था ?
(9) शरीर जीभ नाक ऑख का य पॉच क्या है ?
(10) मार्गानुसारी का 35 वा गुण कौन सा हे ?
(11) भगवान अरनाथ न चक्रवर्ती पदवी कितने हजार वर्ष तक भोगी?
(12) ज्ञान पद के कितने भेद हैं ?
(13) अइमुत्ता मुनि को क्या करत करते केवल ज्ञान हुआ ?
(14) वीस विहरमान मे से एक का नाम लिखो ?
(15) पॉच समिति म एक समिति का नाम लिखो ?
(16) सिद्ध परमात्मा के मूल गुण कितन है ?
(17) ब्राह्मण के रूप म वर्धमान कुमार की पाठशाला मे किसने परीक्षा ली ?
(18) भगवान अरनाथ ने माण्डलिक राज्य कितने हजार वर्ष किया ?
(19) गुरुवदन का सूत्र कौन सा है ?

(20) भगवान शान्तिनाथ की कितनी हजार साध्वियाँ थी ?

(21) परमात्मा के चोंतिस अतिशय मे से एक अतिशय का नाम लिखो ?

(22) तीर्थकर परमात्मा के जन्म समय सुघोषा घटा कौन बजाता है ?

(23) इलायची कुमार कौन से नगर का था ?

(24) कौरव पाण्डव ने किस नगर मे जुआ खेला था ?

(25) अरनाथ भगवान दीक्षा अवस्था मे कितने हजार वर्ष रहे ?

(26) प्रतिष्ठा के समय शिखर पर क्या चढाया जाता है ?

(27) भक्तामर स्तोत्र की एक लाईन लिखिये ?

(28) वरघोडे मे सबसे आगे क्या रहता है ?

(29) अभीनाइस पर्वत कौन–से देश मे है ?

(30) भद्रबाहु स्वामी रचित स्तोत्र की एक लाइन लिखिये ?

(31) इमारतो का नक्शा कौन बनाता है ?

(32) आकाश के समान अनत क्या है ?

(33) बाल्यावस्था मे ऋषभ कुमार को इन्द्र ने क्या दिया ?

(34) कुल मे से एक कुल का नाम लिखो ?

(35) नेमिनाथ भगवान के कितनी हजार साध्वियाँ थी ?

(36) विद्यार्थी को हमेशा किसकी चिन्ता रहती है ?

(37) पच्चीश क्रिया मे से एक क्रिया का नाम लिखो ?

(38) भगवान महावीर के प्रथम शिष्या का क्यां नाम था ?

(39) आदिनाथ भगवान ने प्रथम पारणा किसका किया ?

(40) साधु महाराज किसको वश मे रखने की कोशिश करते है ?

(41) धर्मास्तिकाय को आज के विज्ञान की भाषा मे किस शब्द से पुकारा जाता है ?

(42) गृहस्थाश्रम मे ही केवल ज्ञान किसने प्राप्त किया ?

(43) भगवान महावीर निर्वाण के 599 वर्ष बाद मे किसका जन्म हुआ ?

(44) माडला के दोषो मे से एक ?
(45) मतिज्ञान का एक भैद कौन सा है ?
(46) प्रभु आदिनाथ के 100 पुत्रो मे से एक का नाम लिखो ?
(47) साधक को पुन पापो से हटने का कौन सा सूत्र है ?
(48) वैशेषिक दर्शन ससार का कर्ता किसको मानता है ?
(49) अहिसा महाव्रत की एक भावना का नाम बताइये ?
(50) द्वारिका नगरी की रचना किसने की थी ?
(51) दस दिशाओ मे से एक दिशा का नाम क्या है ?
(52) दुनिया मे अभी सबसे ज्यादा कौन सी भाषा प्रचलित बनी हुई है ?
(53) भगवान महावीर के समवसरण मे नरनारी कौनसी दिशा मे बैठते थे ?
(54) हिन्दी साहित्य रत्न का सबसे बडा केन्द्र कहाँ पर है ?
(55) मेघनाथ का दूसरा नाम क्या था ?
(56) स्त्री रक्षा के लिए कोई चीज है तो क्या है ?
(57) आदमी बीमार होता है तब डाक्टर उसे क्या देता है ?
(58) देवानदा ने त्रिशला माता के रत्न पूर्व भव मे क्यो चुराये ?
(59) पुणिया श्रावक का मुख्य गुण कौन सा था।
(60) पैसे से अधिक मूल्यवान क्या है।
(61) सकट के समय मानव किसको याद करता है ?
(62) कल्याण मन्दिर की 43वीं गाथा का प्रथम अक्षर क्या हैं ?
(63) 18, 24, 120 मिच्छामि दुक्कड किस सूत्र के माध्यम से दिया जाता है ?
(64) सन् 1984 मे कौनसी प्रसिद्ध नारी ने इस ससार से विदा ली थी ?
(65) परीक्षा मे उत्तीर्ण होने पर क्या मिलता है ?
(66) नवकार मत्र मे लघु अक्षर कितने है ?
(67) अतिचार मे पाच कर्म है उनमे से एक कर्म का नाम लिखो ?

(68) विलाप करते-करते किसको केवल ज्ञान प्राप्त हुआ ?
(69) धन पाकर धर्मी कौन बना ?
(70) सत्य भामा रुकमणी के साथ क्या करती थी।
(71) शत्रुजय के मुख्य कितने नाम प्रसिद्ध है ?
(72) दशार्ण भद्र राजा की सवारी के साथ किसने बराबरी की ?
(73) अष्ट प्रवचन माता मे से एक का नाम लिखो ?
(74) प्रतिमा पर कौन-सा सुगन्धित द्रव्य लगाया जाता है ?
(75) कमलावती रानी के पति का क्या नाम था ?
(76) ऋषिमण्डल स्तोत्र की एक लाईन ई से शुरु होती है वह लिखो ?
(77) मृगापुत्र के पूर्व भव का क्या नाम है।
(78) ताम्बूल में एक वस्तु का नाम लिखो ?
(79) सख्या गिनने की शुरूआत कहॉ से होती है ?
(80) महादेवी वर्मा की मृत्यु कौन से नगर मे हुई ?
(81) सतिकर की एक गाथा का प्रथम अक्षर लिखो ?
(82) आकाश मे वर्षा के दिनो मे क्या दिखाई देता है ?
(83) तेवीश विषय किसके है ?
(84) दिगंम्बर का प्रसिद्ध काच का मदिर कहॉ पर है ?
(85) शत्रुंजय का तीसरा उद्धार किसने करवाया था ?
(86) नारी देख नारी किसने त्यागी ?
(87) भगवान महावीर का शासन काल कितने हजार वर्ष का है ?
(88) बाइविल ग्रथ को कौन से धर्म मे मुख्यता ज्यादा दी गई है ?
(89) श्रेयास नाथ भगवान की दीक्षा पर्याय कितने लाख वर्ष की था ?
(90) विक्रमादित्य राजा का एक विशेष गुण क्या था ?
(91) मुनिसुव्रत भगवान छद्मावस्था काल मे कितने महीने तक रहे ?
(92) रविवार का दूसरा नाम क्या है ?
(93) 64 इन्द्रों मे से एक इन्द्र का नाम लिखो ?
(94) श्रीपाल को धवल सेठ ने किस कारण से समुद्र मे गिराया ?

(95) मुनिसुव्रत भगवाने के प्रथम गणधर का क्या नाम था ?
(96) ब्रह्मचर्य की नो वाड मे एक वाड का नाम लिखो ?
(97) वैक्रिय लब्धि मे से एक लब्धि का नाम लिखा ?
(98) अष्ट महासिद्धि म से एक सिद्धि का नाम लिखो ?
(99) तप की परिभाषा क्या ?
(100) चौविश तीर्थंकरो मे से नमिनाथ भगवान का कितना नम्बर है ?
(101) सगम देव ने किसके वचन असत्य करने के लिये महावीर पर उपसर्ग किये ?
(102) गुजरात प्रान्त के एक तीर्थ का नाम ?
(103) एक प्रचलित मुस्लिम त्यौहार का नाम ?
(104) एक प्रसिद्ध देश का नाम बताओ ?
(105) सर्वार्थ सिद्ध विमान के ऊपरी विभाग की भूमि का क्या नाम ?
(106) नदनऋषि के भव मे महावीर की आत्मा ने कितने मास क्षमण किये ?
(107) मौन एकादशी की आराधना करने वाले सुव्रत की कितनी पत्नियाँ थीं ?
(108) दादागुरू देव के सामने प्रतिदिन हम क्या बोलते हैं ..

प्रश्न 2 (1) .. कुमार को नाचते–नाचते केवल ज्ञान की प्राप्ति हुई।
(2) गुरुवन्दन विधि का प्रथम पाठ .. है।
(3) प्रियजनो का .. होने से आर्तध्यान अर्थात दु ख होता है।
(4) 16 साल तक भारत पर राज्य करने वाली .. .. थी।
(5) कमलावती रानी क प्रतिबोध स .. राजा ने सयम लिया।
(6) .. को दखते हुए विहार करना चाहिये।
(7) सामायिक का एक भेद है।

(8) खट्टा मीठा चरपरा आदि 23 .... विषय है।

(9) महापुरुषो का ही .. . बनता है।

(10) श्रेयास ने अपने दादा को . .. . . बहराया था।

(11) आजकाल . .. का सब को भय रहता है।

(12) . . वादी बनकर आये विनित बन कर गये

(13) . . . .. . मे राजा चक्रवर्ती आदि सुख की वाछा की।

(14) . . .... व्यक्ति कभी सुखी नही बन सकता।

(15) मानव को हमेशा . ... अपनानी चाहिये।

(16) किसी के काम जो आए उसे ..... अपनानी चाहिये।

(17) प्रात.काल प्रतिदिन शुभ वेला मे .. . .का स्मरण करना चाहिये।

(18) किसी के दर्द मे सहारा देना का कार्य कहलाता है।

(19) सिद्धाण बुद्धाण सूत्र मे पद ... . है। .

(20) दश समाचारी मे से एक का नाम .. .. है।

(21) दादा गुरु देव ने पॉच नदियो के बीच बैठकर पॉच पीरो को वश मे किया था उस नदी का नाम ... नदी है।

(22) आचाराग सूत्र के प्रथम श्रुत स्कध मे . . . . उद्देशक है।

(23) उत्त्राध्ययन मे 36 अध्ययन है उसमे . . . . अध्ययन भी है।

(24) मेरु पर्वत का प्रथम काड . ऊॅचा है।

(25) . . तप है।

(26) अभिनन्दन स्वामी का पारणा . .. से हुआ था।

(27) तीसरी नारकी की अवगाहना ... की है।

(28) सात भय मे से . भय भी है।

(ब) 1+3+4 समाचार का पर्यायवाची शब्द (1)

2+3 परमात्मा दीक्षा लेने से पूर्व करते हैं (2)

4+3 नृत्य का दूसरा नाम (3)

1+4 श्रवण का पर्यायवाची शब्द (4)

सर्वाक्षर मिलने से एक सति का नाम (पूज्या साध्वीवर्या का नाम) बनता है। (5)

प्रश्न 4. नीचे लिखे हुये वाक्यों के आधार पर खाली जगह भरो; जवाबी शब्दों के अक्षर कोष्ट में दी गई संख्या के अनुसार होने चाहिये। शब्दों के प्रथम अक्षरों से आनंद घन स्तवन की एक प्रसिद्ध पंक्ति प्रकट होनी चाहिये। संयुक्त अक्षर एक ही गिना जायेगा।

(1) 6 बौद्ध दर्शन की उत्पति मुझ से हुई है यह धारणा गलत नहीं है।

(2). . 4 सावधान बनो मुझ पर आसक्त मत बनो नही तो मगु आचार्य जैसे गटर के कीड़े बनोगे।

(3)... 5 अहो मै कितनी भाग्यहीन हूँ घर पधारे पुत्र मुनिराज की कुछ भक्ति नही कर पाई।

(4) ... 4 अगर आप सच्चे जैन हो तो मुझे मानना ही पडेगा क्योकि मेरी आज्ञा मानने वाला सच्चा जैन है।

(5)... 4 तुम क्यो चिन्ता करती हो मै तुम्हे जागृत कराने आया हूँ ? आओ अपने दोनो साथ शिव रमणी को वरेंगे।

(6)..... 5 मेरे पर गौशाले ने लेश्या डालकर भगवान के सामने ही मेरे प्राण हरे।

(7)...... 4 मै चारित्र मे विचलित हो गया था परन्तु एक सतिसन्नारी ने मुझे समझाकर पुनः संयम मे दृढ किया।

(8).. . 2 मै क्रोधि आत्मा के घर में नही रहती व मुझे समूल नष्ट करती है।

(9) . . 4 मेरे यहाँ पर ऋषभ देव पधारे परन्तु बाहुबली को दर्शन नही हुये तब मेरे यहाँ पर बाहुबली ने रत्नमय चोतरा बनाया।

(10) 5 मैंने मेरे पतिदेव का अन्तिमाराधना करवा कर स्वर्ग म भेजा।

(11) 4 मरी कोरणी देखने हजारो लाग विदेश से भी आते मै भारत म प्रसिद्ध हूँ।

(12) 6 मैन अपने दुस्कृत्त की आलोचना करने के लिये 1444 ग्रथ की रचना की।

(13) 4 मैन काटा निकालते समय बिन इच्छा प्रभु के तीन शब्द कान म पडे उसी से मै अभय कुमार के जाल से बच गया।

प्रश्न 5

पु	ठ	रू	षो	*	हि
पु	प्र	ह	री	स्व	लक्ष
प	पृष्ट	सि	म	क	त्त
त्त	द	त्रि	सु	पुण	व
य	वा	म	ण	ठ	रू
पृ	ड	कृ	दे	ण	म

प्रश्न 6 परमात्मा के विषय मे 20 लाइन लिखें।



देवाधिदेव चरण सेवा

6

नोट—द, दा, दि, दी आदि से शुरू करे।

1 रग मडप मे 170 जिन की मूर्ति कहा पर है।
2 भक्ति मे हारकर किसने विरति धर्म स्वीकार कर इन्द्र को हराया।
3 कमठ का पार्श्व प्रभु की आत्मा से एक पक्षी वैर कितने भव तक रहा।
4 चडकौशिक का जीव मृत्यु के बाद कहा गया।
5 कौन से पुत्र ने मा बाप को तारा।
6 तेतली पुत्र किसके बोध से तीरे।
7 निर्लोभता की कुजी।
8 उपादान है निमित्त नही।
9 रोग नही फिर भी रोगी कौन।
10 स्तभ देखकर सत बने।
11 तीर्थकर गौत्र माता पुत्र ने साथ बाधा।
12. पालक पापी ब्रह्मदत्त दुर्गति किस कारण से पाई।
13. मेघरथ राजा दया पाल कर क्या बने।
14. द्रौपदी, सीता, सुलसा, दमयती, प्रभावती मर कर कहा गयी।
15 साधु को आहार करते देख वैराग्य किसको हुआ।
16 नदीश्वर द्वीप परअष्टाह्निका महोत्सव कौन करते।
17 सतिकर स्त्रोत की रचना कहा पर हुई।
18 लव कुश के दादा का नाम क्या था।
19 कृष्ण की माता का नाम क्या था।
20 शयम्भवाचार्य द्वारा रचित सूत्र का नाम लिखो।
21 धरती से चार अगुल ऊपर कौन रहते है।
22 कपिला दासी मुनिराज को कहती है, मै नही तुम्हारा डोया देता

है।

23 पार्श्वनाथ का जन्म कल्याण किस दिन था।

24 पाचवा गुणस्थान का नाम लिखो।

25 पचाचार मे से एक का नाम लिखो।

26 भगवान महावीर का कौन--से देवलोक से च्यवन हुआ था।

27 कैकेयी को वर मागने का किसने कहा।

28 जगल मे प्रज्वलित अग्नि को क्या बोलते।

29 स्वय अधकार मे रहकर दूसरो को प्रकाश देता है।

30 चौदह नियमो को धारने वाले पच्चक्खाण करते है।

31 प्रत्येक वनस्पति कितनी है।

32 पाच वाणिज्य मे से एक का नाम लिखो।

33 दिन के पापालोचना के लिये हम क्या करते।

34 सूर्यास्त के पूर्व किसके पच्चक्खाण करते।

35 तीन प्रकार की विराधना से एक का नाम लिखो।

36 सामायिक मे मन के दोष कितने लगत है।

37 अपने धन के उपयोग से किसकी सेवा करनी चाहिये।

38 किसकी सगत से हमे बचना चाहिये।

39 सूर्य का दूसरा नाम

40 मदिरा के कारण किसका विनाश हुआ।

41 द्रौपदी का वस्त्र हरण किसने किया।

42 अपने वैभव का गर्व किसने किया।

43 भारत की राजधानी का नाम लिखो।

44 अरिहंत का पर्यायवाची शब्द लिखो।

45 अष्टमहाप्रतिहार्य मे एक का नाम लिखो।

46 भगवान महावीर का निवार्ण कौन से दिन हुआ।

47 असुरो का दूसरा नाम।

48 धन्ना अणगार की काया तपस्या से क्या हो गई थी।

49 अष्टमगल मे एक मगल का नाम लिखो।

49 अप्टमगल मे एक मगल का नाम लिखो।
50 चन्दनबाला के पिता का नाम।
51 प्राण कितने है।
52 छट्ठे दिक्परिमाण व्रत मे किस की मर्यादा करते हो।
53. 10 विगई मे से दो विगई का नाम लिखो।
54 चदनबाला ने प्रभु को आहार वहोराया तव देवो ने क्या किया।
55 अरिहत सिद्ध हमारे क्या है।
56 कौन्–सा कर्म सुख से भोगा जाता है।
57 यति धर्म कितने प्रकार के है।
58 पचेन्द्रिय का वध करने वाला कहा जाता है।
59 नल राजा ने किसको भयकर जगल में छोड़ा।
60 घात की खड के दूसरे महाविदेह के जिन का नाम लिखो।
61 आठ कर्म मे एक का नाम लिखो।
62 सम्यक्त्व के 67 भेदो में से एक का नाम लिखो।
63 भावी तीर्थंकर में से एक तीर्थकर का नाम लिखो।
64 24 भगवान की एक माता का नाम लिखो।
65 अतीत तीर्थंकर के 8-9 तीर्थंकर का नाम लिखो।
66 परमात्मा की देवियो में से एक देवी का नाम लिखो।
67 भगवान महावीर का प्रथम पारणा किसने कराया।
68 विमलशाह ने विमलवसहि की टूक कहा बनाई।
69 विजयादशमी का दूसरा नाम क्या।
70 वितभय पट्टन मे धूल की वर्षा किसने की।
71 शत्रुजय का दूसरा उद्धार किसने कराया।
72 द्राविड वारिखिल्ल शत्रुजय पर कितने मुनियो के साथ मोक्ष गये।
73. अध्यात्म गीता की रचना किसने की।
74 पैतालिस आगम मे पयन्ना सूत्र कितने है।
75 वीशविहरमान मे से एक नाम लिखे।

76 अतराय कर्म की एक प्रकृति का नाम लिखो।
77 नाम कर्म की एक प्रकृति का नाम लिखो।
78 वीशस्थान मे से एक का नाम लिखो।
79 दीक्षा के वाद भगवान के कन्धे पर इन्द्र ने क्या रखा था।
80 पार्श्वनाथ भगवान ने कितने भव किये।
81 मालवे मे काच का मदिर किसका प्रसिद्ध है।
82 चार प्रकरण मे से एक का नाम लिखो।
83 आषाढीभूति किसके कहने से पार्श्वनाथ का बिम्ब भराया।
84 रत्नत्रय का नाम लिखो।
85 30 अरब 80 करोड 88 लाख सोना मोहर का दान तीर्थंकर कब देते।
86 वैश्रवण के पुत्र का नाम लिखो।
87 सूक्ष्मसपराय गुणस्थान कौन–सा है।
88 82 दिन महावीर किसके गर्भ मे रहे।
89 सात द्रव्य मे से एक द्रव्य का नाम लिखो।
90 तीर्थंकर के पाच कल्याणक मे एक का नाम लिखो।
91 अन्तरिक्ष पार्श्वनाथ की मूर्ति किसने बनाई।
92 धर्मनाथ भगवान का आयुष्य कितना था।
93 कुथुनाथ भगवान की मुख्य श्राविका का नाम लिखो।
94 द्रढायु श्रावक कौन–से देवलोक मे है।
95 आठमा गणधर अकपित के पिता का नाम लिखो।
96 वीशविहरमान मे सुजातनाथ के माता पिता के नाम लिखो।
97 प्रश्नचन्द्र ऋषि किसके वचन सुनकर मन मे सग्राम किया।
98 चक्रवर्ती के घर पर कितने लाखमण नमक लगता है।
99 द्वारिका किसने जलाई।
100 अष्टापदतीर्थ पर किसने तीर्थंकर नाम कर्म का बध किया।
101 गौतम स्वामी को भगवान ने किसको प्रतिबोध देने भेजे।
102 चौदह सपनो मे से एक का नाम लिखो।

103 भगवान ने 27 भवो मे से 10 भव किसके किये।

104 शान्ति के रचयिता कौन बने।

105. भगवान महावीर को गर्भ से हरण करने वाले हरिणगमेसी देव कौन बने।

106 जिनेश्वरसुरि को खरतर विरूद किसने दिया।

107. 25½ आर्यदेश मे से एक देश का नाम लिखो।

108. ऋषभदेव ने 13 भव किये दूसरे भव मे कहा उत्पन्न हुये।

109. अरिहंत पद की आराधना से कौन तीर्थंकर बने।

प्रश्न 2. नीचे लिखे हुये वाक्यों के आधार पर खाली जगह भरो। जवाबी शब्दों के अक्षर कोष्ठक ( ), में दी गई संख्या के अनुसार होने चाहिये। शब्दों के प्रथम अक्षर से देवचन्द्र जी कृत वीश विहरमान स्तवन की प्रसिद्ध पंक्ति प्रगट होनी चाहिये। संयुक्ताक्षर एक ही गिना जायेगा।

1. .. .. (5) मुझे नहीं पहचानते मैने ही भगवान महावीर का पूर्व भव मे गर्भाहरण करने वाला मैं ही था।
2. .. .. (5) मै वही हूं जो पूर्वभव मे पुडरिक–कंडरिक अध्ययन का रोज 500 बार परावर्तन करता था उसमे मै 11 अंग का ज्ञाता बना।
3. .... (3) मेरे निवारणार्थ ही वनस्पति के आरम्भ दोष के प्रायश्चित के लिए धर्मघोष सुरिजी ने 6 विगईयो का त्याग किया।
4. .... (4) मुझे खरीदने के लिए श्रेणिक सारा राज्य देने लगे फिर भी वे नही खरीद पाये।
5. .. . .(5) इन्द्र मुझे पराजय करने को आया परन्तु मैने ही उसको हराकर चरणो मे झुकाया।
6. . . .. (5) स्नेह का प्रतीक भारतीय त्यौहार कौन–सा है।

7 (3) मे चन्द्रहास खडग लेने गया परन्तु वह खडग मुझे प्राप्त नहीं हुई उसी खडग ने मेरे प्राण हर लिये।

8 (2) मै एकत्व भावना पर आरूढ होकर वैरागी बना।

9 (3) मेरे गुरु ने उत्सूत्र भाषण द्वारा अपना ससार भ्रमण बढाया।

10 (4) जिन वाणी श्रवण के प्रभाव से अभयकुमार की जाल मे से छूट गया।

प्रश्न 3 शब्दा नन्द

12	10	4	8	6 3		5	12			
				9				16		
7	20	18	30		32 14					
					11	13				
		22		24	15	26			17	1
						19	28 29			
			21				27	25		
23							31			

आडी चावी तथा ऊबी चावी

1 गुण स्थान का नाम (5)
2 भगवान की प्रथम माता (4)
3 सिह .. ... गति मे है (3)
4 45 आगम मे से एक नाम .. .. (3)
5 भगवान महावीर तीर्थंकर थे (3)
6 मनुष्य लोक को .. .. भी कहते हैं। (4)

7 श्रेणिक ज्मी . गति मे है (3)

8 साधु साध्वी का सिद्धान्त है (5)

9 एक शांति . .... (4)

10 . बनाने मे ... हिंसा होती है (2)

11 स्वर्ग का पर्यायवाची . . (3)

12 खधक मुनि की . . उतारी गई (3)

13 आरती मे ... काम आता है (3)

14 शय्यंभवाचार्य ने दशवैकालिक सूत्र की रचना .. के लिये की (3)

15 नमि राजर्षि ने . भावना का चिन्तन किया । (3)

16 अधकार का पर्यायवाची .. . (3)

17 सागर का जल ... . . है (2)

18 ग्रथ का नाम (4)

19 एक ज्ञान का नाम (5)

20 सस्कृत का प्रसिद्ध नाटक . . . . (4)

21 एक नवकार से . . . सागरोपम कर्म का नाश होता है (3)

22 एक चरित्र का नाम (4)

23 छठी नरक का गोत्र . . (4)

24 पचपरमेष्ठी मे नमस्कार के लिये शब्द . . (2)

25 जीव एक .. . है (2)

26 पृथ्वीकाय के जीव . . .. .. (4)

27 चुरा करते ज्ञान पाया (2)

28 प्रभु महावीर . भी कहे जाते है (2)

29 स्व पर प्रकाशक है (2)

30 रावण ने सीता का ... किया (3)

31. समवसरण देख मोक्ष गई .. . (4)

32 गुप्ति है . . (2)

प्रश्न 4. परमात्मा के विषय में 20 लाईन लिखें ? ❖ ❖ ❖

कान्ति सौरभ 7

का, का से प्रत्येक प्रश्न का उत्तर दीजिये ?

1 सुविधि नाथ भगवान के चार कल्याण किस पावन धरा पर हुये।
2 खदक मुनि के पूर्व भव मे निकाचित कर्म का बध का निमित्त क्या बना।
3 भगवान महावीर का देव दुष्य वस्त्र कहा जाकर गिरा।
4 वासुदेव वासुदेव का मिलन कहा पर हुआ।
5 भरत महाराजा को केवल ज्ञान कहा हुआ।
6 500 पाडो को प्रतिदिन कौन मारता था।
7 पत्नी का पर्यायवाची शब्द किया है।
8 आर्य सुहस्ति के शिष्य का नाम क्या था।
9 एक राजहस का नाम क्या था।
10 जल के उपर क्या रहती है।
11 दीन दुखियो पर करुणा करना कौन-सी भावना है ।
12 भगवान महावीर के कानो म किस वृक्ष की लकडी डाली थी।
13 वह कौन-सा शरीर है जो विग्रह गति मे भी साथ रहता है।
14 अवग्रह का नाम लिखे ।
15 नाम कर्म की एक प्रकृति का नाम ।
16 एक ऋषि का नाम क्या है ।
17 कौन-सा द्रव्य अप्रदेशी है ।
18 21 प्रकार के सचित जल म से एक का नाम।
19 उन्हेल तीर्थ मे कौन-से पार्श्व नाथ है ?
20 वह कौन-सा प्रदेश है जहा सदा बर्फ जमी रहती है।

21. कृष्ण महाराजा ने किसे अपने वश में किया।
22 सम्यक्त्व का एक प्रकार।
23. नेमिनाथ भगवान ने किस अवस्था को देखकर तोरण से रथ फेरा।
24 शरीर द्वारा सर्वथा दुष्प्रवृतियो को रोकना कौन–सी गुप्ति है।
25. समवसरण मे क्या होते हैं।
26 सम्यक्त्व के पाच अतिचारो मे से एक का नाम।
27. महादेव ने क्या ग्रहण किया।
28. मृत्युञ्जयी शब्द का पर्यायवाची शब्द बताइये।
29 अपराध करने पर कहां ले जाते हैं।
30 18 लिपी मे से एक का नाम लिखो।
31. पुरुष के 72 कला मे से एक का नाम।
32 स्त्री की 64 कला मे से एक का नाम।
33. तीर्थंकरो का एक शारीरिक विशेषण बताइये।
34 पार्श्वनाथ भगवान ने किसको चिराकर नाग नागिन को निकाला।
35. एक लेश्या का नाम।
36 जल कौन–से समाज मे अमृत तुल्य होता है।
37 अइमुत्ता मुनि ने पानी मे क्या तिराई।
38 शरीर को कष्ट पहुंचाना कौन–सा तप है।
39 कुकण साधु ने किस समय खेती का विचार किया।
40. घातकी खंड को घेरे हुए कौन–सा समुद्र है।
41 देव दुंदभी मे 5 वाजित्र में से एक का नाम।
42. शरीर के ममत्व को त्यागकर मर्यादित समय के लिये निश्चलतापूर्वक ध्यान करना क्या कहलाता है।
43. एक भाषा का नाम।
44. सब से सूक्ष्म शरीर कौन–सा है।
45 विजय सेठ विजया सेठानी ने किसको वश मे किया।
46 आख मूदकर कौन चलता है।
47 रघुवश के रचयिता कौन थे।

48 प्रथम देवलोक के सौधर्मेन्द्र ने किस भव मे सौ अभिग्रह धारण किये थे।
49 4 बुद्धि मे से एक का नाम।
50 मेवाड उद्धारक स्वामी भक्त आदर्श स्वरूप यक्ति का नाम।
51 अनन्त काय का नाम।
52 24 तीर्थंकर मे से एक भगवान का लक्षण।
53 सवर तप का एक भेद।
54 पार्श्वनाथ प्रभु की दीक्षा तिथि बताइये।
55 पचमी की सवत्सरी को चौथ मे किसने परिवर्तन किया।
56 काछोली वाल गच्छ का उत्पति स्थान कौन–सा है।
57 तेरापथ के प्रसिद्ध आचार्य का नाम।
58 पुण्य तत्व का भेद।
59 आचार्य प्रभवस्वामी का गोत्र कौन–सा है।
60 इन्द्रिय के 63 विषय मे से एक नाम।
61 सुमतिनाथ भगवान की प्रथम आर्या का नाम।
62 एक योग का नाम।
63 जेल मे भाव हिसा करने वाला कसाई कौन था।
64 आगम सूत्र किस पर छपते हैं।
65 चक्रवर्ती के एक रत्न का नाम।
66 किसके प्रभाव से कल्पवृक्ष फल नहीं देता।
67 धन्ना अणगार किस नगरी के थे।
68 भगवान महावीर के एक प्रमुख श्रावक का नाम।
69 एक दडक का नाम।
70 श्रेणिक महाराजा की मृत्यु कहा हुई।
71 जबूस्वामी का गोत्र बताइये।
72 आगामी भरत क्षेत्र मे छठे तीर्थंकर कौन होगे।
73 सूत्र किस समय पढना चाहिये।
74 मरणान्तिक सलेखना के एक अतिचार का नाम।

75 देवी की आराधना से किस फल की सिद्धि होती है।
76 एक वाहन का नाम, एक महिने का नाम, एक तप का नाम।
77 साधु के 27 गुण मे से एक, चरित्र के 70 गुण मे से एक नाम।
78 एक युग प्रधान का नाम।
79 केवल ज्ञान होने पर क्या प्रकट होती है।
80 भगवान महावीर का निर्वाण किस दिन हुआ।
81. एक धातु का नाम।
82 सोलह श्रृगार मे एक का नाम।
83. एक राग का नाम।
84. साधु का वर्ण कैन–सा है।
85. वकचूल ने किसका मास नही खाने का नियम लिया।
86 एक शरीर का नाम।
87. भगवान महावीर का गोत्र।
88. 108 पार्श्वनाथ मे से एक का नाम।
89 हिन्दी मासिक पत्रिका।
90. सस्कृत महा विद्यालय कहा है।
91. कनक रत्न राजकुमार की शादी कहा होने वाली थी।
92. साधु साध्वी के उपकरण का नाम।
93. साधु गोवरी किसमें लाते है।
94. सामायिक के 12 दोषो का नाम।
95. एक चोरेन्द्रिय का नाम।
96. कौणिक ने अपने पुत्र के लिये राजसभा मे क्या मांगा।
97. लक्ष्मण ने सीता के बाहर नही जाने के लिए क्या बनाई।
98 इन्द्रियो को क्या करना चाहिये।
99 कृष्ण का दूसरा नाम।
100. 20 विहर मान मे अजित वीर्य की माता का नाम।
101. एक द्रव्य का नाम लिखो ?

प्रश्न 3

1 ऋषभदेव की 500 धनुष की   थी।
2 राजसभा मे जाते हुये चन्द्र सूरिजी की परीक्षा   ने की थी।
3 शुभ कार्य मे पहले हाथ मे   बाधते है।
4 जिनदत्त सूरि द्वारा स्थापना किये हुई गोत्र   है।
5 प्रतिक्षण मोक्ष के लिये   करनी चाहिये।
6 तिर्यंच प्राणी साल मे दो बार   उतारता है।
7 कलिकुड तीर्थ की स्थापना   अटवी मे हुई।
8 शिव कुमार को मारकर   स्वर्ण पुरुष सिद्ध करना चाहता था।
9 करकुड की जन्म नगरी   थी।
10 भगवान महावीर का सातवा चातुर्मास .. था।
11 माण्डवला मे मिगसर वदी सातम को ... का स्वर्गवास हुआ।
12 पुराने को नया और नये को पुराना बनाना यही मेरा मुद्रलेख है   ।
13 मैने जीवन पर्यंत तुम्हे साथ दिया फिर भी तुम मुझे छोडकर चले जाओगे   ।
14 मुझे छोडकर भले जाओ किन्तु मै तो जब तक तुम तुम्हारे घर पर नही पहुचागे तब तक साथ मे ही रहने वाला हू ..   ।
15 श्रुत ज्ञान के आधार पर भी अक्षरश सीमधर स्वामी जैसा ही निगोद का वर्णन करने वाला आचार्य .. थे।
16 बाण कवि द्वारा निर्मित ग्रन्थ   है।
17 सास ने बहु को कहे हुए वचनो से बना हुआ मदिर .. मे आज भी विद्यमान है।
18 ऋषभ कूट की कोटिशिला पर   से नाम लिखते लिखते भरत चक्री की आख मे अनित्यता के आसू उमड पडे।
19 पुस्करार्ध प्रथम महाविदेह के जिन का नाम   है।
20 बारह प्रकार के तप और छ आवश्यको मे समाविष्ट एक अनुष्ठान   है।

21 कार्य करते करते जो समझ पैदा होती है उसे क्या कहते है . . . . ।

22 उत्सर्पिणी अवसर्पिणी . . . के भेद है।

23 श्रेणिक महाराजा की .... आदि दस रानिया थी।

24 .... . के बारह आगार होते है।

25 . . ... आदिनाथ भगवान के गोत्र का नाम. ....।

26. भारत का स्वर्ग .... को कहा जाता है।

27 कलक .... . . से काला है।

28 सभी जीवो को ...... शरीर होता ही है।

29. मन वचन और .... ये तीनो योग है।

30 . .. .समुद्र के चौतरफ पुष्कर द्वीप है।

31. पृथ्वी अप् आदि छह प्रकार की .... है।

32. .... सेठ ने 1008 वणिक के साथ मुनिसुव्रत प्रभु के पास दीक्षा ग्रहण की।

33. उत्तराध्ययन सूत्र .... सूत्र है।

34. .... बाह्य तप कहलाता है।

35. औदारिक आदि सात .... है।

36 अपर्याप्त अवस्था मे .. .. योग रहता है।

37 सत्सगति . ... से भी बढकर है।

38. जहाज मदिर .... धाम मे बना है।

39. .... सेठ मरकर, सौधर्मेन्द्र हुआ ऐसा उल्लेख कल्पसूत्र मे है।

40 साध्वी जी के शील की रक्षा हेतु .... सूरिजी ने गर्द भिल्ल राजा के विरूद्ध युद्ध कराया।

प्रश्न 3. प्रश्नों के उत्तर वर्णमाला क से कः तक में देना है ?

1 मै रथ मर्दन नगर का राजकुमार हूं।

2. मैने तुम्हे जीवन पर्यत अच्छा खिलाया–पिलाया, मौज, सुख दिया फिर भी मुझे छोडकर चले जाओगे।

3 नरसिह राव जैसे को बडा बनाता हू बुश जैसे को पराजित करता हू, हर्षद जैसे को मै चमकाता हू, तुम मुझे कैसे भूल सकते हो।
4 मै मानव शरीर की अस्थि रचना दिखाने वाला सघयण हू।
5 सवत्सरी प्रतिक्रमण मे मेरी जैसी क्षमापना मत करना।
6 आप मुझे जानते हो मुझे खाते खाते केवल ज्ञान हो गया।
7 सिर्फ एक वक्त की मुलाकात मे मै तुम्हे नख–शिख अकित कर लेता हू।
8 मै पापो को हरने वाली नहीं हू जहा देव भी विलास करते है।
9 मैं परमात्मा का अद्‌भूत स्वागत करने वाला हू, परन्तु पिता का घातक हू।
10 राजा दशरथ ने मेरे लिये कचुकी के साथ स्नान जल भेजा।
11 मुझे कोकिला की उपमा दी जाती है।
12 सस्कृत मे सर्वनाम मे मेरा स्थान है।

प्रश्न 4 शब्दों को मिलाइये ?

1 1 + 2 = तेज का पर्यायवाची शब्द।
2 3 + 4 + 5 = समुद्र का पर्यायवाची शब्द।
3 4 + 10 = मरुदेवी माता को किस पर केवल ज्ञान हुआ।
4 10 + 9 = एक अवस्था।
5 12 + 9 + 7 = आराम क्या है।
6 9 +7 = एक बल देव का नाम।
7 10 +12 + 5 = सूर्य कान्ता ने अपने पति को दिया।
8 9 + 4 = एक पाप स्थानक।
9 4 + 7 = क्या खाने से क्लेश नहीं बढता।
10 7 + 4 + 5 = जलचर प्राणी।
11 3 + 6 = एक खार वस्तु।
12 1 + 4 = काग।
13 1 + 5 = कासार।
14 1 + 5 = कार।

प्रश्न 5. खरत्तर गच्छ के 13 आचार्य इस राजमहल के झरोखे में विखर गये हैं आप ढूंढ कर निकाले एक अक्षर का पुनः-पुनः प्रयोग हो सकता है।

जि	अ	ने	णि	ल	व
ख	न	सु	उ	भ	सू
भ	दे	च	न	श्व	स
न्द्र	रि	द	कु	ह	त्त
श	न्द	सा	म	का	ग
ले	र	आ	न्ति	द्र	य

प्रश्न 6. नीचे लिखे हुये वाक्यों के आधार पर खाली जगह भरो ? जबावी शब्दों के अक्षर कोष्ठक में दी गई संख्या के अनुसार होनी चाहिये। शब्दों के प्रथम अक्षरों से आनंदघन पद की एक प्रसिद्ध पंक्ति प्रकट होनी चाहिये। संयुक्त अक्षर एक ही गिना जायेगा।

1 ---------- 7 मै उपशम श्रेणी वाला ग्यारह गुण स्थान मे आयु क्षय होने के पूर्व ही मेरा मरण हो जाता है तो मै कौन से विमान मे उत्पन्न होता हू।

2 ---------- 5 मेरे यहा विशेषावश्यक भाष्य की रचना हुई।

3 ---------- 7 राजानो ददते सौख्य वाक्य के उपर मैने 1022407 अर्थ वाले अष्टलक्षी ग्रन्थ बनाया।

4 ---------- 5 मैने राष्ट्रगीत लिखा तब मुझे नोबल पुरस्कार मिला।

5 ---------- 5 मुहम्मद से खरतर गच्छ की कौन--सी शाखा निकली।

6 ---------- 5 मैने भगवान महावीर की वाणी को चार अनुयोगो मे विभाजित किया।

7 ------------ 3 मै मदिरा सेवन के कारण क्या बन गया।
8 ------------ 5 मै नही हू तो साधुओ को कोई वदन नही करता।
9 ------------ 8 देलवाडा मे खरतर वसही का निर्वाण मेन करवाया।
10 ------------ 4 कोन–सा अवधि ज्ञान निरन्तर घटता रहता है।
11 ------------ 6 जीव सर्व प्रथम किस पर्याप्ति से पूर्ण होता है।
12 ------------ 6 द्रह्य की प्रधानता किस दर्शन म है।



मणि आलोक

8

नोट–म, मा, मि, मी, मु, मू, मे, मै, मो, मौ, मं से उत्तर लिखें।

1 चक्रवर्ती के 14 रत्न मे से एक का नाम लिखो ?
2 सबसे दुर्लभ भव किसका है ?
3. अतिम तीर्थकर का नाम क्या है ?
4. प्लेन से भी किसकी गति तेज है ?
5 पचम गति को क्या कहते है ?
6 स्त्री तीर्थकर कौन बने ?
7 कर्मो का राजा कौन है ?
8 मोक्ष का द्वार किसने उद्घाटन किया ?
9 दशार्ण भद्र ने क्या करके दीक्षित बने ?
10 भक्तामर स्तोत्र के रचयिता कौन बने ?
11 नारी का पर्यायवाची शब्द क्या है ?
12 बच्चो की सबसे बडी पहली शिक्षिका कौन है ?
13 30 दिन के उपवास को क्या कहते है ?
14 शरीर का प्रमुख अवयव क्या है ?
15 आर्द्र कुमार को क्या देखकर वैराग्य हुआ ?
16 अष्ट प्रवचन क्या कहलाती है ?
17 उत्तराध्ययन सूत्र के 19 मे अध्ययन मे किसका वर्णन आता है ?
18 श्रेणिक राजा कौन से देश के थे ?
19 श्री मधर स्वामी कौन–से क्षेत्र मे विराजमान है ?
20 सब कर्मो का क्षय होने से किसकी प्राप्ति होती है ?
21 आठ प्रकार के क्या है ?
22 कौन–सा पदार्थ स्वास्थ्य के लिये हानिकारक है ?

23 पति का परलोक सुधारने वाली सती कौन है ?
24 नमिराजर्षि कौन–सी नगरी के नरेश थे ?
25 अतगड सूत्र म किसका वर्णन आता हे ?
26 शरणागति की रक्षा के लिये शरीर त्यागने वाले राजा का क्या नाम है ?
27 सामायिक के उपकरण का नाम क्या है ?
28 प्रवचन के पहले साधु भगवत क्या बोलते ?
29 रात्री मे मधुर सगीत कौन सुनाते ?
30 जिनदत्त सूरि रचित सूत्र का नाम लिखे ?
31 महाविदेह क्षेत्र मे विराजित तीर्थंकर का नाम लिखे ?
32 श्रीपाल राजा की प्रथम रानी का नाम लिखो ?
33 कषायो से आत्मा क्या बनती है ?
34 रावण की पत्नी का क्या नाम था ?
35 पडित जवाहर लाल नेहरू के पिता का नाम क्या था ?
36 सीप मे से किसका जन्म होता है ?
37 किस सेठानी ने चन्दन बाला का मुडन कराया था ?
38 चार सज्ञा मे से एक सज्ञा का नाम लिखो ?
39 कौन–से क्षेत्र मे हमेशा चौथा आरा चलता है ?
40 शान्तिनाथ भगवान ने कौन–से रोग का निवारण किया ?
41 सामायिक मे 32 दोषो मे से दस दोष किसके है ?
42 70 कोडा कोडी सागरोपम किस कर्म की प्रकृति है ?
43 नवनिधि मे से तीन का नाम लिखो ?
44 सात समुद्घात मे से एक का नाम लिखो ?
45 पाच ज्ञान मे से दो [illegible] का नाम लिखो ?
46 तीन गुप्ति मे से [illegible] का नाम लिखो ?
47 एक चक्रवर्ती का नाम लिखो ?
48 अनाथी मुनि से समकित किसने पाया ?
49 सुदर्शन सेठ की पत्नी का क्या नाम था ?

50 गुणस्थानो मे से एक का नाम लिखो ?

51 दिल्ली मे माणक चोक से कौन–से दादासा की अरथी उठी नही ?

52 अभक्ष मे से तीन का नाम लिखो ?

53 श्रावक के 35 गुण को क्या कहते है ?

54 22 परिषह मे से एक का नाम ?

55 दश विध समाचारी मे से एक का नाम ?

56 उत्पादन दोष मे से 3 का नाम ?

57. नाईट से लाइट किसने पाई ?

58 लाईट से नाईट किसने पाई ?

59 खरत्तरगच्छ मे 13 वर्ष की बाल्यावस्था मे दीक्षित गणिवर्य श्री का नाम लिखो ?

60 दशवैकालिक सूत्र की रचना किसके लिये की गई थी ?

प्रश्न 2. निम्न वाक्यों में रिक्त स्थानों की पूर्ति करो ?

1 द्रौपदी के कारण . .. . की रचना हुई।

2 हम सभी प्रभु . . .. . . की सतान है।

3 सबसे बड़ा . शल्य है।

4 गुरुदेवो को . . कहकर वदन किया जाता है।

5 धर्म यह उत्कृष्ट है।

6 यह . का शासन है।

7 जम्बू स्वामी के बाद ...... के द्वार बद हो गये।

8 ससार . जाल के समान है।

9 जिसने जन्म लिया उसकी निश्चित है।

10 धीरज का फल . . . होता है।

11 काली पीली सफेद लाल सब जाति की .. पृथ्वीकाय है।

12 परिग्रह पर से . हटाना ही अपरिग्रही कहलाता है।

13 युग बाहु के जेष्ठ भ्राता कामाधता के कारण नरक मे गया।

14 मल्लिनाथ ने पूर्व भव मे से तप किया।
15 कुलपाकजी मे की मूर्ति है।
16 कैकयी के मन मे .. दासी के कारण राम को वनवास भेजने की भावना जगी।
17 जो तेरा है वही है वह दान की भावना है।
18 आत्मा की निर्मलता के लिये शुद्धि अत्यन्त आवश्यक है।
19 वशीकरण एक _ है तजी दे वचन कठोर।
20 नव तत्व मे अतिम तत्व है।
21 का कृष्ण भक्ति से जहर का प्याला भी अमृत बन गया।
22 मे राम बगल मे छूरी।
23 वचनो से सबका दिल जीता जा सकता है।
24 रखने से झगडा कम होता है शान्ति बनी रहती है।
25 चोरेन्द्रिय प्राणी है।
26 करोजी अपराध का खमाउ सब समाज को।
27 टेरसा आदर्श सेविका है जिसने नोबेल प्राइज प्राप्त किया।
28 श्रावक के लिये अणुव्रत साधु साध्वी के लिये है।
29 तीर्थंकर को जन्म से श्रुत व अवधि ज्ञान होता है। दीक्षा लेते ही ज्ञान की प्राप्ति होती है।
30 विनय धर्म का है पाप ... अभिमान है।
31 कर्म शत्रु है धर्म गुरु ही सच्चे .. है।
32 सप्रति राजा ने सवा करोड भराई।
33 ने पालने मे झुलाते हुये वैराग्य की लोरी गाकर सभी पुत्रो को दीक्षित किया।
34 सोने के जवले चुगने वाले क्रोच जीव की रक्षा के लिय ने अपने प्राणो का विसर्जन किया।
35 श्रेष्ठ धर्म है।
36 अरिहत सिद्ध को पहचानने के लिये प्रतिदिन हमे मे जाना चाहिये।

37 कुमार पाल हमेशा एक ... का खाद मुहूर्त होने के समाचार मिलने पर भोजन करते।

38 कुमार पाल ने कुल सवा लाख जिन ...... एव छत्तीस हजार . के जिर्णोद्वार कराये।

39 श्रावक . .. के लिये तडपता है .... .. के विरुद्ध लडता है।

40. मोहनीय कर्म . . . . के समान है।

41. श्रावक को प्रतिदिन .... का चिन्तन करना चाहिये।

42 14 पूर्व का सार .. .. सूत्र है।

43 उत्कृष्ट तपस्या कर्मो की . .... करता है।

44 8870700 कोडा कोडी तारे ...... क्षेत्र मे है।

45 साधु के 18 कल्पो का वर्णन दशवै कालिक के ..... अध्ययन मे है।

46 . ... चक्रवर्ती है।

47 ऋषभदेव भगवान का .. गणधर है।

48 मै ऋषभ देव भगवान के 100 पुत्रो मे से .... नाम का पुत्र हू।

49. बनारस विश्व विद्यालय का निर्माण ...... ने करवाया।

50. तमिलनाडु के प्रसिद्ध प्राचीन . ... तीर्थ है।

51 चन्द्र प्रभु भगवान के पिता ... . थे।

52. सुमतिनाथ भगवान की .. . ... शासन देवी थी।

53 अंजना सती की .. . जन्म स्थली है।

54 ..... शाला मे इलायची कुमार ने नृत्य किया।

55 सुदर्शन सेठ की पत्नी ... .. थी।

56 जावडा की . .. जन्म स्थली है।

57 सम्मेत शिखरजी के पहाड के उपर के विभाग को .... .भी कहते है।

58. हम सबके पास . . .... ज्ञान है।

59. पिता को ढूढते समय . ने दीक्षा ली।

60. .. ..प्लेन की तरह तीनो काल एवं तीन लोक मे भी सतत् उडान भरता है।

61 वडी दीक्षा के समय नव दीक्षित मुनिया को ... ... का आरोपण कराया जाता है।
62 हनुमानजी ... के दौहित्र थे।
63 आचारङग सूत्र के विच्छेद होने वाले 7 वे अध्याय .... है।
64 .. .. को देवो ने .. .... की मूर्ति दी।
65 भोगान्तराय का प्रवल उदय को था।
66 भगवान को दीक्षा लेते ही ज्ञान होता है।
67 कृष्ण बलराम के हाथो से मरने वाले मुष्टिक और चानुर ...... थे।
68 अतीत चौवीशी के ... ... तीर्थंकर हुये।
69 द्वारिका नगरी का नाश ... . व्यसन से हुआ।
70 दिगम्बर मुनियो का रजोहरण .. .. से बनता है।
71 वासुदेव चक्रवर्ती तीर्थंकर पद पाने वाले तीर्थंकर .... हुये।
72 हेमवन्त और हरिवर्ष क्षेत्रो का विभाजन करने वाला ..... पर्वत है।
73 हरिभद्र सूरि प्रतिवोधक साध्वी याकिनी को .... पद से विभूषित किया।
74 श्री सिमधर स्वामी का दर्शन ... मे अभी भी होते हैं।
75 अनुकूल व प्रतिकूल प्रसगो मे तटस्थ रहना ... भावना है।
76 हरिबल केवली गृहस्थ जीवन .... जितना था।
77 .. .. उपकार का बदला चूकाना अशक्य होता है।
78 मरणकाल के समय होने वाली समुद्घात .... समुद्घात कहते हैं।
79 सतरह सौ योजन की ऊचाई वाला ...... पर्वत है।
80 .... सर्वनाश करता है।
81 रेडियो का आविष्कार .... ने किया।
82 .... से मित्रता का नाश होता है।
83 नमिउण स्तोत्र के रचयिता ... . है।
84 सूर्यगडाङग सूत्र का ग्यारहवा .... है।
85 मानव जीवन मिल भी जाये तो भी .... मिलना दुर्लभ है।

86. अरिहत परमात्मा .... राग मे देशना देते थे।
87. श्रीखड का उदाहरण . . . में है।
88 अनागत उत्सर्पिणी काल मे प्रथम कुलकर ... . हुये।
89. .. .. दर्शन ईश्वर को नहीं मानता है।
90. 79 लव का एक ... . . . होता है।
91. ... . के चार कल्याणक राजगृह में हुये।
92. अर्जुन माली सदैव .... यक्ष की पूजा करता है।
93. बाहुबली ने ... . युद्ध मे अपनी आत्मा को जागृत कर दीक्षा स्वीकार की।
94. . . .. ने भारत पर 17 वार आक्रमण किया।
95 .... तीर्थ तमिलनाडु प्रान्त मे है।
96. शत्रुजय का दूसरा नाम .. .. तीर्थ भी कहते है।
97. पंचम काल के प्राणी .... नही जाते है।
98. सबसे अधिक स्थिति ... . कर्म की है।
99. कलिकाल सर्वज्ञ हेमचन्द्र आचार्य की जन्म–स्थली ... . है।
100. देवता है या नहीं यह संशय .... को था।
101. घर में परिवार मे शान्ति के साम्राज्य की स्थापना करनी है तो आपको .... करना ही होगा।
102 .... भावनु पवित्र झरनु मुझ हैय्या मां बहया करे।
103 वैष्णवों की भक्ति इस्लामो का इमान क्रिश्चिन की सेवा व जैनियो की दया संसार मे .... है।
104. समकित ग्रहण करके .... का नाश किये बिना सिद्ध गति प्राप्त नहीं होती है।
105. दक्षिण भारत मे . . .. का वृदावन बगीचा प्रसिद्ध है।
106. ... . की कृष्ण भक्ति से जहर का प्याला भी अमृत बन गया।
107 मगलं भगवान वीरो मगल गौतम प्रभु यह साधु–साध्वी .... मे सुनाते हैं।

108 श्रावक के लिए चौदह नियम पालने से जितना पाप राई जितना होता है।

प्रश्न 3 नीचे लिखे हुये वाक्यों के आधार पर खाली जगह भरो ? जवाबी शब्दो के अक्षर कोष्टक में दी गई सख्या के अनुसार होने चाहिये। शब्दों के प्रथम अक्षर से देवचन्द्र जी कृत वीश विहरमान स्तवन की पक्ति प्रगट होनी चाहिये।

1 (4) मैंने शिलादित्य की सभा मे बौद्धो को परास्त करके सिद्धाचल तीर्थ को बौद्धो के अधिपत्य से मुक्त कराया।

2 (2) मरुदेवी माता मेरे पर बैठ कर मोक्ष गईं।

3 (4) मातुगाचार्य मेरे द्वारा ही बेडियो से मुक्त बने।

4 (2) मेरे द्वारा पिंडस्थ ध्यान करके अरिहत के साथ एकता सिद्ध की जाती है।

5 (5) मैंने समुद्र की 11 बार यात्रा की 12 वी यात्रा मे समुद्र मे गिर गया रत्नद्वीप पहुच गया। बहुत कठिनाई से रायण देवी से मुक्त बना।

6 (4) मुझे सूर्य की किरण से खाना बनाना आता है।

7 (3) मैं भक्ति के द्वारा भगवान बनुगा।

8 (4) धड़ूम लोहे का एक गोला बराबर मेरे पास गिरा। मेरा वैराग्य एकदम प्रज्वलित हुआ ।

प्रश्न 4

ह्रीं इस यत्र के अक्षरो से इतना बताइये एक अक्षर का पुन–पुन प्रयोग हो सकता है।

1 (4) यक्ष के नाम

2 (5) विद्या देवियो के नाम।

3 (2) धर्म सम्बन्धि वाक्य।

4 (5) प्रतापी पुरुषो के नाम।

प्रश्न 5. एक जैनाचार्य का दश अक्षर का नाम ?

1 1 + 2 नाग के पास रहता है।

2 3 + 4 ग्रहण करना।

3 5 + 6 परमात्मा का विशेषण।

4. 9 + 10 आचार्य का पर्यायवाची।

5 7 + 8 नक्षत्र।

6 3 + 1 स्थान का पर्यायवाची।



ज्ञान कला प्रगटाओ 9

प्रश्न 1 क क से प्रत्येक प्रश्न का उत्तर दीजिये ?

1 अरिहत परमात्मा के श्वासोच्छवास कैसे होते है।
2 अनादि काल से ससारी जीव किसके साथ जुडा हुआ है।
3 अष्ट मगल मे से एक मगल का नाम लिखो।
4 तिलक के लिए किस मत्री ने जिनशासन की शान रखी।
5 तीर्थंकर परमात्मा के पाच क्या होते है।
6 भगवान महावीर के उपर उपसर्ग करने वाली व्यतरी कौन थी।
7 सति सुभद्रा के ऊपर सास ने क्या लगाया था।
8 कुती के पुत्र का क्या नाम था।
9 कृष्ण महाराज ने किसका वध किया।
10 शान्तिनाथ भगवान के जीव ने पूर्व भव मे किसकी रक्षा की।
11 नागश्री ब्राह्मणी ने कैसा तुम्बे का आहार मुनि को वहराया।
12 लोम मे से अपना लक्ष्य किसने साधा।
13 अधोलोक की उत्कृष्ट स्थिति किसने बाधी।
14 सुकाली साध्वी ने कौन–सा तप किया था।
15 बास की लकडी के द्वारा कचनपूर का राज्य किसने प्राप्त किया।
16 मेघ कुमार का तीसरा भव क्या था।
17 उद्यान में उद्धार किसने किया था।
18 राजा श्रेणिक की एक दासी का नाम क्या था।
19 श्रावक के त्यागने योग्य पन्द्रह क्या है।
20 अपनी बहन के पुत्रो का वध करने वाला मामा कौन था।
21 नमिराजर्षि ने किसकी आवाज सुनकर सयम के लिए उद्यत बने।

22 भगवान ऋषभदेव के पाच नामो का उल्लेख किस सूत्र मे आता है।
23 सरस्वती देवी का आसन क्या है।
24 सोना लेने जाते हुवे सत कौन बना।
25 परिग्रह सज्ञा मे से किसने किसको मुक्त कराया।
26 ढाई दिन मे अध पतन किसने किया।
27 छ. प्रकार की विगइ मे से एक विगइ का नाम लिखो।
28. अठारह पाप स्थानक मे से एक का नाम बताइये।
29 चरित्र का अजीर्ण किस मुनि को हुआ था।
30 पांच प्रकार के रस मे से एक रस का नाम लिखे।
31 कार्तिक पूर्णिमा के दिन यात्रा कहां की प्रसिद्ध है।
32 ऋषभ देव के 108 पुत्रों मे से एक पुत्र का नाम लिखो।
33 धूल देखकर ध्रुवी कौन बनी।
34. विमलनाथ भगवान की जन्म भूमि कौन सी है।
35 अरमान ही अरमानो मे अरिहत कौन बना
36 108 पार्श्वनाथ भगवान के नामो मे से एक नाम लिखो।
37 कार्योत्सर्ग के 19 दोषो मे से एक दोष लिखे।
38 मल्लीनाथ भगवान ने तीसरे भव मे वीशस्थानक तप की आराधना कैसे की।
39 धुनी मे से मुनि कौन बने।
40 स्वर्ण व मदिरा दोनो का एक नाम लिखो।
41 पुरुषो की 72 कला मे से एक नाम लिखो।
42 "मन चगा तो कठौती मे गगा" इस कहावत के रचयिता कौन थे।
43 कुमदचन्द्र ने किस स्तोत्र की रचना की।
44 सिद्धाचलजी का दूसरा नाम क्या है।
45 प्रथम प्रत्येक बुद्ध कौन से मुनि हुये।
46. साधु साध्वी काल के समय किसका उपयोग करते है।
47 आहार करते–करते केवल ज्ञान किसको हुआ।

48 भक्तामर मे से एक गाथा की प्रथम लाईन लिखे।
49 आचार्य हेमचन्द्र सूरि जी म सा इस युग मे क्या थे।
50 तप के द्वारा किसको जीता जाता है।
51 तीन प्रकार के आहार मे से एक आहार का नाम लिखे।
52 प पू आ कलापूर्ण सूरिजी म सा ने 27 दीक्षा एक साथ कहा करवाई।
53 माया को काबु करके केवली कौन बने।
54 वृषभ को देखकर किसने वैराग्य पाया।
55 भ पार्श्वनाथ को उपसर्ग देने वाला कौन था।
56 तीन महासागरो का एक साथ सगम कहा होता है।
57 वदितु सूत्र की गाथा मे से प्रथम पक्ति लिखिये।
58 शख राजा ने हाथ किसके कटवाये थे।
59 पर्युषण पर्व मे कौन से सूत्र का वाचन होता है।
60 लक्ष्मी देवी का पर्यायवाची शब्द क्या है।
61 सामायिक का मुख्य सूत्र कौन–सा है।
62 मृग की नाभि में क्या निहित है।
63 पालीतणा की पचतीर्थों मे से एक तीर्थ का नाम लिखे।
64 जिनेश्वर देव की उपमाओ मे से एक नाम लिखो।
65 दसो ही भव मे पार्श्वनाथ से द्वेष करने वाला कौन था।
66 सकलार्थ सूत्र मे धर्मनाथ भगवान की स्तुति कौन से गाथा से होती है।
67 श्रावक के 21 गुणो मे से एक गुण लिखे।
68 ग्यारह गणधरो मे से एक का नाम लिखे।
69 12 उपाग सूत्रो से एक का नाम लिखो।
70 चरित्र का देवाला किसने निकाला।
71 पच महाव्रत धारी मुनिराज किसके त्यागी होते है।
72 वमन को देखकर वमन किसने किया।
73 पार्श्वमणि तीर्थ मे मूल नायक भगवान का क्या नाम है।

74 राज्यलोभ व शरीर सुख के लिये आत्मराज्य किसने त्यागा।

75 भद्रेश्वर तीर्थ कहा आया हुआ है।

76 दो भाईयो मे से विराधक कौन बना।

77 पचमी की चतुर्थी को सवत्सरी करने वाले कौन से आचार्य थे।

78 युगलिक को आहार किसके द्वारा प्राप्त हुआ।

79 तीन युग मे से एक युग का नाम लिखिये।

80 कौन–सा राजा अपने राज्य मे साधु साध्वी की गोचरी से कर मागेगा

81 अनतकाय का दूसरा नाम क्या है।

82 बावीस अभक्ष्य मे से एक का नाम लिखो।

83 स्त्रियो की 64 कला मे से एक का नाम लिखे।

84 24 शासन देवियों मे से एक देवी का नाम लिखे।

85 भगवान ऋषभ देव ने किस पात्र मे आहार किया था।

86 रुक्मणि से शादी करने जाते हुए ऋषिदत्ता से शादी किसने की।

87. रूचक पर्वत से आने वाली अष्ट दिक्कुमारियॉ हाथ मे क्या लेकर आती है।

88. युगबाहु को कौन–से वन मे मारा गया।

89 रत्नो मे से एक रत्न का नाम लिखो।

90. चम्पापुरी से भगवान महावीर ने चातुर्मास के बाद विहार किधर किया था।

91. चौथे भव मे भगवान पार्श्वनाथ की माता का क्या नाम था।,

92. ध्रुवसेन राजा को पुत्र का शोक दूर करने के लिए गुरु भगवत ने सर्व प्रथम कौन–सा सूत्र सुनाया।

93 गुप्तेन्द्रिय जीव कौन–सा है।

94 संगम को जाते हुए देखकर भगवान महावीर की आखो मे से आसू क्यों आये।

95 प्रतिक्रमण सूत्र की मांगलिक स्तुति कौन–सी है।

96 कच्चे दूध दही व छाछ के साथ कौन–सी वस्तु लेने से जीवो की उत्पत्ति होती है।

97 ससार बढने का मूल क्या है।
98 पाटन पार्श्वनाथ का मूल नाम क्या है।
99 वीसनगर पार्श्वनाथ भगवान किस नाम से प्रचलित है।
100 अरिहत परमात्मा कैसे निर्लेप होते हैं।
101 अरिहत परमात्मा का शत्रु कौन है।
102 भगवान की आखो मे से निरतर क्या बहती है।
103 सुधर्मा स्वामी ने किसको दीक्षा दी।
104 साधु साध्वी के आचार को क्या कहा जाता है।
105 शत्रुजय गिरिराज पर वर्तमान जिनालय मे ऋषभदेव परमात्मा की प्रतिष्ठा किसने करवाई।
106 अरिहत परमात्मा किसके जैसे गुप्त होते है।
107 नौ कषाय को उत्पन्न करने वाला कौन है।
108 त्रिशला माता को इन्द्राणी से क्या छिनकर पहनने की इच्छा हुई।
109 शकटाल मत्री के पूर्वज का एक नाम दर्शाओ।
110 सुवर्ण का पर्यायवाची शब्द क्या है।
111 जहा भगवान महावीर पधारे थे उस आश्रम का नाम क्या था।
112 ठाणाग सूत्र के अनुसार श्रावक का एक विशेषण बताइये।
113 जहा असि मसि कृषि का व्यापार होता है वह कौन–सा क्षेत्र कहा जाता है।
114 मयणा सुन्दरी किस सिद्धान्त पर अटल रही।
115 वे कौन से देव है जिनमे छोटे बडे का कोई व्यवहार नहीं होता।
116 चरित्र मोहनीय कर्म का एक भेद बताइये।
117 प्रथम आरे के जीवन अपने जीवन का निर्वाह किससे करते है।
118 चन्द्र राजा की सौतेली मा कौन थी।
119 यथा प्रवृति अपूर्व और अनिवृत्ति ये तीनो विशेष रूप से क्या कहलाते हैं।
120 धातकी खण्ड द्वीप के पूर्वार्ध और पश्चिमार्ध विदेहो मे कौन से विजय है।

124 साधु को कैसी भाषा नही बोलनी चाहिये।

125 प्राचीन एक प्रसिद्ध राग का नाम।

126 मुनिसुव्रत स्वामी भगवान का चिन्ह बताइये।

127 उपकेश गच्छ के एक आचार्य का नाम बताइये।

128 तपागच्छ के दो आचार्यो के नाम बताइये।

129 राजस्थान प्रदेश का एक तीर्थ का नाम दर्शाइये।

130 सम्मूर्च्छिम जीवो मे जलचर सम्मूर्च्छिम की भवस्थिति बताइये।

131. बध के पाच कारण मे से एक का नाम लिखे।

132 संयमी जीवन के विपरीत आचरण करने वाले साधु को क्या कहते है।

133 काजल से भी अधिक काला क्या है।

134. पच्च्यक्खाण के 49 भागो मे से 15 वां भाग कौन–सा है।

135 वैमानिक देवो का एक भेद बताइये।

प्रश्न 2. खाली स्थानों को पूरा करें।

1 मुझे जान लो मै सुलटे को उलटा और उलटे को सुलटा कराने वाली महासत्ता हू ... . ।

2 हमारा पत्ता लिख लो जहां असि मसि कृषि व्यवहार है वही हमारा स्थान है . .. ...।

3 पधारिये छह काय के जीवो के साथ तूटे हुए आपके मैत्री के तार को मै जोड दू ....।

4 भाई भाई के प्रेम मैत्रीभाव को भी मै क्षण मे तोड देता हूं .. .. ।

5. मानव समाज की तरह हम व्यवहारो से बंदे हुये नही है ....।

6. विश्व मे बलवान से भी बलवान होते है तुझे धक्का लगाकर तेरा स्थान लेने वाली मै हू . ...।

7 देखो तो सही अषाढीभूति और अरणिक जैसे महामुनि जी भी मेरी एक नजर से मुर्च्छित बन गये..।

8 इस मुनिराज को मै नही तुम्हारा डोया दान देता है ।

9 मेरा आशीर्वाद है तुम्हे ज्यादा से ज्यादा ससार का लाभ हो ।
10 मैं हू युग की आदि से लेकर आज तक की जिनशासन की अविच्छिन्न परपरा को अक्षरश बताने वाला कम्प्यूटर .. ।
11 मै हू तो पामर लेकिन एक तीर्थंकर की पहचान कराने मे निमित्त बनकर प्रख्यात बन गया ।
12 मेरा आश्रय लोगे तो उस साध्वी जी की तरह 80 चौबीसी तक ससार मे भटकना पडेगा ।
13 .. नगरी के सोमचद सेठ की उदारता से सवा–सोमा की टूक का निमार्ण हुआ।
14 कमल का एक अग ।
15 एक प्रसिद्ध सत का नाम .. ।
16 पाच इन्द्रियो मे का आकार के जैसा है।
17 14 पूर्वो मे से एक का नाम .. ।
18 .. .. महात्मा ने चरित्र भग से सातवी नरक का आयुष्य बाधा।
19 .. .. के गुरु ने उत्सूत्र भाषण द्वारा अपना ससार भ्रमण कराया।
20 .. गणधर के नाम से .. तीर्थ प्रसिद्ध हुआ।
21 उष्णता दर्शक शब्द और शीतलता दर्शक शब्द के सयोग से बना हुआ एक तीर्थ पार्श्वनाथ भगवान के भव मे तीर्थंकर नाम कर्म का बध किया।
22 श्रावक को बारह व्रत मे लगने वाला कौन–सा अतिचार है ?
23 तीर्थंकर के कदम पर देव क्या बनाते है .. ... ।
24 उपवास छठ आदि तप मे मुख्य रूप से किस प्रकार के आहार का त्याग किया जाता है ।
25 300 वर्ष पूर्व की महान विभूति तथा उपाध्यायजी महाराज का जन्म स्थान कौन–सा.. .. ।
26 एक ही तीर्थंकर के जन्म स्थान–लाछन एव शासनदेव के

25. 300 वर्ष पूर्व की महान विभूति तथा उपाध्यायजी महाराज का जन्म स्थान कौन–सा ।

26 एक ही तीर्थंकर के जन्म स्थान–लाछन एव शासनदेव के नाम ... व .।

27 भगवान महावीर . . के अवतार है।

28 . . आठ प्रकार के होते है।

29. छोटे बच्चो को . . . .प्रिय होती है।

30 .. ... का माधुर्य सब को मुग्ध बनाता है।

31. . .. . अनर्थो की जड़ है।

32 . . ने पार्श्व नाथ भगवान को .... दिया।

33 लक्ष्मी देवी का आसन . . .. है।

34 . . .की आवाज सुनकर नमि राजीर्ष एकत्व भावना मे लीन हो गये।

35 तीन आरो मे मनुष्यो को . से वस्तु प्राप्त होती थी।

36 . . . . के कारण कुल की मर्यादा का नाश होता है।

37 मनुष्य . . शील प्राणी है।

38 ... . आदि वनस्पति मे अनंत जीव है।

39 हमे अपने .. . का पालन हमेशा करना चाहिये।

40 पार्श्वनाथ भगवान कादम्बरी वन मे थे तब उनसे ..... तीर्थ प्रगट हुआ।

41. .. . लिखने के लिये काम आती है।

42 . मे पार्श्वनाथ भगवान की स्तुती है।

43 पुज्य की . . करके मानव जन्म सफल करो।

44 . चार प्रकार की है।

45 दक्षिण भारत का प्रेक्षणीय स्थल . ...और ....।

46 . . पगतल लक्षण एक हज़ार ने आठ थे ।

47 आरती मे . काम मे आता है।

48 . के बिना सामायिक नही होती है।

49 सवत्सरी के दिन ...... को केवल ज्ञान हुआ।

50 शकुतला नाटक के रचयिता ... थे।

प्रश्न 3 शब्द लोक की सफर ?

1 2			3	6					
5			7		9				8
			12	18		14	16	23	
	11								20
4									
	13								
22			15						
17			19				21		

आडी चाबी

1 द्वार पर बारात आने पर किसकी शादी नही हुई (4)
3 तीर्थंकर परमात्मा किसके स्वामी है (5)
5 मिथिला नरेश का नाम (3)
7 सरोवर की शोभा किससे होती है (3)
9 आदिनाथ भगवान के पूर्वभव का नाम (4)
4 स्वर्ण का पर्याय वाची शब्द (3)
13 ऐसा कौन है वह किसी की प्रतीक्षा नही करता (2)
15 कमठ ने पचाग्नि तप कहा किया था (3)
17 एक प्रसिद्ध देवी का नाम (3)
19 बाहुबली को केवल ज्ञान पाने मे अवरोधक तत्व क्या था (2)
21 मनमदन की पत्नी (2)
22 कल्याणक किसके होते है (4)

खड़ी चाबी 4

2 नैतिकता से व्यापार किसने किया 2

4. विश्व किसका समूह है

6 जूए मे हारकर जगल मे जाते समय अपनी प्राण प्यारी पत्नि को 2

किसने छोडा 3

8 आकाश का पर्यायवाची शब्द 5

10. सुकाली साध्वी ने कौन–सा तप किया 3

12 माद्री का पुत्र 5

14 एक अन्तराय का नाम 5

16. झोली मे मुनि सचित वस्तु क्या लेकर आये 3

18 आत्मीय सम्बन्धो का तोडने का काम किसका है 4

20 शाश्वत मत्र कौन–सा है 2

23 समय का एक भेद

प्रश्न 4. सभी अक्षर मिलाने से एक तीर्थ का नाम बनता है ?

अ 1+2+3 (1) शब्द मिलाने से व्यक्ति का नाम व एक धातु का नाम

4+5 (2) शब्द मिलाने से एक पर्वत का नाम

ब **शब्दों को मिलाइये और लिखिये ?**

1 3+2+1 शब्द मिलाने से एक लब्धि का नाम

2 1+4 शब्द मिलाने एक सूर्य का नाम

3 1+2 शब्द मिलाने से हुनुर का पर्यायवाची

4. 3+4 से अधुरे कार्य को क्या करना।

सभी शब्दो को मिलाने से एक अध्यात्म योगीराज का नाम बनता है।

स **शब्दों को मिलाकर लिखिये ?**

1+6 हाथ का पर्यायवाची

2+6 श्रेणिक राजा का अग्नि सस्कार करते समय हड्डियो मे से क्या ध्वनि निकली थी।

4+5+6 समुद्र का पर्यायवाची
6+2+3 एक राष्ट्र कवि का नाम
4+6 निचोड का पर्यायवाची
1+4+6 एक मिठाई का नाम।
6+5 कम्बल का पर्यायवाची

सर्वाक्षर मिलाने से खरत्तर गच्छ के एक कवि सम्राट योगीराज का नाम बनता है।



पर्व पजुषण करलोरे

10

प्रश्न 1. "सु.सू" से शुरूआत करो ?

1. यह पेपर आप क्या करके लिखोगे ?
2 363 पंखुडियो का वर्णन किसमे आता है ?
3 पार्श्वनाथ भगवान के 108 नाम मे से एक नाम लिखो ?
4. चौदह स्वप्न मे से एक का नाम लिखो ?
5 कार्तिक सुदी 3 के दिन कौन–से तीर्थकर को केवल ज्ञान प्राप्त हुआ ?
6. ग्यारह अग मे से एक का नाम लिखो ?
7. वैशाख सुदी अष्टमी के दिन कौन–से तीर्थकर का जन्म हुआ ?
8. धातकी खड के दूसरे महाविदेह मे से एक का नाम बताओ ?
9. ग्यारह गणधर मे से एक का नाम लिखो ?
10. पुष्करार्ध प्रथम महाविदेह के एक जिन का नाम लिखो ?
11 पांच मेरू मे से एक का नाम लिखो ?
12 इन्द्र का नाम बताओ ?
13 24 तीर्थंकर के यक्षणी का नाम ?
14 कृष्ण की पटरानियो मे से एक का नाम लिखो ?
15 तीर्थकर की माता का नाम लिखो ?
16. विशस्थानक के एक पद का नाम लिखो ?
17 नाम कर्म की प्रकृति का एक भेद बताओ ?
18. बारह उपाग मे से एक का नाम लिखो ?
19 अतीत 24 तीर्थंकर मे से एक तीर्थकर का नाम लिखो ?
20. अनागत 24 तीर्थकर का एक नाम लिखो ?
21 बीस विहरमान मे से एक का नाम लिखो ?
22. कर्म वश किस राजा की पुत्री नटवी बनी ?

23 अरिहंत के 12 गुण मे से एक का नाम लिखो ?
24 भगवान ऋषभ देव को सम्यक्त्व कौन–से नगर मे हुआ ?
25 शत्रुंजय तीर्थ का दूसरा नाम क्या है ?
26 महावीर स्वामी के 10 श्रावको मे से एक का नाम ?
27 परमात्मा की पूजा मे कौन–सी वस्तु काम आती है ?
28 सकलार्थ की एक लाइन लिखो ?
29 अमृत का पर्याय वाची शब्द क्या है ?
30 मृगापुत्र का जन्म कहा हुआ ?
31 चदनबाला ने किससे बाकुले बोहराये ?
32 रायपसेणी सूत्र मे किस देवता का वर्णन आता है ?
33 किसका पुत्र मृगी (हिरणी) के बच्चो के साथ खेलता था ?
34 चारित्र की अनुमति के लिए 60 हजार आयबिल किसने किये ?
35 तारा मडल के 10 योजन ऊचा क्या है ?
36 शालीभद्र की बहन का नाम क्या है ?
37 भगवान महावीर ने किसको धर्मलाभ कहलाया ?
38 पुक्खरवदी का शास्त्रीय नाम लिखो ?
39 वदितु सुत्र की एक लाइन लिखो ?
40 श्रवण की बहन का नाम लिखो ?
41 अनतकाय का नाम लिखो ?
42 भगवान महावीर की बहन का नाम लिखो ?
43 प्रथम व चौवीश मे तीर्थंकर की काया कैसी थी ?
44 ऋषभदेव की पत्नि का नाम क्या था ?
45 मौन एकादशी की आराधना किसने की ?
46 चम्पा द्वार किसने खोला ?
47 एक चक्रवर्ती का नाम लिखो ?
48 बलदेव का नाम लिखो ?
49 इद्रियो के 23 विषय मे से एक नाम ?
50 शुक्लध्यान के 4 प्रकार मे से एक लिखो ?

51. गुणस्थान का नाम लिखो ?
52. तत्वत्रयी का नाम लिखो ?
53 अधो लोक की कुमारिका का नाम लिखो ?
54. देवकी के साथ किसका गर्भ रहा ?
55. ऋषभदेव के पुत्र का नाम लिखो ?
56. सुहस्ति के शिष्य का नाम लिखो ?
57. कृष्ण ने किसकी दरिद्रता दुर की ?
58. पुगीफल का क्या नाम है ?
59 वायुकाय के देवता का क्या नाम है ?
60. विजया सेठानी ने किस पक्ष का नियम लिया ?
61 काल सौकरिक कसाई के पुत्र का नाम लिखो ?
62 शत्रुजय कुड का नाम बताओ ?
63. अष्ट प्रकार की पूजा की एक लाइन लिखो ?
65 भगवान महावीर ने दूसरे चौमासे मे किस ब्राह्मण के घर पारणा किया ?
66. सती अजना के मामा का नाम क्या था ?
67. रावण ने कौनसा शत्रण लक्ष्मण पर चलाया ?
68. पोष दशमी की आराधना किसने की ?
69 सुर्यवंश कौन से राजा से प्रचलित हुआ ?
70 साधु आहार कैंसा लेते हैं ?
71 सात कोडी से राज्य किसने पाया ?
72. मासिक पत्रिका का नाम लिखो ?
73. भगवान महावीर को केवलज्ञान की प्राप्ति किस दिन हुई ?
74. लक्ष्मण की माता का नाम लिखो ?
75 रावण के भाई का नाम क्या था ?
76 सागर चक्रवर्ती के पिता का नाम क्या था ?
77 बलदेव की माता का नाम बताओ ?

78 कौन से तीर्थंकर के बाद साधु धर्म विच्छेद हुआ ?
79 बलवत राजा का वश कौन सा था ?
80 मेघकुमार का तिसरे भव म क्या नाम था ?
81 सुविधि नाथ के पिता का नाम क्या था ?
82 3 कोटाकोटी सागरोपम का कौन–सा आरा है ?
83 अनतनाथ भगवान के माता का नाम ?
84 जिन कल्प विच्छेद होने पर उत्तम सयम किसने पाला ?
85 पद्म प्रभु के गणधर का नाम लिखो ?
86 बाहुबली के पूर्व भव का क्या नाम था ?
87 शीतल नाथ भगवान की प्रमुख साध्वी का नाम ?
88 पार्श्वनाथ भगवान के आठवे भव का क्या नाम था ?
89 नेमिनाथ भगवान के प्रमुख गणधर कौन थे ?
90 पचम आरे के मध्य भाग मे किस मत्री का नाश होगा ?
91 कुथुनाथ भगवान के पिता के नाम लिखो ?
92 गधारी के पुत्र का नाम लिखो ?
93 22वे तीर्थंकर के भाई का नाम लिखो।
94 सम्प्रति राजा को किसने प्रतिबोध दिया ?
95 मनोरमा किसकी पत्नि थी ?
96 तीर्थंकर क जन्म के समय प्रथम नरक म कैसा प्रकाश होता है ?
97 परदेशी राजा को किसने मारा ?
98 प्रथम पिता के दर्शन मात्र से सयम किसने लिया ?
99 चिलाती कुमार कौन–सी कन्या को लेकर भागा ?
100 अजितनाथ के समय प्रारम्भि युद्ध मे पूर्णधन ने किस को मारा ?
101 नक्षत्रा मे ढाई द्वीप के अन्दर 132 क्या है ?
102 पार्श्वनाथ के प्रमुख श्रावक का नाम लिखो ?
103 चारित्र के समय भगवान प्रतिदिन किस वस्तु का दान देते है ?
104 पार्श्वनाथ के प्रमुख श्राविका का नाम लिखो ?
105 चाणक्य से द्वेष कौन करता था ?

106. नूतन पार्श्वमणि तीर्थ के प्रेरणादात्री कौन है ?

107 चेडा महाराज की 7 पुत्रियो मे से एक का नाम लिखो ?

108 भगवान महावीर की श्राविका पचम देवलोक मे कौन सी है।

109 भरत महाराजा के सेनापति का नाम लिखो।

110 सफेद बाल देखकर हिरण्य गर्भ ने दीक्षा ली वह किस राजा का पुत्र था ?

111 .उदेशी श्रावक ने किस तीर्थ का निर्माण कराया।

प्रश्न 2: छः अक्षर का एक शब्द

(1) 1 + 2 जाति का नाम .... (3) 5 + 6 शरीर का एक अंग

(2) 3 + 1 ज्ञान का प्रकार ... .(4) 1 + 2 + 3 + 4 + 5 + 6

(5) सर्व अक्षर मिलकर कल्पसूत्र की माता का नाम

प्रश्न 3. खाली जगह भरो।

(1) यह सूत्र वीर निर्वाण के बाद .... वर्ष मे .... राज का शोक निवारण के लिये चतुर्थि सघ के समाने सुनाया गया।

(2) यह सूत्र अर्थ से ... . दिवस मे और सूत्र से .... दिवस मे सुनने की प्रणालिका है।

(3) यह सूत्र .... बार ध्यान से सुनने वाले .. .. भव मे मुक्ति पा सकते हैं।

(4) जीव दया के पालन द्वारा मुक्ति का मार्ग पाने वाले .. . . थे।

(5) स्वपनो के दर्शन कल्पसूत्र के .... के व्याख्यान मे होते है।

(6) प्रभु वीर की आत्मा .... दिन देवानदा की कुक्षि से त्रिशाला की कुक्षि मे आई।

(7) इस अवसर्पिणी मे अढीद्वीप मे कुल .... आश्चर्य (अच्छेरे) हुए। उसमे प्रभुश्री महावीर देव के शासन मे .... अच्छेरे हुए।

(8) परमात्मा श्री वीर ने दीक्षा के पश्चात् प्रथम पारणा .. . . द्वारा .. .. के घर पर किया।

(9) भगवान श्री ऋषभ देव के शासन के पूर्व शिक्षा की पद्धति .... . थी .. . . थी .... . . थी।

(10) साध्वी के प्रतिबोध से .... साधु सयम मे स्थिर हुए।

(11) सामान्य रूप से अषा० सु० 14 से सवत्सरी दिन आती है।

(12) सवत्सरी के दिन व्याख्यान के समय नींद .. ... आती है।

(13) कल्पसूत्र के मूल श्लोक होते हैं।

(14) भगवान महावीर के 27 भवो मे देव मनुष्य .. .. तिर्यंच नरक ... .. भव है।

(15) एक साल में तीर्थंकर .. .. .. दान देते हैं।

(16) महावीर स्वामी के उपसर्गों मे उत्कृष्ट उपसर्ग ... . था।

(17) वीर प्रभु को सबसे ज्यादा .. ... उपसर्ग किये।

प्रश्न 4 कोष्ठक ( ) में दिये गये विकल्प के नीचे लाइन करें।

(1) देवानदा ने कितनी बार स्वप्न देखे ? (1 बार 2 बार 3 बार)

(2) वीर चरित्र मे सौधर्मेन्द्र के आसन कपन की बात कितनी बार आती है। (4 बार 5 बार 3 बार)

(3) प्रभु पार्श्वनाथ के साधुओ को कितने महाव्रत होते हैं।(3, 4, 5)

(4) मरूदेवी माता को सर्व प्रथम स्वप्न फल किसने कहा। (स्वप्न पाठक इन्द्र नाभिकुलकर)

(5) प्रभु महावीर सवस्त्र कितने समय तक रहे (यावज्जीव 1 वर्ष अधिक 1 मास 360 दिन)

(6) इस सूत्र मे आठ भवो का सबध किसका आता है। (वीर गौतम ऋषभ श्रेयास नेत्र राजुल)

(7) कृष्ण की आयुधशाला मे शख किसने बजाया। (नमि नेमि शाम)

(8) अतिम चौदह पूर्वधर कौन हुये। (भद्र बाहु स्वामी स्थुलभद्र वज्रस्वामी।)

(9) नवअग टिकाकर कौन हुये। (जिनदत्त सूरि अभयदेव सूरि चन्द्रसूरि)

प्रश्न 5. इस कोष्ठक में भगवान महावीर के परिवार के 10 सदस्य खो गये हैं आप इन्हें ढूंढ कर निकाले एक अक्षर का प्रयोग एक ही बार होगा।

र्श्व	शे	नं	प्रि	पा
चे	ना	स	ती	वि
व	र्श	वी	त्रा	य
दे	सु	र	ट	ष
मा	र	व	क	शो
ज	ना	य	द	दि
दि	र्श	द	लि	दा
न	म	सु	ह	र्ध

प्रश्न 6. पर्युषण पर्व पर 20 लाईन लिखें।

(1) त्रैलोक्य विभ्रम चैत्य भरत चक्रवर्ती ने कहाँ पर बनवाया ?

(2) किस तीर्थ पर भावी 20 तीर्थंकर मोक्ष सिधायेगे ?

(3) कृषण ने किस प्रतिमा का न्हवन जल सेना पर छिडकने से उपद्रव शात हुआ ?

(4) रत्ना कुम्भार को भूगर्भ मे प्रतिमा है ऐसा स्वपना किस तीर्थ का आया ?

(5) नारी रूपसी मल्लिनाथ भगवान की प्रतिमा कहाँ है ?

(6) जिन प्रतिमा के न्हवण जल से अभय देव सूरि का कुष्ट दूर हुआ वह प्रतिमा कहाँ विराजमान है ?

(7) श्री राम के पुत्र लव कुश किस स्थान पर मोक्ष गये ?

(8) सासु के मेणा से वीरा बाई ने किस तीर्थ की प्रतिष्ठा कराई ?

(9) विजय सेन सूरि जी के कर कमलो से किस तीर्थ की प्रतिष्ठा कराई ?

(10) मुनिसुव्रत स्वामी ले किस स्थान पर अश्व को प्रतिबोध दिया ?

(11) भूगर्भ से प्राप्त प्रतिमा को जैन श्रावक राणा को कहाँ पर दी ?

(12) वालू की प्रतिमा जलगर्भ म रहने पर लोढे जैसी प्रतीत होने लगी वह मूर्ति कहाँ है ?

(13) राजा कुमार पाल ने राणा अर्णोराज पर विजय प्राप्ति के उपलक्ष्य मे कहाँ पर मदिर बनवाया ?

(14) कपिल केवली के कर कमलो से किस तीर्थ की प्रतिष्ठा हुई वीर निर्वाण के 45 वर्ष पश्चात् ?

(15) प्रभु का मुकुट हार व अगी नव नव लाख की किस तीर्थ मे है ?

(16) भरत चक्रवर्ती कौन से तीर्थ पर मोक्ष सिधारे ?

(17) जैन आगमो को प्रथम वार लिपिवद्ध कहाँ किया गया ?

(18) हासी श्राविका के मजाक से पासिलने कौन-से स्थान पर भव्य मन्दिर बनवाया ?

(19) मंदिर तीर्थ की रक्षा के लिये जयसिह अपनी पत्नी के साथ प्राण त्याग किया वह तीर्थ कौन-सा है ?

(20) क्षेत्र पाल देवता का चमत्कार किस तीर्थ पर है ?

(21) जावडशाह का जन्म किस पवित्र स्थान पर हुआ ?

(22) गत चौवीसी के द्वितीय तीर्थंकर के गणधर किस तीर्थ पर मोक्ष गये ?

(23) 1444 स्थम्भ वाला 72 देवकुलिकाओ सहित भव्य मदिर किस तीर्थ मे है ?

(24) श्रावक प्रतिक्रमण सूत्र ताडपत्र पर किस स्थान पर लिखा गया ?

(25) 16 शिखर 14 मण्डप किस तीर्थ मे है ?

(26) अदृश्य प्रेरणा पाकर किस तीर्थ की प्रतिमा के टुकड़ो को लापसी मे रखा था ?

(27) वासुपूज्य भगवान के 5 कल्याणक किस जगह पर हुए ?

(28) मरूदेवी माता केवल ज्ञान व मोक्ष कहॉ सिद्धाई ?

(29) 6 चक्रवर्ती की जन्मभूमि कहॉ है ?

(30) बाबू लक्ष्मीपति सिह माता की प्रेरणा पाकर उद्यान के बीच कहॉ पर मंदिर बनाया ?

(31) रत्नो की 30 प्रतिमाये एव कसौटी का बना बारसारव कहॉ है ?

(32) अन्तिम केवली जम्बू स्वामी दिव्य धर्म देशना देकर मोक्ष कहॉ गये ?

(33) जौ जितना मंदिर तिल जितनी प्रतिमा कहॉ है ?

(34) वर्तमान चौबीसी के पुष्पदंत भगवान के 4 कल्याणक कहाँ पर हुए ?

(35) शत्रुंजय का सोलहवा उद्धार कराने वाले कर्मचन्द बच्छावत कहाँ के थे ?

(36) मेहतावराय ने विदेशी कसौटी के पाषाण का मंदिर गंगा नदी के किनारे कहाँ बनाया ?

(37) महावीर के समय अन्तकृत केवली यम कहाँ मोक्ष सिधाये ?

(38) ऐसी कौन सी जगह है जहां आक्रमण के द्वारा विध्वंस होने पर भी मंदिर का कुछ नहीं हुआ । अधिष्ठायक देव ध्वजा पर बैठे हुए नजर आते हैं ?

(39) मेवाड़ के राणा फतेह सिंह ने स्वर्णमयी रत्न जडित अमूल्य आंगी कहाँ पर भेंट की ?

(40) अकबर बादशाह ने सभा मण्डप के ऊपरी भाग मे मस्जिद की आकृति कहाँ बनवाई ?

(41) सतिकर स्तोत्र की रचना कहाँ हुई थी ?

(42) राजा राय पाल का कर मे मिलने वाले हिस्से का 20वाँ भाग किस तीर्थ की पूजा के लिये भेंट किया ?

(43) चन्द्र प्रभु के 5 कल्याणक किस जगह पर हुए ?

(44) श्री बप्प भट्टाचार्य आकाशगामिनी विद्या से प्रतिदिन किस तीर्थ की यात्रा करते थे ?

(45) उदेशी श्रावक ने किस तीर्थ का निर्माण कराया ?

(46) जिसमें केसरिया रंग का काजल आता है ऐसा साथ सुमतिनाथ भगवान का मंदिर कहाँ है ?

(47) वीर प्रभु ने चन्द कौशिक को प्रतिबोध कहाँ दिया ?

(48) विमलशाह ने 18 करोड़ 53 लाख रुपये खर्च करके किस तीर्थ का निर्माण कराया ?

(49) तलाब के बीचो बीच निर्मित दो मजिलो का मंदिर कहाँ है ?

(50) भरतचक्रवर्ती किस गिरि पर अनशन कर मोक्ष गये ?

(51) सोमयशा कुमार ने भरत को कहा, यहाँ भावी तीर्थकर चन्द्रप्रभु का समवसरण रचा जायेगा ?

(52) सेठ जगडू शाह का किस तीर्थ पर जन्म हुआ ?

(53) मक्षी तीर्थ की प्रतिष्ठा के साथ किस तीर्थ की प्रतिष्ठा हुई ?

(54) प्रथम तीर्थंकर श्री ऋषभदेव की बालुरेतसे बनी प्रतिमा कहाँ पर है ?

(55) रामेश्वर जी को आँखो की रोशनी किस तीर्थ के भगवान के न्हवण जल से प्राप्त है ?

(56) प्रभु पर छत्र धारक धरणेन्द्र ने अपने फणों से दुग्ध धारा कहाँ बहाई ?

(57) दक्षिण महाराष्ट्र का शत्रुंजय कहाँ है ?

(58) आन्ध्र प्रदेश मे कृष्णा नदी के किनारे कौन-सा तीर्थ है ?

(59) 1100 वर्ष प्राचीन खडी पार्श्वनाथ की प्रतिमा कहाँ है ?

(60) ऐसा कौन-सा तीर्थ है जहाँ ग्रामीण लोग भगवान को धर्मराज के नाम से पुकारते हैं ?

(61) परिकर सहित धातुमय प्रतिमा को सुवर्ण की समझकर मुस्लमानो ने कहाँ पर क्षति पहुँचाई ?

(62) वीर प्रभु के कानो मे कील लगाने का उपसर्ग कहाँ हुआ ?

(63) ऐसा कौन-सी जगह है जहाँ महावीर स्वामी के दर्शन करने वज्र स्वामी पधारे ?

(64) किस तीर्थ को प्रतिष्ठा के समय अवश्य याद किया जाता है ?

(65) गौतम स्वामी ने जगचिन्तामणि, जयउसामिय, स्तोत्र की रचना कहाँ पर की ?

(66) केशरिया नाथ की प्रतिमा वटवृक्ष के नीचे भूगर्भ मे कहाँ पर प्रकट हुई ?

(67) कुमार देवी ने धर्मचक्र विहार कहाँ बनवाया ?

(68) मृगावती के द्वारा 32 दरवाजे का किला कहाँ ध्वस हुआ जो अभी खण्डर पडा है ?

(69) सीताजी ने अपने शील के प्रभाव से पानी म डूबते हुए कौन से तीर्थ की रक्षा की ?

(70) मुद्राओ की थैली पर वासपेक्ष डालकर कहा जहाँ तक मदिर बने वहाँ तक थैली उल्टी नहीं करना वह तीर्थ कौन-सा है ?

(71) दादाबाडी में कुण्ड जहाँ अकाल के समय भी सदैव जल भरा रहता है वह तीर्थ का क्या नाम है ?

(72) जिनदत्त सूरि के 800 वर्ष प्राचीन चादर चालपट्टा मुहपत्ति और पन्ने की मूर्ति कहाँ है ?

(73) खरतरगच्छ के आचार्य कीर्तिरत्न सूरि ने अधिष्ठायक देव को समकिती बनाकर किस तीर्थ रक्षा का वचन लिया ?

(74) अधिष्ठायक देव ने बताया जहाँ दूध झरता है उस पेड के नीचे प्रतिमा है। वह मूर्ति किस तीर्थ पर विराजमान है ?

(75) अभय देव सूरि के कुष्ट रोग निवार्णार्थ शासन देवी के निर्देशानुसार जयतिहुअण स्तोत्र द्वारा भगवान पार्श्वनाथ की प्रतिमा किस स्थान पर प्रकट हुई ?

(76) भोयरे मे अमीझरा पार्श्वनाथ की प्रतिमा किस तीर्थ पर है ?

(77) कौन से तीर्थ पर जिन मदिरो के शिखरों की कला प्रसिद्ध है ?

(78) 5वे देवलोक के इन्द्र ने किस तीर्थ की प्रतिमा भराई ?

(79) कौन से तीर्थ के जिन प्रतिमा के न्हवन जल से अजय पाल के 107 रोग नष्ट हुए ?

(80) अषाढी श्रावक की भराई हुई मूर्ति किस तीर्थ मे विराजमान है ?

(81) अषाढी श्रावक ने किस तीर्थ की प्रतिमा भराई ?

(82) पासिल ने कौन से तीर्थ मे मदिर बनाया ?

(83) भारत मे ऐसा कौन-सा तीर्थ है जहाँ अमिझरा शखेश्वर चिन्तामणि मूल नायक है ?

(84) श्रीपाल जीवनी के 137 रग विरंगे चित्र आकर्षक पट कहाँ है ?

(85) सनत् कुमार मघवा चक्रवर्ती कहाँ मोक्ष गये ?

(86) रूक्मणि को अपहरण करने पर श्री कृष्ण ने युद्ध कहाँ पर किया ?

(87) ऐसा कौन सा तीर्थ है जहाँ शिला को बजाने पर धातु जैसी ध्वनी होती है ?

(88) मोतीशा की जहाजो भारी तूफानो मे फस जाने से मदिर बनाने का नियम लिया वह मदिर कहाँ पर बनाया ?

(89) खर दुषण के सेवक ने वालु गोबर की प्रतिमा बनाई वह किस तीर्थ कहाँ पर है ?

(90) माणिक्य स्वामी की मूर्ति किस तीर्थ मे है यह मूर्ति किसको भेंट मे मिली ?

(91) राजकुमार पार्श्व ने नाग नागिन का उद्धार किस स्थान पर किया ?

(92) धातु की 18 प्रतिमा का वजन 1444 मण है वह मूर्तिया किस तीर्थ मे है ?

(93) ऐसा कौन सा तीर्थ है वहाँ मूर्ति के सामने तीन श्लोक रखने पर अधिष्टायक ने 7 गुटिकाये दी ?

(94) महावीर स्वामी ने छद्मस्थ अवस्था मे काउस्सग ध्यान किस स्थान पर किया ?

(95) ऐसे कौन से तीर्थ है जहाँ पर महावीर स्वामी के जीवित बिम्ब भरे हुए है ?

(96) सिह के लाछन पर हाथी का मुख है। वह कौन-सा तीर्थ है ?

(97) गोडवाल पचतीर्थी का कौन सा तीर्थ है। उसका नाम सकल तीर्थ मे आता है ?

(98) ऐसे दो कौन से तीर्थ है जहाँ बीच भोयरे मे लघु शान्ति स्त्रोत की रचना की थी ?

(99) आन्ध्रा के बोडर पर नवीन तीर्थ कौन सा बन रहा है ?

(100) तीर्थ रक्षा के लिये 60 हजार नवयुवको ने प्राण गुमाये वह तीर्थ कौन सा है ?

(101) पॉच पाण्डव किस तीर्थ पर मुक्ति निलय मे गये ?

(102) भरत की भराई हुई चौबिस तीर्थंकरो की मूर्तियाँ किस तीर्थ पर है ?

(103) आठ मे द्वीप पर कौन सा तीर्थ है ?

(104) राजस्थान मे जहाज मदिर कहाँ पर बन रहा है ?

(105) शाश्वत तीर्थ कौन सा है जहाँ पर 6448 प्रभु प्रतिमाओ से देवालय सुशोभित हो रहे है ?

(106) 20 तीर्थंकरो का (मुक्ति) निर्वाण कहाँ पर हुआ ?

(107) रावण किस द्वीप मे तीर्थंकर बनेगा ?

(108) भारत के तीन जैन तीर्थ हिन्दु समाज के पास है वह कौन से तीर्थ है

(109) पचमकाल मे कौन से 2 तीर्थ पर मानव नहीं जा सकता ?

(110) इस पचम काल मे अरिहत परमात्मा कहाँ पर विचर रहे है ?

(111) जिनेश्वर सूरि जी ने शास्त्रार्थ कर विजय प्राप्ति कहाँ की ?

प्रश्न 2 शब्द सृष्ट

निम्न पहेली मे 20 विहरमान के नाम मे से 12 नाम छिपे हुए हैं वे सीधे उल्टे टेढे तिरछे हो सकते हैं आप ढुढ के निकाले उदाहरण विशाल

दे	च	न्द्र	न	र	से	न	का	वि	त	ल	हु	वा	सु
व	अ	न	ध	अ	र	जी	र्य	र	न	त	ना	थ	र
से	र्य	ज्ञ	म	हा	ल	वी	र्य	न	ऋ	वि	शा	ल	जी
न	व	पा	हु	ठ	त	जा	भा	अ	व	न	न	न्द्रा	च
अ	ट	वा	ग	न	प्र	व	तो	जि	भ	शा	ल	ल	वा
न	च	हा	अ	न्द्रा	ऋ	कु	घो	त	प्र	डा	खु	प्री	सु
त	ष	त्र	म	हा	से	न	दा	वी	र	पी	सा	रि	जा
वी	शा	न	म	वी	श्व	दा	त	र्य	सु	पू	रो	व	त

प्रश्न 3. नीचे लिखे हुए वाक्यों के आधार पर खाली जगह भरो जबाबी शब्द के अक्षर कोष्ठक में दी गई संख्या के अनुसार होने चाहिये जवाबी शब्दों के प्रथम तीसरे अक्षरों से वीर विजय कृत पूजा की प्रसिद्ध पंक्ति प्रकट होनी चाहिये।

(1) .... (3) कल्याण मंदिर स्तोत्र की रचना के समय शिवलिग से प्रकट हुई प्रतिमा कहाँ पर है ?

(2) .... (4) चार मंजिल का 95 फुट ऊँचा शिखर बन्द मंदिर कहाँ है।

(3) .. .. (3) मेरा क्या परिचय दू मैं 1444 स्थभो से युक्त बावन जिनालय का भव्य तीर्थ हूँ।

(4) ... ... (3) किस तीर्थ पर यक्ष के मस्तिष्क पर जिन मूर्ति है।

(5) . . .. (2) भारत वर्ष मे मै इतना प्रसिद्ध हूँ। मेरी जैसी कोरणी कही पर भी नजर नहीं आती है।

(6) (3) वीर निर्वाण की 18वीं शताब्दी के समय मे लोढण पार्श्वनाथ के नाम से प्रसिद्ध था।

(7) (3) मेरे पहाड पर विना स्थम 32 गुफाये निर्मित है।

(8) (3) मै राजस्थान मे इतना प्रसिद्ध हूँ मेरे द्वार पर हजारो व्यक्ति आकर मनोकामना पूर्ण करते हैं।

(9) (3) आप नहीं जानते मेरे यहाँ पर 16 शिखर 14 मण्डप वाला मदिर है।

(10) (8) मै वहीं हूँ जहाँ पर देवता ने धूल की वृष्टि की।

(11) (5) मैं मी देवताओ के विमान से टक्कर ले सकता हूँ।

(12) (4) किस मूर्ति के प्रमाव से एलचीपुर के राजा का कष्ट रोग नष्ट हुआ।

(13) चलिये (3) तीर्थ दर्शन कर जीवन सफल बनाईये।

प्रश्न 4 एक सरोवर 5½ अक्षर का नाम बताओ।

(1) 1 + 2 देव का पर्याय 1 + 2 + 3 + नक्षत्र 2 + 3 धूल का पयार्य 1 + 5 हाथी का एक अग

प्रश्न 5. आपने अनेको तीर्थों की यात्रा की उसमे क्या प्राप्त किया 10-12 लाईन में लिखे।

❖ ❖ ❖

गिरिवर दर्शन विरला पावे

12

प्रश्न 1.

(1) पुडरिक गणधर ने शत्रुजय महात्म्य पर .... श्लोको की रचना की।

(2) वर्तमान अवसर्पिणी मे सिद्धगिरि की प्रथम महिमा .... दिखाने वाले थे।

(3) भगवान महावीर स्वामी ....इन्द्रों के साथ गिरिराज पर पधारे।

(4) इस पवित्र तीर्थ पर इस युग मे सर्व प्रथम प्रभु का मदिर निर्माण कराने वाले .... थे।

(5) कडुराजा . . .. की प्रेरणा से शत्रुंजय ऊपर गये।

(6) वर्तमान चौबीसी के . ... तीर्थकरों के समवसरण इस भूमि पर हुये थे।

(7) सौधर्मेन्द्र महावीर प्रभु से .... प्रश्न पूछे।

(8) चन्द्रचुड विद्याधर अपनी प्रिया के साथ शत्रुजय यात्रा करने . ... दिन आये।

(9) तीर्थाधिराज का सर्व प्रथम 6 'री' पालक संघ निकाल ने वाले ... . थे।

(10) . . .. कुड है, बिन्दूमात्र जल से 18 प्रकार का कुष्ट रोग नष्ट होता है।

(11) भरत महाराज का सैन्य .. .. के प्रभाव से निरोगी बना।

(12) शक्ति सिह राजा ने शत्रुजय की महिमा का वर्णन ... . सामने किया।

(13) इस तीर्थ के अधिष्ठायक देव .... यक्ष है।

(14) शान्तन राजा एव चार पुत्रो को दुख मे से छूटने के लिए
धरणेन्द्रने .. उपाय बताया।

(15) दृष्टि विष सर्प सिद्धगिरि पर अनशन करने से
बना।

(16) अभी रायण वृक्ष के नीचे जो पादुका है उसकी प्रतिष्ठा
.. ने कराई है।

(17) एक हजार आठ सयमी मुनि का भरत ने अग्नि सरकार
... पर किया।

(18) गिरिराज की वर्तमान तलेटी का नाम - है।

(19) भरत चक्रवर्ती के शत्रुजय पर बनाये हुये प्रसाद का नाम
... था।

(20) श्रीमधर स्वामी भरतक्षेत्र के प्राणियो को ..
कारण से धन्य कहा।

(21) शत्रुजय की महिमा का वर्णन करने वाला शत्रुजय माहात्म्य
ग्रन्थ ने बनाया है।

(22) प्राचीन काल मे इस गिरिराज की प्रथम तलेटी
मे थी ऐसा शास्त्र मे वर्णन है।

(23) शत्रुजय ऊपर थावच्चा पुत्र .. मुनियो के
सिद्ध पद को प्राप्त हुये।

(24) शान्तिनाथ तथा अजितनाथ भगवान ने शत्रुजय पर
किया।

(25) अभी दादा की टूक मे रहे हुये युगादि देव के मुख्य जिनालय
का नाम .. है।

(27) त्रिविक्रम मुनि तथा महाबाहु का 7 भवो का वैरभाव
के प्रभाव से नष्ट हुआ है।

(28) सिद्धगिरि के ध्यान मे मृत्यु को पाने वाले सेठ
मणिभद्र बने।

(29) इस पवित्र भूमि पर एक मुनि को दान देने से 10 क्रोड .... को जिमाने से भी अधिक लाभ मिलता है।

(30) शत्रुंजय नदी का प्रभाव ... . . ने बताया।

(31) शत्रुंजय तीर्थपर ऋषभदेव आदि भगवतो की प्रतिष्ठा .. .. कराई।

(32) इस गिरिराज की पवित्रता से ऋषभदेव स्वदीक्षा काल मे .... . वार इस तीर्थ पर पधारे थे।

(33) वस्तुपाल तेजपाल चतुर्विध सघ के साथ इस तीर्थ पर .... वार यात्रार्थ पधारे थे।

(34) सुधर्मास्वामी के शिष्य ने अपनी लब्धि के प्रभाव से सघ की प्यास दूर करने के लिये बनाये हुए जलाशय का . . नाम है।

(35) चैत्रि पूर्णिमा के दिन शत्रुंजय पर .. . . तथा . . .. . मुनियो के साथ मोक्ष गये।

(36) शत्रुजय तीर्थ के समीप भरत ने .. .. बसाया।

(37) भावजी मदिर के निर्माता सेठ .. .. थे।

(38) भरत को जिनपूजा का एव सात क्षेत्र का महात्यम्य .... ने बताया।

(39) चैत्री पूर्णिमा के दिन कही पर ही सघ पूजा करे तो .... की प्राप्ति होती है।

(40) कहा जाता है कि हिगलाज की मूर्ति मूलत. .... देवी है।

(41) चन्द्र प्रभु प्रसाद नगर . .. . .. ने बसाया।

(42) चैत्री पूर्णिमा के दिन अष्टाहिन का महोत्सव पूर्ण करते है तो सिद्धया प्राप्त होती है।

(43) ऋषभ देव के परिवार मे . . . . . व्यक्ति मोक्ष गये।

(44) राम भरत ... मुनियो के साथ सिद्धगति मे गये।

(45) शत्रुजय के उद्धार ऋषभ देव के शासन मे हुये।

(46) द्राविड वारिखिल्ल ने शत्रुजय पर मुनियो के साथ मोक्ष गये।

(47) चक्रवर्ती भरत के युद्ध म टक्कर लेने वाले नमि विनमि ने गिरिराज पर क्रोड मुनि के साथ मोक्ष म पधारे।

(48) गिरिराज की यात्रा मे कुल .. .. चैत्यवन्दन करने चाहिये।

(49) शिष्य की प्रेरणा से एक अत्यन्त प्रमादी आचार्य इस तीर्थ पर अनशन करके शिष्यो के साथ मोक्ष पधारे।

(50) पूर्व भव के अपने ही पुत्र पति को मारने वाली वाघिन इस तीर्थ पर .. गति म गई।

(51) गिरिराज का यात्रा मार्ग .. मील है।

(52) भाभी से प्रेरित होकर शेर के उपद्रव से गिरिराज को मुक्त कराने वाले .. का स्मृति चिन्ह तीर्थ पर आज भी विद्यमान है।

(53) सौधर्मेन्द्र की प्रेरणा स ने शत्रुजय का उद्धार किया।

(54) .. .. देवी ने आदिनाथ भगवान की चरणा की शपथ ली।

(55) मयूर सिद्धगिरि पर अनसन करके .. देवलोक मे गये।

(56) श्री आदीश्वर का विद्यमान मुख्य मंदिर .. का बनाया हुआ है।

(57) वर्तमान आदिनाथ भगवान की मूर्ति का पाषाण मम्माणी खाण से .... ने अत्यन्त प्रयास से पाया था।

(58) वर्तमान गिरिराज पर मूलनायक भगवान की प्रतिष्ठा वि०स० .
में हुई है।

(59) गिरिराज मूलनायक आदिनाथ भगवान की प्रतिष्ठा में मुख्य
आचार्य . . सूरिजी थे।

(60) रायण पादुका की प्रतिष्ठा वि०सं . में हुई है
कराने वाले आचार्य श्री . .. . थे।

(61) नूतन (नवा) आदिनाथ भगवान की मूर्ति भराने वाले सेठ
... . . . थे।

(62) इस तीर्थाधिराज पर गणधर श्री ऋषभसेन ... .
क्रोड मुनियो के साथ मोक्ष पधारे।

(63) दहेज के बजाय मदिर का निर्माण कराने वाली व्यक्ति का नाम
आज भी .. . . . टूंक के नाम से अमर है।

(64) मोदी की टूक का दूसरा नाम . . . . है।

(65) . .. . की टूक मे ऐसी तीन पुतलिया है जिन्हे साप
बिच्छु और बदर काट रहे है।

(66) लाखो रुपये खर्चकर गिरिराज पर गगन चूम्बी नूतन मदिर का
निर्माण कराने वाले सेठ . . .. का प्रतिष्ठा के
पहले ही मृत्यु हो गई।

(67) गिरिराज का शत्रुजय नाम .. .. राजा के कारण
पडा है।

(68) सूरज कुण्ड के प्रभाव से मुर्गा पुनः .... राजा
बना।

(69) देव बना हुआ मयूर ने अपनी मूर्ति बनाकर . . .. के
नीचे रखी।

(70) शत्रुजय की रत्नमणिमय मूर्ति बनाकर .. .. नीचे
रखी।

(71) सागर चक्रवर्ती ने .. .. मूर्तिभरवाकर प्रतिष्ठा कराई।

(72) इस तीर्थ पर अनत आत्माओ का पाप कर्म धोकर साफ किया इसलिये इसका नाम पडा ....

(73) चन्द्र सूर्य गिरिराज के दर्शन कर अपने आप को धन्य मानते हैं इसलिये इसका नाम पडा ....

(74) महापापो को हरने वाली शत्रुजय नदी मे देव विलास करते इसलिये इसका नाम पडा ....

(75) गत चौवीसी के गणधर के कारण का नाम पडा ....

(76) .... के नाम से पालीतणा नगर बसा है।

(77) आदिनाथ प्रभु इस गिरिराज पर फागुनसुदी .... के दिन आये थे।

(78) आदिनाथ भगवान का जन्म दिन व वर्षीतप प्रारम्भ दिन .... है।

(79) इस गिरिराज का पचम काल मे पहला उद्धार कराने वाले ... . है।

(80) चन्द्रयश राजा ने केवल ज्ञान तथा मुक्ति ....पर पाई।

(81) चक्रधर राजा .... को वानरी से पुन नारी बनाई और .... के साक्षी से विवाह किया।

(82) शत्रुजय पर श्रीराम .... हजार वर्ष का आयुष्य पूर्ण करके मोक्ष मे गये।

(83) शत्रुजय गिरि श्वाश्वत है ....एव ....ने कहा।

(84) महाभारत क प्रसिद्ध पाडव एव उसकी माता कुति शत्रुजय गिरिपर ....मुनियो के साथ मोक्ष गये।

(85) शत्रुजय ऊपर ....लाख नारद मुक्ति रमणी को वरे।

(86) श्याम प्रद्युम्न .... कम शत्रुजय पर खपाये।

(86) शत्रुंजय के ऊपर .... .के दिन उपवास करने से नारकी के 10 सागरोपम के कर्म नष्ट होते है।

(88) शत्रुंजय के ऊपर शुभभाव से जावड और उनकी पत्नी मृत्यु प्राप्त कर .... देवलोक मे गये।

(89) पचम काल के अन्तिम शत्रुजय का उद्धार .... करायेंगे।

(90) .... के छः पुत्र यहाँ पर मोक्ष मे गये है।

(91) .... के कारण फागुण सुदी 13 के दिन 6 गाऊ की सामूहिक यात्रा करते है।

(92) आदिनाथ भगवान .... के दिन मोक्ष सिधाये।

(93) तीर्थाधिराज श्री आदिनाथ भगवान की वर्तमान प्रतिष्ठा . ... के दिन हुई थी।

(94) चौबीस तीर्थंकर मे से .... तीर्थंकरो ने यहाँ चातुर्मास किया था।

(95) इस तीर्थ का ग्यारहवां उद्धार .... ने कराया था।

(96) शत्रुजय तीर्थ के प्रथम उद्धार मे प्रतिष्ठा अजन शलाका विधि भरत महाराज ने . ... गणधर से करवाई थी।

(97) शत्रुजय तीर्थ की रचना बताकर देवो को भी भ्रम में डालने वाली मिथ्या दृष्टि देवी .. .. थी। इन्द्रो ने इस तीर्थ के 16 उद्धारो मे से .. . . .उद्धार कराये थे।

(98) 16 उद्धार मे से . ... उद्धार चक्रवर्तियो ने किये थे।

(99) इस तीर्थ की रक्षा के लिये लवण समुद्र को भरत क्षेत्र मे लाने वाले .. .. थे।

(100) भरत चक्री के बनाई हुई श्री आदिनाथ आदि की रत्नमयी मूर्तियॉ .. . . ने गुफा में छिपा डाली।

(101) शत्रुजय के 16 उद्धारो मे से .... उद्धार तीर्थंकरो के पुत्रो ने करवाये।

(102) सम्पूर्ण गिरिराज पर अद्भुत आदिनाथ की प्रतिमाजी .... ऊँची है।

(103) सुधर्मा स्वामी ने मनुष्य की अल्प आयु समझ कर संक्षेप में .. .. शलाका की रचना की।

(104) शान्ति नाथ भगवान के चातुर्मास मे .... मुनिओ मोक्ष गये।

(105) शत्रुन्जय चौमुख जी की पेरियो नकशीदार .... है।

(106) शत्रुंजय ऊपर सबसे ऊँचा गिरि श्रृग पर 1977 फुट ऊँचाई पर * टूक है।

(107) तलेटी से लेकर शिखर तक रास्ता .... का है और .... पगथिया है।

(108) विद्यामण्डणसूरि ने जब अंजनशलाका कराई तब मूलनायक आदिश्वर की दिव्य मूर्ति ने .... श्वासोच्छ्वास लिया था।

प्रश्न 2. निम्न प्रश्नों के जवाब दें।

(1) सब देवो मे उत्कृष्ट देव कौन है।

(2) सर्व मन्त्रो मे श्रेष्ठ मंत्र क्या है।

(3) सर्व यन्त्रो मे विशिष्ट यंत्र कौन सा है।

(4) ध्यान मे सब से उत्तम ध्यान कौन सा है।

(5) तीर्थ मे सब से उत्तम श्रेष्ठ तीर्थ कौन सा है।

(6) सब पर्वो मे सर्व श्रेष्ठ पर्व कौन सा है।

(7) दान मे सब से उत्तम दान कौन सा है।

(8) वृक्षो में उत्तम वृक्ष कौन सा है।

(9) पर्वतो मे श्रेष्ठ पर्वत कौन सा है।

(10) व्रतो मे सब से श्रेष्ठ व्रत क्या है।

(11) सूत्रो मे सब से श्रेष्ठ सूत्र कौन सा है।

(12) सागरो मे सब से श्रेष्ठ सागर कौन सा है।

(13) पाच ज्ञान मे से श्रेष्ठ ज्ञान कौन सा है।

(14) नक्षत्रो मे सब से श्रेष्ठ नक्षत्र कौन सा है।

(15) मणियो मे श्रेष्ठ मणि कौन सी है।

प्रश्न 3. नीचे के वाक्यों में से सही हो उसके आगे ✓ का चिन्ह एवं गलत के × चिन्ह लगावें।

(1) मूलनायक आदिनाथ भगवान की पक्षाल तीन बार होती है ?

(2) शत्रुंजय ऊपर मरूदेवी माता, ब्राह्मी व सुन्दरी के सामने भरतने स्तुती की थी ?

(3) द्रौपदी शत्रुंजय पर मोक्ष गई ।

(4) सूर्ययश राजा को अरिसा भवन में केवल ज्ञान हुआ ।

(5) जीवराजी ने प्रभु से कहा, हे भगवान ! तेरे प्रभाव से कपास के भाव दुगने हो जाये तो तू सच्चा भगवान।

(6) भरत वंश के सब राजाओ संघपति बने सब राजा जिन प्रसादो का निर्माण कराया ?

(7) शत्रुजय गिरि पर दही नास्ता करने से सद्गति या पुण्य का बन्ध होता है ?

(8) अद्‌भुत दादा आदिनाथ प्रतिमा की प्रतिदिन पक्षाल चन्दन पूजा होती है ।

(9) सवाक्रोड सौनैया की बोली बोलकर जगडुसा अपनी माता को तीर्थमाला पहनाई।

(10) शत्रुजय गिरि पर मुनि को दान देने से 25 क्रोड श्रावको को जिमाने का फल मिलता है।

(11) अयोध्या की राजगदी पर बैठने वाले इक्ष्वाकुल के राजा मुक्ति गये ?

(12) शत्रुजय रास की रचना नागौर मे हुई।

(13) व्यन्तर इन्द्र ने शत्रुन्जय का 16वा उद्धार करवाया।

(14) पाली तणा तीर्थ छठे आरे मे रहेगा।

प्रश्न 4 नीचे लिखे हुये वाक्यो के आधार पर खाली जगह भरो। जवाबी शब्दों के अक्षर कोष्ठक मे दी गई सख्या के अनुसार होने चाहिये। शब्दो के प्रथम अक्षरो से वीर विजय कृत पूजा की प्रसिद्ध पक्ति प्रकट होनी चाहिये। सयुक्त अक्षर एक ही गिना जायेगा।

(1) (4) तुम मेरी यात्रा के लिये नहीं आये। मै 20 तीर्थंकर का निर्वाण धाम बनूगा मैं बहुत बडा तीर्थ हूँ।

(2) (2) तुम मेरा नाश करना चाहते हो। परन्तु इसके अलावा अपने चित्त को प्रेम मे रूपान्तर करना अच्छा है।

(3) (2) माता के अनेक प्रलोभन देने से भी मै सयम भावना से विचलित नहीं बना।

(4) (4) सस्कृत प्रसिद्ध नाटक का नाम लिखो।

(5) (5) इन्द्र मुझे पराजय करने को आया परन्तु मैने ही उनको चरणो मे झुकाया।

(6) (5) स्नेह का प्रतीक भारतीय त्यौहार कौन सा है।

(7) (3) मै चन्द्रहास खडग प्राप्त करने गया परन्तु वह खड्ग मुझे प्राप्त नहीं हुई उसी खडग ने मेरे प्राण हरे।

(8) (4) इन्द्र ने कौन से स्तोत्र से परमात्मा की स्तुती की।

(9) (3) मै वही नगरी हूँ जो इन्द्र ने मेरा नाम रखा।

(10) (5) हे साधु मेरे बिना तेरी कोई कीमत नहीं है।

(11) (5) मै उदय मे आया तब ऋषभ देव को एक साल तक आहार नहीं मिला।

(12) . . * 6 क्या मुझे नही पहचानते मुझे 10 वर्ष मे आचार्य पदवी प्राप्त हुई।

(13) . 5 मै उदय मे आया तब श्रीपाल को कुष्ठ रोग से ग्रसित बनना पडा।

प्रश्न 5. नीचे दिये हुए कोष्टक में से शत्रुंजय के 108 नामों में 21 नाम ढूंढ़ कर लिखो एक अक्षर का प्रयोग बारम्बार कर सकते हैं लेकिन नाम लिखी संख्या के अक्षरों में होना जरूरी है।

र	ना	या	म	द
रि	स	च	ज	क
प्री	शि	क्षि	वि	हे
हा	ण्ण	न	द्र	र्च
कै	श्रु	ढ	भ	उ
ला	पी	च्य	दी	क्ष
सु	म	व	द्र	गि
भ	ति	ड	व	ठ

नाम	स०	नाम	स०	नाम	स०
(1)	(4)	(8)	(4)	1(5)	(4)
(2)	(4)	(9)	(5)	(16)	(5)
(3)	(4)	(10)	(5)	(17)	(4)
(4)	(4)	(11)	(5)	(18)	(5)
(5)	(4)	(12)	(4)	(19)	(5)
(6)	(4)	(13)	(4)	(20)	(5)
(7)	(4)	(14)	(4)	(21)	(5)



अरिहन्ते शरणं पवज्जामि

13

प्रश्न I

(1) मेरे भगवान का नाम ______ है।

(2) अरिहन्त ______ प्रकार के होते हैं।

(3) अरिहन्त को जानने के लिए प्रतिदिन ______ में जाना चाहिए।

(4) अरिहन्त की जननी ______ है।

(5) वर्तमान समय में अरिहन्त भगवान ______ में विचरते हैं।

(6) अरिहन्त भगवान का आयुष्य पूर्ति के पश्चात् ______ मिलता है।

(7) अरिहन्त भगवान का गुणस्थानक ______ है।

(8) अरिहन्त की आत्मा को पूर्व के ______ भव में तीर्थंकर नामकर्म की प्राप्ति होती है।

(9) दीक्षा के समय अरिहंत भगवान को इन्द्र ______ देते हैं।

(10) अरिहंत परमात्मा ______ निक्षेप द्वारा जगत का उद्धार करते हैं।

(11) अरिहंत के ______ प्रातिहार्य होते हैं।

(12) अरिहंत भगवान देशना देते समय ______ वदन करके बैठते हैं।

(13) अरिहंत परमात्मा को ______ जन्मजात होता है।

(14) अरिहंत के ______ कर्म नष्ट हुए होते हैं।

(15) ______ जीवों का उद्धार अरिहंत नहीं कर सकते हैं।

(16) अरिहंत भगवान के समवसरण में देव गण ______ फूलों की वृष्टि करते हैं।

(17) अरिहंत भगवान के ______ अतिशय हैं।

(18) अरिहंत भगवान के गुणों में ______ अतिशयों का समावेश होता है।

(19) अरिहत भगवान समवसरण मे .. . .. दिशा की ओर मुख करके बैठते है।

(20) समवसरण मे कुल . हजार सीढियाँ है।

(21) अरिहत प्रभु की देशना . . .... पर्षदा श्रवण करती है।

(22) अरिहत बनकर भी .6 महीनो तक घर पर रहे।

(23) अरिहत प्रभु को . ज्ञान होता है।

(24) अरिहत प्रभु की वाणी मे ... . गुण होते है।

(25) . . .. परमात्मा की प्रथम देशना निष्फल गई।

(26) . .. . के ऊपर विजय पाने वालो को अरिहत कहते है।

(27) अरिहत के गुण होते है।

(28) अरिहत परमात्मा तीर्थकर पदवी के .... . . भव पहले वीरस्थानक तप करते है।

(29) वर्तमान चौबीशी के . .. अरिहत भगवान चक्रवर्ती भी थे।

(30) अरिहत के च्यवण कल्याणक के समय इन्द्र . सूत्र से स्तुति करते है।

(31) अजित नाथ भगवान के समय मे जम्बूद्वीप के महाविदेह मे .. अरिहत विचरण करते थे।

(32) जम्बूद्वीप मे एक समय मे कम से कम .. .... अरिहत भगवान विचरण करते है।

(33) उत्कृष्ट रूप मे सम्पूर्ण विश्व मे एक साथ ... .. अरिहत विचरण करते है।

(34) अरिहत भगवान के विचरण के समय ... . ऋतुएँ खिल जाती है।

(35) 170 अरिहत भगवान परमात्मा के समय मे हुए।

(36) अरिहत भगवान के कर्मक्षय से . ... अतिशय उत्पन्न होते है।

(37) अरिहत भगवान के श्वासोच्छवास मे .. .. .. की सुगध आती है।

(38) अजित नाथ भगवान के समय सम्पूर्ण धातकी खड मे अरिहत थे।

(39) अरिहत भगवान का दिखाता नहीं है।

(40) अरिहत भगवान जब विहार करते है तब वृक्ष है।

(41) अरिहत परमात्मा .. .. ..बुध होते हैं।

(42) अरिहत भगवान को .. .. प्रदीक्षणा देते हैं।

(43) अरिहत प्रभु के चलते समय कॉटे .. .. होते हैं।

(44) अरिहत परमात्मा शरीर .. होते हैं।

(45) अरिहत भगवान .. मुख से देशना देते है।

(46) अरिहत वदनावली का गुजराती पद्यानुवाद .. ने किया है।

(47) अरिहत परमात्मा ससार से ... ... होते हैं।

(48) अरिहत भगवान के समवसरण मे कुल .... चामर ढलते हैं।

(49) अरिहत भगवान .. आदि राग मे देशना देते है।

(50) 24 तीर्थकरो म से 21 तीर्थंकर ... ... आसन से मोक्ष गये।

(51) अरिहत के चलने के लिए ... . सुवर्ण कमलो की देव रचना करते है।

(52) अरिहत भगवान को .... सघयण होता है।

(53) अरिहत भगवान को .. .. कर्म होते हैं।

(54) अरिहत भगवान को .... सस्थान होता है।

(55) अरिहत भगवा। को गम म .... ज्ञान होते है।

(56) एक से अधिक ना। वाल तीर्थंकर .... है।

(57) .. .. इन्द्र अरिहत भगवान का जन्म महोत्सव मनाते है।

(58) अरिहत भगवान की सेवा मे .. .. दिक्कुमारी उपस्थित रहती है।

(59) अरिहत भगवान तीन लोक के नाथ है इस वास्तविकता को . . . . . सूचित क॰ ॥ है।

(60) अरिहत भगवान के हाथ पैर मे .... लक्षण होते है।

(61) अरिहत भगवान का रक्त . . . . वर्ण का होता है।

(62) अरिहत भगवान का लाल खून . ... गुण को सूचित करता है।

(63) अरिहत भगवान . . . . बोध पाते है।

(64) अरिहत भगवान .... दान देते है।

(65) 24 तीर्थकरो मे से सबसे अधिक भव . . . . ने किये।

(66) ... . देव परमात्मा को शास॰न प्रवर्तमान करने की विनति करते है।

(67) सामान्यत अरिहत भगवान .... मुष्ठी लोच करते है।

(68) दीक्षा के समय अरिहत भगवान को ... . ज्ञान की प्राप्ति होती है।

(69) अरिहत भगवान के समवसरण मे .. . . गढ होते है।

(70) अरिहत परमात्मा के दर्शन से .... भाव उत्पन्न होता है।

(71) चॉदी के गढ को कुल . ... सीढियॉ होती है।

(72) पशु पक्षी . ... गढ़ ऊपर होते है।

(73) अरिहत भगवान .. .. भाषा मे देशना देते है।

(74) अरिहत भगवान के सामने .... शोभता है।

(75) अरिहत भगवान सबसे पहले ... . प्रदान करते है।

(76) अरिहंत परमात्मा को .... चारित्र होता है।

(77) अरिहत भगवान के मुख्य शिष्य ... . कहलाते है।

(78) अरिहत भगवान की उत्कृष्ट ऊँचाई .. .. होती है।

(79) अरिहत भगवान की कम से कम ऊँचाई .... होती है।

(80) अरिहत भगवान .. . . मे बैठकर देशना देते है।

(81) अरिहत परमात्मा का शरीर .... होता है।

(82) अरिहत नाम कर्म का बध स्थानक की आराधना से होता है।

(83) घातकी खड मे .. अरिहत भगवान है।

(84) अशोक वृक्ष अरिहत भगवान से गुणा ऊँचा होता है।

(85) समवसरण मे अरिहत भगवान के प्रतिबिम्बो पर कुल मिलाकर .. छात्र होते है।

(86) अरिहत परमात्मा के अतिशय से योजन तक रोग शोक नहीं होते।

(87) अरिहत भगवान को कर्मों का उदय होता है।

(88) अरिहत भगवान की माता स्वप्न देखती है।

(89) अरिहत भगवान के जन्म को कहते है।

(90) श्रेणिक सीढियॉ चढकर अरिहत भगवान के पास पहुँचे।

(91) जघन्य से .. .. .. निकाय के कोटि देवता पास रहते है।

(92) अरिहन्त भगवान का उत्कृष्ट आयुष्य .. .. होता है।

(93) अरिहन्त भगवान को देवकृत अतिशय .. .. है।

(94) समवसरण मे अरिहत भगवान के पीछ .. .. भामण्डल होते है।

(95) अरिहत भगवान .. .. दोष रहित होते है।

(96) अरिहत भगवान का मेरु पर्वत के ऊपर अभिषेक हाता है।

(97) अरिहत भगवान दीक्षा लेते के समय .. .. .. का नमस्कार करते है।

(98) अरिहत परमात्मा के विचरण श्रेत्र .. जल की वृष्टि होती है।

(99) .. .. भगवान के सबसे अधिक गणधर थे।

(100) अरिहत परमात्मा की वाणी .. . . गामिनी होती है।

(101) अरिहत भगवान के . .. . कल्याणक होते है।

प्रश्न 2. नीचे दिये गये वाक्यों के आधार पर कौन बोला खाली जगह भरो।

जबाबी शब्द के अक्षर कोष्ठक मे दी गयी सख्या के अनुसार होने चाहिए जबाबी शब्दो के प्रथम अक्षरो से गणिवर्य मणिप्रभसागरजी कृत प्रार्थना की प्रसिद्ध पक्ति प्रकट होनी चाहिए।

(1)...	(5)	मैने पचजन्य शंख को सहजता से उठाया और फूक दिया।
(2)	(2)	घोर पाप करने वाले को तथा आरम्भ समारम्भ करने वाले को सदैव धुंवे से स्वागत करती हूँ।
(3)..... . ..	(2)	मेरा भोजन मोती है। मै दूसरा आहार नही करता हूँ।
(4)...... . .	(2)	साधु, साध्वी और श्रावक प्रतिदिन मेरी चर्चा करते है।
(5)	(6)	मै अरिहत भगवान को धर्म तीर्थ प्रर्वतन करने के लिए प्रार्थना करता हूँ।
(6)..	(4)	मैने शत्रुजय पर टूक और बम्बई मद्रास मे गगन चुम्बी मदिर बनाया।
(7)...	(2)	मेरे मे लीन बनने वालो को मै तीर्थकर पदवी से विभूषित करता हूँ।
(8)	(4)	मैने ही सयति राजा को मार्ग दर्शन दिया।
(9)	(4)	मै डाकू होने पर भी गुरु उपदेश से 4 नियमो पालन से 12 देवलोक मे गया।
(10)...... .. .	(5)	मै इतना छोटा सूत्र होने पर भी मुझे ज्ञानी सागर की उपमा देते है।

(11) (3) क्रिया के स्थान पर अगर पॉव है तो ज्ञान के स्थान पर मै हूँ।

(12) (4) मुझे अगर जीत लिया तो मानो सारे कर्म आप ने जीत लिया।

(13) (4) मैं जबूस्वामी का जीव पूर्व भव मे पत्नी के कहने से सयम मे स्थिर बना।

(14) (5) मेरे स्थान पर जैनागम की रचना हुई।

(15) (2) मैं छ काय जीवो का रक्षक हूँ।

(16) (6) मैने अपनी माता से वादा किया कि मै कभी अन्य माता नहीं बनाऊँगा।

(17) (5) मेरी गुलामी ने मगु आचार्य को गटर का मेहमान बना दिया।

(18) (2) मुझे बजाने से वायुकाय जीव की विराधना होती है।

(19) (5) जिन आगमो को चार अनुयोगे मे मैंने विभक्त कर दिया।

(20) (2) मेरे लिए कोई प्रदेश शेप नही रहा। मै सब साधु साध्वी को वदन करता हूँ।

(21) (2) मेरी क्या पहचान दू, मेरे मस्तक मे मुक्ताफल उत्पन्न होता है।

(22) (3) मेरे आने पर चहूँ ओर अधेरा छा जाता है।

(23) (2) गुलाल उडाओ या धूल मुझे क्या मे तो निर्लेप हूँ।

(24) (2) वास्तव म मै तो तुम्हारे भीतर हूँ। तुम्हारी आत्मा शुद्ध बन गयी तो मै मिल गया समझा।

प्रश्न 3 नीचे दिये गये झाली मे जम्बूद्वीप के महाविदेह के 32 तीर्थकरो मे से 11 तीर्थकरों के नाम खो गये। उन्हे खोज कर लिखो। एक अक्षर का प्रयोग दोबारा को सकता है।

ज	अ	ऊं	श्व	×
ल	व	श	जि	त
ध	ग	गा	क	र्ग
र	द	थ	ना	श
ग	त्त	प	म	ह
प्र	च	दग	ह	सा
ने	भि	द्र	रि	हो

प्रश्न 4. वर्तमान युग में अरिहंत भगवान के मंदिरों की क्या आवश्यकता है ? इस विषय पर 10 पंक्ति लिखिये।



पावन ज्ञान गंगा

प्रश्न 1 उत्तर 'प से लिखिए ।

(1) नमस्कार महा मत्र का दूसरा नाम क्या है ?
(2) चैत्र सुदि पुर्णिमा के दिन कौन से तीर्थंकर को केवल ज्ञान हुआ ?
(3) अजना सति के पति का नाम क्या था ?
(4) इन्द्र मेरु पर्वत पर परमात्मा का क्या करता है ?
(5) छ आवश्यक मे से एक का नाम लिखो ?
(6) श्रेणिक महाराजा का जीव कौन से नाम का तीर्थंकर बनेगा ?
(7) गौतम स्वामी ने अष्टापद पर तापसो को किससे पारणा कराया ?
(8) चौदह स्वप्नो मे से एक का नाम लिखो ?
(9) भगवान महावीर ने कितने मुष्टि से लोच किया ?
(10) जैनो का सबसे बडा पर्व कौनसा है ?
(11) बारह उपाग मे से एक आगम का नाम ?
(12) दस दिशाओ मे से एक दिशा का नाम ?
(13) अनन्तानु बन्धी क्रोध किसके समान है ?
(14) स्कन्ध या देश से अलग हुए पुद्गल के अति सूक्ष्म भाग को क्या कहते हैं ?
(15) कूप की उपमा से जो काल गिना जाये उसे क्या कहते है ?
(16) पौषध मे दो वक्त क्या करते हे ?
(17) छ प्रकार की लेश्या मे से एक का नाम लिखो ?
(18) जो वस्तु बार बार भोगने मे आवे उसे क्या कहते हैं ?
(19) चार कर्म को क्षय होने पर आत्मा क्या बनती है ?
(20) एक अणुव्रत का नाम ?

(21) नरकायु वध का एक कारण क्या है ?

(22) नेमिनाथ भगवान ने किसकी पुकार सुनकर रथ को मोडा ?

(23) पॉच समिति मे से एक समिति का नाम लिखो ?

(24) बार-बार विलाप करने को क्या कहते है ?

(25) परमेष्टि अक्षर आदि की स्थापना करके चिन्तन करना कौन-सा ध्यान है ?

(26) याद किए हुए को बार-बार स्मरण करने को क्या कहते हैं ?

(27) उपाध्याय भगवत कितने गुणो से भूषित है ?

(28) आहारादि अपने होते हुए भी दूसरो का कहना कौन-सा अतिचार है।

(29) जिस चारित्र से विशेष कर्म निर्जरा होती है उस चारित्र का क्या नाम है ?

(30) तीर्थ स्थान की भूमि कैसी होती है।

(31) कौन-सी यात्रा करने से अनुभव अधिक होते हैं।

(32) तप पद के कितने गुण हैं ?

(33) सूरि कान्ता ने किसको विष पिलाया ?

(34) प्रतिक्षण परिणमन करने को जैन दर्शन मे क्या कहते है ?

(35) अजीव पदार्थों में होने वाले एक सस्थान का नाम।

(36) पर लोक विषयक अभिलाषा करना कौन-सा अतिचार है ?

(37) आहार को शरीरादि रूप परिणमन करने की शक्ति विशेष को क्या कहते है ?

(38) विशेष को विषय करने वाले नये का नाम बताइये ?

(39) निव्विगई का एक आगार बताइये ?

(40) जैन दर्शन मे कौन-सा वाद सूक्ष्म है ?

(41) श्रावक के 21 गुण में से एक का नाम लिखो ?

(42) 18 पाप स्थानक मे से एक का नाम लिखो ?

(43) चार प्रकार की सज्ञा मे से एक का नाम लिखो ?

(44) द्रौपदी का हरण किसने कराया।

(45) पद्मप्रभु भगवान का लछण कौन सा है ?

(46) कुन्दकुन्दाचार्य का एक प्रसिद्ध ग्रथ का नाम लिखो ?

(47) आसाता वेदनी कर्म के बध का एक कारण क्या है।

(48) सक्लिष्ट परिणाम वाला अपर्याप्त मिथ्या दृष्टि विक्लेन्द्रिय नाम कर्म की कितनी प्रकृति बाधता है ?

(49) किस चारित्र वाले मुनि भिक्षा तीसरी पौरुषी मे ही ग्रहण करते हैं ?

(50) भगवान महावीर किस आसन मे निर्वाण पद को पाये ?

(51) अपराविदेह मे सीतोदय महानदी के दक्षिण तट पर तक पर्वत का नाम लिखो ?

(52) घाति कर्म के नाश से तीर्थंकर को कितने अतिशय होते हैं ?

(53) स्थावर जीवो मे सबसे अधिक अवगाहना किसकी होती है ?

(54) सोलह सतियो मे से एक सति का नाम लिखो ?

(55) केशी श्रमण ने किसको प्रतिबोध दिया था ?

(56) पाँच प्रकार के चारित्र मे से एक चारित्र ?

(57) मुहपत्ति पडिलेहण के कितने बोले होते है ?

(58) द्रोपदी का दूसरा क्या नाम था ?

(59) ससारी जीव चार गति मे क्या करता है ?

(60) कमठ तापस ने कौन सा तप किया ?

(61) 108 पार्श्वनाथ भगवान के नामो मे से एक का नाम ?

(62) कर्ण का विद्या दान देने वाले गुरु का नाम क्या है ?

(63) भगवान की पक्षाल किससे करते है ?

(64) दति कवल या घर आदि की सख्या का नियमन करना कौन सा पच्चक्खाण है ?

(65) प्रकृतियॉं अपने बध उदय के लिए दूसरी प्रकृतियो की बन्धादि को रोकती है। उन्हे क्या कहते हैं ?

(66) उत्तर प्रदेश के एक तीर्थ का नाम लिखा ?

(67) श्रीरामचन्द्रजी का आयुष्य कितना था ?

(68) लातक देवलोक मे कितने जिनालय हैं ?

(69) विद्यार्थी को भय किससे रहता है ?

(70) महोत्सव मे आमत्रण के लिये क्या भेजते हैं ?

(71) मानव को प्रत्येक प्राणी के लिये क्या करना चाहिए ?

(72) मयणा सुन्दरी की परीक्षा लेने के लिए पिता ने क्या पूछा ?

(73) देवता की क्या नही जपकती है ?

(74) सात व्यसनो मे से एक का नाम लिखो ?

(75) साधु प्रतिक्रमण मे 350 गाथा का कौन-सा सूत्र हैं ?

(76) श्रावक की ग्यारह क्या होती है।

(77) अर्जुन ने राधावेध कौन से देश मे साधा था ?

(78) साधु के बावीस क्या होते है ?

(79) नारकीय जीवो को कौन से देव वेदना देते है ?

(80) रूप पर मुग्ध होकर कौन अपनी जान खो देता है ?

(81) पार्श्वनाथ भगवान की शासन देवी कौन है ?

(82) धन्नाजी ने आठ क्या त्यागकर सयम ग्रहण किया ?

(83) कृष्ण महाराजा की कौन-सी पत्नी किस पद से विभूपित थी ?

(84) चंदनबाला ने क्या करके केवल ज्ञान प्राप्त किया ?

(85) सर्व पर्वो मे शिरोमणि पर्व कौन-सा है ?

(86) आहार शरीर इन्द्रिय आदि क्या है ?

(87) जम्बूद्वीप के महाविदेह के जिन का नाम लिखो ?

(88) धातकी खण्ड के दूसरे महाविदेह के जिन का नाम क्या है ?

(89) पुष्करार्ध के प्रथम महा विदेह के जिन का नाम लिखो ?

(90) सम्यक्त्व के 67 भेदो मे से एक का नाम ?

(91) छेद सूत्र मे से एक का नाम लिखो ?

(92) नाम कर्म की प्रकृति मे से एक का नाम लिखो ?

(93) 28 लब्धि मे से एक का नाम लिखो ?

(94) बीस स्थानक पदो मे से एक का नाम लिखो ?

(95) 20वे भगवान के माता का नाम क्या है ?

(96) एक विशिष्ट तप का नाम ?
(97) प्रत्याखाना का विवेचन किस भाष्य मे हे
(98) अच्छ कार्य करन वाले का क्या मिलता हे ?
(99) गुरु चरणा की क्या करनी चाहिय ?
(100) 15वा पापस्थान कौन सा हे ?
(101) पिता पुत्र का वैर किसने मिटाया ?

प्रश्न 2

(1) जीवन का प्रत्यक ______ मूल्यवान होता है।
(2) ______ नमाकर गुरुवदन किया जाता हे ?
(3) नशिले ______ जीवन को धूल मे मिला देता है।
(4) ______ वह सुनहरी चावी है जो सुप्त शक्ति को विकसित करती है।
(5) अन्तर द्वीप की स्थिति उत्कृष्ट रूप से ______ के असख्यात वे भाग है।
(6) ______ की आसक्ति ने मम्मण सठ का नरक मे पहुँचाया।
(7) हम सब माक्ष मार्ग के ______ है।
(8) जीव का ______ पहुँचाने से आसाता वेदनीय कर्म का बध होता है।
(9) प्रयत्न की ______ सफलता के द्वार पर पहुँचाती है।
(10) सम्यक्त्व प्राप्ति के पश्चात् जीव अर्ध ______ काल मे मोक्ष जाता है।
(11) स्वामी विवेकानन्द के गुरु रामकृष्ण ______ थे।
(12) पॉचवा छठा सातवा ______ व्रत कहे जाते है।

प्रश्न 3 एक स्थपन का नाम

(1) 1 + 2	कमल का पर्यायवाची
(2) 3 + 4 + 5 + 6	तालाब का पर्यायवाची
(3) 3 + 6	बाण का पर्यायवाची
(4) 6 + 3	काव्य का एक अग
(5) 5 + 6	दुल्हे का पर्यावाची

प्रश्न 4. नीचे दिये हुए वाक्यों के आधार पर जवाब लिखे। जवाबी अक्षर कोष्ठक ( ) में दी गई संख्या के अनुसार होनी चाहिये। जवाबी अक्षर के प्रथम अक्षर से देवचंद्र कृत स्नात्र पूजा की प्रसिद्ध पंक्ति प्रगट होनी चाहिए।

(1) (4) धन पाकर मै धर्मी बन गया।

(2) (4) ओ यक्ष ! तुम कितना भी कष्ट दो मै तो कर्म जंजीर को तोड़कर वीतराग बनने वाला हूँ।

(3)... .. (3) मै इतना पुण्यशाली हूँ कि साधर्मी की भक्ति किये बिना भोजन नही करता।

(4) . (5) मने पालितणा का 13वा उद्धार करवाया था।

(5) . (3) मैने पिताश्रीजी से पूछा कि मेरी मुक्ति कब होगी।

(6) . . (4) मै नैऋत्य कोण मे रहने वाला लोकान्तिक देव हूं।

(7). . (4) प्रथम आरे के जीव मेरे द्वारा ही निर्वाह करते थे।

(8) . (4) त्रैराशिक निह्नव का प्रवर्तक मे हुआ।

निम्नलिखित झालि में नवतत्त्वों में से सात तत्त्व के नाम खोज कर लिखो। और इन अक्षरों से 4 वाक्य बनाओ।

जी	आ	पु	प	व	जि
नि	र	श्र	पा	सं	ने
ध	रा	ण्य	ख	र्ज	श्व
मो	र्म	क्ष	प	इ	का
या	न	क	रो	द	प
ल	वा	च	लो	क्षा	त

(1) दीक्षा के दिन ही केवल ज्ञान और मुक्ति पाने वाले मुनि थे।

(2) क्रोध करके भी केवली बनने वाले थे।

(3) पश्चाताप की आग मे घाती कर्मों को जला देने वाले बाल मुनि थे।

(4) मुनि टीका सूत्र विवेचन के प्रभाव से जैन धर्म मे स्थिर हुए।

(5) परमार्हत की उपाधी और को मिली हुई है।

(6) माता की उपाधी और .. को मिली हुई है।

(7) आकाशगामिनी विद्या के बल से .. सूरिजी प्रतिदिन पॉच तीर्थ की यात्रा करते थे।

(8) राजा ने साधु की निन्दा करने वाले सगे बहनोई को भी पाठ पढाया।

(9) गुरुदेव की टकोर पर (इशारे) मन्त्री ने महल को उपाश्रय बना दिया।

(10) जहर निवारणार्थ उपयोग मे ली हुई वनस्पति के आरम्भ दोष के प्रायश्चित के लिये .. सूरिजी ने विगईयो का त्याग किया।

(11) मन स लडते लडते केवल ज्ञान ने पाया था।

(12) भाले के अग्रभाग पर केवल ज्ञान .. ने पाया था।

(13) दया करके .... दु खी हुये थे।

(14) दया करके .. .... सुखी हुये थे।

(15) दया करके .. दवाधि देव बने थे।

(16) ने पत्नी के कटाक्ष से वैराग्य प्राप्त किया।

(17) यहाँ धर्म लाभ नहीं अर्थलाभ का काम है गणिका के इन शब्दों से . . मुनि ने सांसारिक जीवन शुरू किया।

(18) . . के ग्रन्थों में भव विरह शब्द का प्रयोग दिखाई देता है।

(19) अभव्य पालक ने . . . सूरि सहित साधुओं को घाणी में पिल दिये।

(20) अभिमान छोडकर संयम स्वीकार करने के पश्चात् भी . . का केवल ज्ञान महिनों तक अभिमान के कारण रुका रहा।

(21) स्वाद की आसक्ति के कारण .... अनंत संसार को बढ़ा लिया था।

(22) स्वाद की विरक्ति से .. . अनंत संसार का घटा लिया।

(23) प्रेरणा दाता का पतन हुए प्रेरणा लेते हुये . . . परमात्मा बन गये थे।

(24) पानी–पानी की पुकार करते-करते .. .. प्राण छोड दिये थे।

(25) पानी से कर्म . . .. तोड डाले थे।

(26) पानी मे पात्र तिराते-तिराते . .. . बाल मुनि तिर गये।

(27) भूख को शान्त करने ने दीक्षा ली।

(28) द्रव्य यज्ञ करते-करते भाव यज्ञ .. .. ने किया था।

(29) सेवा कराते साधुता . .... ने छोड दिया था।

(30) आवाज सुनकर . .. . को आर्तध्यान हो गया था।

(31) "न तथा बाय ते स्कन्ध यथा बाधति बाधते" इस गुरु वाक्य से .... सूरि को बोध प्राप्त हुआ।

(32) पूर्वभव मे पुडरिक कडरीक अध्ययन का रोज 500 वार परावर्तन करने से . . . . .. 3 वर्ष की वय मे 11 अग के ज्ञाता बने।

(33) उपशम विवेक सवर की त्रिपदी ने .... को वैरागी बनाया।

(34) अपने धन के व्यय द्वारा दूसरो को यश प्रदान करके ... ने देवगिरि मे देवालय बाधने की अनुज्ञा प्राप्त की।

(35) जहॉ लाहो तहा लाहो इस श्लोक के अर्थ का विचार करते हुए मुनिने केवल ज्ञान प्राप्त किया।

(36) पाप के भय से .. .. मोक्ष मे पधार।

(37) दुर्गति मे रहकर दुर्गति टाल दी।

(38) द्वेषका दावानल सुलगाकर दुगर्ती ने पायी थी।

(39) रागी का त्यागी .. हुआ था।

(40) दूसरा के रूप म रागी हुआ था।

(41) शिखरजी के मदिर म जूते पहन कर प्रवेश करने वाले अग्रेज अफसर के विरुद्ध .. न कोर्ट म कस लडा।

(42) माया करके ने 80 चौबीशी तक ससार खडा किया।

(43) वासना की उपासना करते हुए न निर्विकारी मुनि के दर्शन से केवल ज्ञान प्राप्त किया।

(44) गुरुवदन के द्वारा ने तीर्थंकर नाम कर्म का उपार्जन किया।

(45) सुलसा के सम्यक्त्व की परीक्षा करन क लिए न ब्रह्मा विष्णु और महेश का रूप धारण किया।

(46) स्वय क रूप मे ही रागी .. वन गया था।

(47) रूप म रागी वनकर वीतरागी वन थ।

(48) वैभव मे खामी दखकर वैराग्य हुआ था।

(49) साधु मिटकर .. ससारी वन गया था।

(50) खूनी मिटकर .. मुनि बन गया था।

(51) एकत्व भावना पर आरूढ होकर .. राजर्षि वैरागी वने।

(52) नियाणा करके मुनि चक्रवर्ती वन।

(53) .. .. का रूप मद भी वैराग्य का कारण वना।

(54) सूरिजी ने देवी के पास राजा को प्रतिबोध देने का वरदान मागा।

(55) सर्वज्ञ को जीतने के लिये आने वाल स्वय हार गये।

(56) हरिभद्रसूरिजी की शास्त्र रचना मे सहायक बनने के लिये . श्रेष्ठि ने उपाश्रय मे रत्न जडवाये।

(57) शत्रु मिटकर मित्र .... बने थे।

(58) शिष्य मिटकर शत्रु . . बना था।

(59) भाभी से बोध पाकर . .. सयम मे स्थिर बन गये थे।

(60) वेदना मे . .. ने बोध पाया था।

(61) पत्नी के बोध से . . . .. तिर गये थे।

(62) माता के बोध से . .. . तिर गये थे।

(63) पिता के बोध से . . .. तिर गये थे।

(64) देवता के बोध से . . तिर गये थे।

(65) मोदक का चूर्ण करते-करते . ... ने कर्म का चूर्ण कर दिया।

(66) मोदक से दूर . . .. .. के . . . . . भाग गये।

(67) मोदक के लालच मे आकर ... . ने सयम को लूट दिया।

(68) माता से आहार बहरकर .... सथारा किया था।

(69) साधु को आहार बहराते देख . ..... का अज्ञान चला गया था।

(70) दरिद्र दशा मे भी दान देकर . . . ... शत्रुजय उद्धार मे अमर हो गया।

(71) . . के ब्रह्मचर्य की केवल ज्ञानियो ने प्रशसा की।

(72) भगवान महावीर के गर्भहरण करने वाले हरिणेगमेषी देव .. . बने।

(73) ऋषभ कूट ऊपर अपना नाम लिखने जाते हुए . . .. की ऑखो मे ऑसू बहने लगे।

(74) प्राण के बजाय . . अणगार ने परिष्ठापनिका समिति को बचाई।

(75) साधर्मिक की शाल से बहुमान के लिये . . . ने 32 वर्ष की युवावय मे ब्रह्मचर्य व्रत को स्वीकार किया।

(76) मूर्ति का देखकर _ मोक्ष मार्ग पर गये।

(77) ठोकर खाकर _ _ ठाकुर बन गये।

(78) चोर के प्रभाव से अभय कुमार की जाल म स छूट गया।

(79) सूरिद्वारा आत्म निन्दा रूप रची हुई स्तुति आज भी लोभ गा रहे है।

(80) सयम म उत्तरोत्तर वृद्धि प्राप्त करने के कारण प्रभुवीर के श्री मुख से _ नाम उच्चरित हुआ।

(81) साध्वी जी के शील की रक्षा के लिये ...... _ सूरिजी ने गर्द भिल्ल राजा के विरूद्ध युद्ध कराया।

(82) विद्या के प्रभाव से .... सिह बने गये थे।

(83) मार खाकर समता रस मे झिलते हुये _ _ मोक्ष मे गये।

(84) प्राण बचाकर ...... परमात्मा बन गये।

(85) परठाने जाते ... _ परमात्मा बन गये।

(86) हिसा करते हुए अहिसा के हिमायति .... बन गये।

(87) चोर को देखकर .... _ ... चेत गये।

(88) सग्राम करते करत _ साधु बन गय।

(89) पुष्ट साड का दुर्बल हाल देख को वैराग्य हो गया।

(90) ... को एक ही देशना से वैराग्य प्राप्त हुआ।

(91) पिता को ढूढ ने जाते _ ... _ प्रवज्या स्वीकार कर ली।

(92) साधु क लिय 3 कदम जमीन देने वाल _ ... को _ _ मुनि ने शिक्षा दी।

(93) हाल के अच्युतेन्द्र ...... _ की आत्मा है।

(94) भक्ति के ... भगवान बनने वाले .... _ है।

(95) _ _ ... चारित्र धर्म की आराधना करक जहाँ स आय वहाँ गये।

(96) सवाई हीरला का बहुमान .... सूरिजी को मिला था।

(97) मरणासन्न पड़े हुए भाई को भव्य उपासना का अमर बनाने वाला जिनालय . है।

(98) काम के घर मे रहकर काम को मारने वाले मुनि 84 चाविशी तक अमर रहेगे।

(99) अहिसा क उत्कृष्ट प्रवर्तक ... ... राजा [illegible]

(100) भक्ति मे हार कर . ने विरति मार्ग मे अपना कर इन्द्र को हराया।

(101) . . . .. ने अपने शिष्य को खमाया।

(102) . आनद श्रावक को खमाया!

(103) दान देकर .. .घटाया।

(104) शील पालकर .. घटाया।

(105) जीवो पर दया करके ससार . . . ने घटाया।

(106) भाई की सेवा करके .. .. भाग्यशाली बने।

(107) पैर का काटा निकालते . .. ने कर्मो का काटा निकाल दिया।

(108) शरीर की शुद्धि करते-करते .. . . आत्म शुद्धि का सदेश पाया।

(109) धन पाकर . . धर्मी बना।

(110) धन का रागी तन का त्यागी बने।

(111) पुत्र का गर्भ मे अभिषेक करके . दीक्षा स्वीकार की।

(112) मुनि को देखकर . ... . का आत्म कल्याण हुआ।

(113) जगल मे मगल मनाया।

(114) दुल्हे स सन्यासी बने।

(115) वधीवान को देखकर . मुक्त बने।

(116) पूजनी से पूजकर ने कर्म बाध।

(117) सयम लेकर विगय का त्याग किया।

(118) ससार का राज्य लेन गये . . ने आत्मराज्य पाया।

(119) शव से .... शिवमार्ग पाया।

(120) पिता के साथ वैर करके .... ससार बढाया।

(121) मन से कर्म ...... बाधे व तोडे।

(122) वचन से कर्म .... बाधे व तोडे।

(123) काया से कर्म .... बाधे व तोडे।

(124) पत्नी को सजाते सजाते .... केवल ज्ञान हुआ।

(125) लग्न मडप मे .... को केवल ज्ञान प्राप्त हुआ।

(126) प्रति लेखना करते करते .... को केवल ज्ञान प्राप्त हुआ।

(127) शरीर की खाल उतारते .... को केवल ज्ञान प्राप्त हुआ।

(128) अभिमान के हाथी से उतरने पर ... ... को ज्ञान प्राप्त हुआ।

(129) घर मे बैठे बैठे .... को केवल ज्ञान प्राप्त हुआ।

(130) काच (दर्पण) के महल मे .... को केवल ज्ञान प्राप्त हुआ।

(131) इरिया वहीय का चिन्तन करते-करते .... को केवल ज्ञान हुआ।

(132) सिहासन पर बैठे-बैठे .... को केवल ज्ञान प्राप्त हुआ।

(133) विलाप करते करते .... को केवल ज्ञान प्राप्त हुआ।

(134) नाटक करते करते .... को केवल ज्ञान प्राप्त हुआ।

(135) नाचते नाचते .... को कवल ज्ञान प्राप्त हुआ।

(136) पुष्प पूजा करते करते .... को केवल ज्ञान प्राप्त हुआ।

(137) वछित होते हुये देख .... को कवल ज्ञान प्राप्त हुआ।

(138) भोजन करते करते .... को केवल ज्ञान प्राप्त हुआ।

(139) केवली शिष्य को क्षमापना करते करते .... को केवल ज्ञान प्राप्त हुआ।

(140) गुरु की मार व गालियॉ खाते खाते .... को केवल ज्ञान प्राप्त हुआ।

(141) चलाजा ऐसा वाक्य सुनकर ..... को वैराग्य भाव उत्पन्न हुआ।

(142) दुर्लभ बोधि भावना का चिन्तन करते-करते . ... को वैराग्य भाव उत्पन्न हुआ।

(143) धर्म स्वाख्यातत्त्व का चिन्तन करते-करते . ... को वैराग्य भाव उत्पन्न हुआ।

(144) रक्त सनी मुख वस्त्रिका देखकर .. .. को वैराग्य भाव उत्पन्न हुआ।

(145) वैश्या के वचन सुनकर .. . . को वैराग्य भाव उत्पन्न हुआ।

(146) सध्या के बादलो को देखकर .... को वैराग्य भाव उत्पन्न हुआ।

(147) पत्नी के बोध से . .   .. को वैराग्य भाव उत्पन्न हुआ।

(148) चुडियों के खनखनाहट से .... को वैराग्य भाव उत्पन्न हुआ।

(149) पत्नी से प्रतिबोध पाकर . .. .तत्काल देव बना।

(150) वेश्या के घर पर रहकर संयम के लिये 10 व्यक्ति को प्रतिबोध देकर ..   .... भोजन करते।

(151) नव अगी टिकाकार ... . सूरि जी बने।

प्रश्न 2.

(1) दर्शन करने जाते दिवाली किसने प्रगटावी

(2) लोक के भय से नरक मे गया कौन।

(3) बधन मे रह कर बधन किसने तोडे।

(4) रागी को त्यागी किसने बनाया।

(5) पत्नी मिटकर शत्रु कौन बना।

(6) कौन-सी बहन भाई को तारा।

(7) कौन-सी पत्नी पति को तारा।

(8) सतियो मे पुण्य किसका ज्यादा था।

(9) कलक धोकर कल्याण किसने किया।

(10) देवर को प्रतिबोध किसने दिया।

(11) पुत्र को देखकर प्रवज्या किसने ली।

(12) प्रश्न पूछ कर प्रवज्या पथ पर कौन बढे।

(13) दान करने पर भी दड का पात्र कोन बना।

(14) किस श्राविका ने तप के द्वारा अपना नाम प्रख्यात किया।

(15) आलोचना करते करते केवल ज्ञान किसने पाया।

(16) गोचरी लाते लाते केवल ज्ञान किसने पाया।

(17) पुत्र वियोग सुनकर दीक्षा किसने ली।

(18) वियाग से वैराग्य किसने पाया।

(19) औशधोपचार से मोक्ष टिकिट किसने कटाया।

(20) किस श्राविका के स्नान जल से लक्ष्मण, की मुर्च्छा दूर हुई।

(21) नगर मे रहकर निरजन कौन बनी।

प्रश्न 3

(1)	1 + 2 + 3	अपराध करने पर राजा प्रसन्न होता है तो क्या कहता है।
(2)	2 +3	गलती होने पर व्यक्ति को क्या लगता है
(3)	4 + 5	अरिहत का पर्यायवाची
(4)	6 + 7	आचार्य का पर्यायवाची
(5)	1 + 7	शत्रु का पर्यायवाची
(6)	8 + 5	नवतत्त्व मे से एक भेद
(7)	2 + 5	मरिची ने क्या बडाया
(8)	1 + 2 + 3	राजकुमार का नाम
(9)	8 + 2	ऐसी क्या चीज है जिस पर कितना ही घी डालो फिर भी लूखी रहती है 1 + 2 + 3 + 4 + 5 + 6 + 7 + 8 खरत्तर गच्छा के आचार्य का नाम

प्रश्न 4 इस जाली मे 13 प्रतापी पुरुषो के नाम ढूढना है।

अ	णि	ज्ञ	कु	क	म
भ	प्र	ख	त	बा	य
आ	न	ज	व	द्र	हुं
व	बू	द	मा	ल	र
ग	मै	र्प	सु	ता	ज

प्रश्न 5. नीचे दिये हुए वाक्यों के आधार पर खाली जगह भरो जवाबी शब्द अक्षर कोष्ठक में दी गई संख्या के अनुसार होगा प्राचीन प्रसिद्ध काव्य पंक्ति आनंद धन जी म०सा० की कृति 13 अक्षरों में प्रकट होनी चाहिये।

(1) ... . (5) मै इतना भाग्यशाली हूँ मेरे शासन के समय 170 जिन का विचरण हो रहा था।

(2) . ... (4) मेरी माता मेरे जन्म समय तीन स्वप्न देखती है फिर भी मै जगत मे महा पुरुष के रूप मे प्रसिद्ध हुआ।

(3) . . .. (4) मेरे पर विपति के पहाड गिरे फिर भी मैने सत्य धर्म को नही छोडा है।

(4) .. . (5) मै अपने भाणजे को राज्य दिया मैने सयम लिया आप जानते हो मेरा भाणजा . . . .. . तद्भव मोक्ष गामी बना मै धन्य बन गया सबके अधरो पर नाम है उनका

(5) . . . (6) मै कौन हूँ मैने जिस दिन दीक्षा ली उसी दिन माता ने मेरी हत्या कर दी।

(6) . (5) मै धन का अति रागी होने के कारण तन का भान ही भूल गया।

(7) ——— – – – 4 आपको मालूम होगा मुझे गृहस्थाश्रम म ही केवल ज्ञान हो गया।

(8) – – ——— – मैं इतना भाग्यशाली हूँ कि मुझे ही मोक्ष जाने का अधिकार मिला है।

(9) – – – – – – मैं कल्याण मंदिर का एक गाथा हूँ जिसमे कुमुद्रचन्द्र ने अपनी पार्श्वनाथ भगवान के सामने लघुता का वर्णन किया है।

(10) 4 आप मुझे नहीं जानते मेरे पुत्र ने असि मसि कृषि का व्यवहार सिखाया।

(11) 7 मेरे यहाँ पर पधारो मै साठी आठ साल मे तुम्हे मुक्ति निलय मे पहुँचा सकता हूँ।

(12) 3 मैं कितनी भाग्य शालीनी हूँ। प्रभु को आहार देने से परमात्म पद से विभूषित हो गई।

(13) 4 आश्रय देने वाला कल्पवृक्ष हूँ। आप मैरा नाम बताओ मैं कौन हूँ।

प्रश्न 6 प्रतापी पुरुपो के विषय में 20 लाईन का निवध लिखें।



जैन धर्मोऽस्तु मंगलंम्

16

प्रश्न 1. नीचे लिखे वाक्यों के आधार पर बताओ कि 'मैं' कौन है ?

(1) जिन आगमो को चार अनुयोगो मे मैने ही बाटा।

(2) जिन आगमो को मैने ग्रन्थस्थ किये।

(3) अहो मैं कितना प्रमादी ? मुझे प्रतिबोध देने के लिए मेरी पालकी गुरुदेव ने उठाई।

(4) मै था तो महाकीर्ति नामक दिगम्बर साधु लेकिन बहन के वचन से सत्य समझने पर मैने श्वेताम्बरी दीक्षा स्वीकारी।

(5) तक्षशिला नगर के उपद्रव को मिटाने के लिये मैने जो रचना की वह आज भी प्रतिक्रमण मे अमर है।

(6) जिस श्लोक का अर्थ मै नही समझूगा तो उस श्लोक का अर्थ समझाने वाले का मै शिष्य बन जाऊगा।

(7) मेरे गुरु ने मेरा रत्नकवल छीन लिया तो मैने गुस्से मे आकर वस्त्र ही पहनना ही छोड दिया और मै दिगम्बर मत प्रवर्तक हुआ।

(8) मैने इक्कीस वक्त बौद्धो की दीक्षा स्वीकार ने की इच्छा की।

(9) मै एक दिन मे 1000 श्लोक कठंस्थ कर लेता था।

(10) मैने मेरे गुरु की याद मे पादलिप्त-नगर (पालीतणा) बसाया।

(11) मेरी स्मृति शक्ति से ही तो तिलक मजरी ग्रन्थ पुनर्जीवित हुआ।

(12) नवागी टीका बनाने पर मुझे कुष्ठ रोग हुआ तो विरोधिओ ने बाते बनाई कि टीका मे उत्सूत्र रूप है।

(13) अहो अगर मैं दिगम्बराचार्य कुमुग चन्द्र को नही जीतता तो हम श्वेताम्बरो की क्या हालत होती।

(14) मैं बडा था मेरे से प्रतिष्ठा नही कराने से मै नाराज होकर कह दिया प्रतिष्ठा मे साधु की जरूरत नही और मैने पुनमिया गच्छ चलाया।

(15) राजाओ को प्रतिबोध अनेक विध साहित्य निर्माण शासन प्रभावना आदि कार्यो मे इतना व्यस्त रहा कि शायद ही कोई मान सके कि मानव अपने जीवन मे इतना कार्य कर सके।

(16) जैनाचार्य तो युद्धबद करवाते है मैने युद्ध करवाया और फिर भी आराधक आचार्य बना।

(17) धर्म और युद्ध एक साथ नहीं रह सकत ऐसा तुम मानते हो जरा मेरी ओर देखो मै अत्यन्त धार्मिक होने पर भी 100 वर्ष की उम्र मे भी युद्ध किया।

(18) बडी उम्र मे क्या अभ्यास करे। ऐसा मत सोचो मैंने 60 वर्ष की उम्र मे सस्कृत भाषा सीखी है।

(19) भगवान ने कहा 'कडे माणे कडे मैने कहा भगवान झूठे है सच्च तो यह है 'कडे कडे ।

(20) मेरा अहकार मुझे सन्मार्ग की ओर ले गया मेरा स्नेह गुरु भक्ति का कारण बना मेरा जैसा कोई भाग्यशाली होगा क्या ?

(21) न तो तेरा आम्र गच्छक तोडना दुष्कर है और न मेरा सरसो पर नाचना ही दुष्कर है किन्तु दुष्कर तो उन महानुभावो स्थूलभद्र स्वामी का ब्रह्मव्रत है जिसका अखण्ड पालन महिला मे रहकर किया।

(22) घडूम लोहे का एक गोला बराबर मेरे पास पडा और मेरा वैराग्य एकदम प्रज्वलित हो उठा।

(23) मै भद्रबाहु स्वामी स दो वस्तु कम दस पूर्व पढे। मुझे अयोग्य समझ कर चार पूर्व मूल से पढाया उसके बाद भरत क्षेत्र मे 14 पूर्वधारी कोई नहीं बना।

(24) मरी दीक्षा पर्याय तो छ महीने का ही रहा लेकिन इतने समय मे भी मेरे निमित्त ऐसे अद्भुत ग्रन्थ की रचना हुई कि पाच मे आरे के अन्त तक रहेगा।

(25) एक वक्त रथ यात्रा मे पधारे आर्य सुहस्ति सूरि को देखकर मुझे जाति स्मरण ज्ञान हुआ मैने पूछा अव्यक्त सामायिक का फल क्या है ? गुरु भगवन्त ने कहा, राज्यादि फल।

(26) जैन मुनि कभी झूठ नही बोलते ऐसा विश्वास ही मुझे सन्मार्ग मे ले आया।

(27) मुझे जन्मते ही जाति स्मरण ज्ञान हुआ, मुझे दीक्षा लेने की भावना हुई छ. महिने की उम्र मे ही ग्यारह अग मुझे याद हो गये।

(28) मैने मेधावी मुनिको भी सम्पूर्ण ज्ञान न देकर, मानो विश्व को सदेश दिया कि अयोग्य को ज्ञान देना इससे बेहतर है कि ज्ञान लुप्त ही हो जाय।

(29) जब एक हाडी चावल का एक लाक्ष सुवर्ण मुद्रा दाम होगा ठीक उसके दूसरे ही दिन सुकाल हो जायेगा।

(30) ऐसा मत मानना कि बडे आदमी गलती नहीं करते। नही बडे भी गलती करते है मैने भी ऐसी गलती की जिस कारण मुझे सम्पूर्ण ज्ञान प्राप्त नही हुआ।

(31) जिन शासन की प्रभावना के लिये मैने वासक्षेप डाल कर दोनो किनारो को अलग कर दिया तथा 500 तापसो को प्रतिबोध देकर संयम मार्ग पर आरूढ करवाया ।

(32) भौतिक शिक्षा ग्रहण करके बडे महोत्सव के साथ घर आया माता को नमस्कार किया परन्तु माता खुश नही हुई। कहा, बेटा मुक्तिदाता दृष्टिवाद सूत्र पढोगे तभी मुझे प्रसन्नता होगी। जाओ मामा के पास सयम लेकर दृष्टिवाद सूत्र पढो।

(33) मै अपने मामा से साडे 9 पूर्व पढा।

(34) मेरे उपदेश से राजा विक्रमादित्य ने शत्रुजय का संघ निकाला।

(35) मै पादलेप से शत्रुंजय, गिरनार, आबु, अष्टापद, सम्मेत शिखर आदि तीर्थों की यात्रा करके पारणा करता था।

(36) मै अपने लब्धि से ओसिया कोरण्ट नगर मे समकाल प्रतिष्ठा कराई और ओसवाल वश स्थापक नाम से प्रसिद्ध हुआ।

(37) मैं पाटन नगर के दुर्लभ राजा भीम की राज सभा मे 1080 मे खरतर विरूद्ध पद से विभूषित हुआ।

(38) मैं अठारह हजार श्लोक परमित सवेगरग शाला की रचना की यह रचना भव्य जीवा के लिये मोक्ष रूपी महल के सोपान सदृश बनेगी।

(39) मैंने ज्यतिहुअण स्तोत्र की रचना करते हुये इतना भाव विभोर बन गया कि निलम की पार्श्व प्रतिमा प्रगट हुई।

(40) मैंने अपने जीवन मे अनेक ग्रन्थ की रचना की जिससे शासन स्तभ से विभूषित किया गया।

(41) मैं अपने जीवन मे एक लाख 30 हजार अजैनो के हृदय मे जिन तत्त्व की स्थापना की 500 साधु 700 साध्वियो के अधिपति चार राजाओ के प्रतिबोधक बना और अनेक ग्रन्थो के रचयिता बना।

(42) मेरे मस्तक मे जन्म से ही मणि थी मैं मदन पाल राजा को प्रतिबोध दिया और 13 वर्ष की उम्र मे आचार्य पद से विभूषित हुआ।

(43) मैंने काला गौरा भेरू को साधा शत्रुजय के ऊपर खरतर वसही की प्रतिष्ठा कराई 50 हजार अजैनियो को जिन धर्म के अनुरागी बनाया।

(44) मैंने अपने जीवन मे बहुत चमत्कार दर्शाये। अकबर को प्रतिबोध देकर अनेको को जिन अनुरागी बनाया।

(45) ऐसे तो प्रतिदिन मेरी रचित कृति का पाठ करते हैं परन्तु दीपावली के दिन दूसरे दिन अवश्य चतुर्विध सघ रास सुनने को आता है।

(46) 'राजानो ददते' इन आठ अक्षरो पर आठ लाख अर्थ वाली अष्टलक्षी मैंने बनाई।

(47) आगमसार, नयसार, चक्रादि की रचना कर भव्य जीवो को सम्यग् उपार्जन कराने का मैं निमित्त बना। आओ। जल्दी आओ अपनी आत्मा मे रमणता करे।

(48) परमात्मा का अनुरागी बनाता हूँ, भेद ज्ञान दर्शाता हूँ अध्यात्म दशा को प्रगट कराने वाला हूँ, आओ। निजता मे अपनी आत्मा को ढूढे ।

(49) जीव विचार टिका बनाने वाला, सस्कृत चैत्यवदन की रचना करने वाला मै ही हूँ

(50) मै कितने ही पर्वो के व्याख्यान लिखकर भव्य जीवो को पर्वाराधना कराना चाहता हूँ ।

(51) तुम मेरी "अपर्वू अवसर एवो क्यारे आवशे" यह रचना पढो तुम भाव–विभोर बनजावोगे अपनी स्वय की दशा का भान हो जायेगा। आत्मा मे दिव्य ज्ञान ज्योति किरणो को फैलते ही तृष्णा तिमिर अभेद्य आवरण को हटाकर कैवल्य ज्योति को प्रकट करोगे।

प्रश्न 2. तीन की करामत। प्रश्न का उत्तर तीन में लिखें।

(1) गुणो की कुजी
(2) ज्ञान की कुजी
(3) मानवता की कुजी
(4) ससार की कुजी
(5) साधुता की कुजी
(6) निर्लोभता की कुजी।
(7) कर्मक्षय की कुजी ।
(8) मोक्ष की कुजी ।
(9) ग्राह्य क्या ?
(10) छोडने योग्य क्या ।
(11) शत्रु कौन
(12) समाधि दवा है किन रोगो की।
(13) चिन्ता वृक्ष के तीन फल
(14) भगवान महाविर के तीन सिद्धान्त।
(15) वेद तीन।
(16) दृष्टि तीन
(17) योग तीन।



प्रश्न 1 उत्तर लिखे।

(1) जिन दत्त सूरि का जन्म कहाँ हुआ ? गृहस्थ का नाम क्या था ?

(2) गुरुदेव के माता पिता का नाम क्या था ? जाति कौन सी थी ?

(3) जि‍न दत्त सूरि ने कितने वर्ष की उम्र म दीक्षा ली थी ?

(4) जिनदत्त सूरि की बडी दीक्षा किसके कर कमला से हुई थी ?

(5) जिनदत्त सूरि के दादा गुरु का नाम लिखो ?

(6) पाँच पीरा को किसने वश म किया ?

(7) 64 योगनियो का किस । कहाँ पर स्तम्भित की थी ?

(8) नागदेव ने कौन से पर्वत पर कौन सी देवी की आराधना की थी ?

(9) जिनदत्त सूरि ने किस नगरी मे कौन से मदिर से पुस्तक निकाली थी ?

(10) पाक्षिक प्रतिक्रमण करते हुये बिजली का प्रकोप कहाँ पर हुआ ?

(11) मृतक गाय मे प्राण का सचार कौन सी नगरी म किया था ?

(12) जि‍न दत्त सूरि एकावतारी है किसन कहाँ ?

(13) जिन दत्त सूरि ने कितने नुतन जैन बनाय ?

(14) दिल्ली जाने के लिए किसने किसको मना किया ?

(15) राजा तीन क्रोड माया बीज का जाप किसन और कहाँ पर किया ?

(16) प्रथम दादा गुरु देव को आचार्य पदवी कहाँ पर और किस दिन हुआ था ?

(17) 500 शिष्या 700 साध्वियाँ कहाँ पर दीक्षित हुई थी ?

(18) जिन दत्त सूरि ने कितने गौत्र की स्थापना की ?

(19) जिन दत्त सूरि रचित पॉच ग्रन्थों का नाम लिखो ?

(20) जिन दत्त सूरि ने अपने योग बल से वज्रस्थम्भ मे रखे हुए ग्रथ कहॉ पर निकाले ?

(21) लूणिया गौत्र कैसे स्थापित किया ?

(22) किसके पुत्र का विष दूर कर प्राण सचार किया ?

(23) श्रेष्ठि पुत्र को नेत्र ज्योति कहॉ प्रदान की ?

(24) जिनदत्त सूरि शास्त्रीय अध्ययन के लिए सात वर्ष कहॉ पर रहे ?

(25) नागदेव के हाथ पर अंम्बिका देवी ने कौनसा श्लोक लिखा था ?

(26) हेमचन्द्राचार्य के समकालीन आचार्य महाचमत्कारी कौन हुये थे ?

(27) मेरे बाद आचार्य पद सोमचन्द्र मुनि को देना। ऐसा किसने कहा ?

(28) जिन दत्त सूरि ने नश्वर शरीर का त्याग कब और कहॉ पर किया ?

(29) अग्नि संस्कार के समय मुहपति किसकी नहीं जली ?

(30) अभी चोला मुहपति दर्शनार्थ कहॉ रखी हुई है ?

(31) अभी भारत वर्ष मे कितनी दादावाडियाँ हैं ?

प्रश्न 2. नीचे लिखे हुये वाक्यों के आधार पर जगह भरो जबावी शब्द के अक्षर कोष्ठक ( ) में दी गई संख्या के अनुसार होने चाहिये। जबावी शब्दों के प्रथम अक्षरों को जोड़ने से गुरुदेव की पूजा का एक चरण बनता है, संयुक्त अक्षर एक ही गिना जायेगा।

(1) .... (4) मैंने ही अकबर बादशाह को प्रतिबोध दिया था।

(2) .... (2) जैन मुनि मेरे को किये बिन संवत्सरी प्रतिक्रमण नहीं कर सकते ?

(3) .... (3) मुझे प्रभु वीर भी तार न सके।

(4) .... (2) मै समय बताने वाला यत्र हूँ।

(5)	(6)	मेरे यहाँ पर ही 20 तीर्थंकर मोक्ष गये।
(6)	(4)	त्रेसठ शलका पुरुषो मे मेरी भी गिनती है।
(7)	(5)	जीर्ण सेठ ने भावना भाई लेकिन प्रभु वीर ने मेरे यहाँ पारणा किया।
(8)	(3)	मैं देहधारी होने पर भी विदेही कहलाया।
(9)	(3)	प्रतिदिन नवकारसी करोगे तो मेरे यहाँ नहीं आना पडेगा।।
(10)	(2)	मेरे रग महल म रहने पर भी मेरा रग नहीं चढा।

प्रश्न 3.

1 2				6	4
3					
13		5			
7 16	8		12		14
	15			10	
	9		11		

बायें से दाये (आडी चाबी)

(1) मुझे देवलोक हुए 841 वर्ष हुए (4)

(2) मैंने आयुध शाला मे शख बजाया (4)

(3) चारित्र मोहनीय की एक प्रकृति (2)

(7) चारित्र का विशिष्ट उपकरण (5)

(9) माणिक्य स्वामी की मूर्ति किससे बनी हुई है ? (3)

(11) किसकी गति विमान से तेज है। (2)

(13) गजसुकुमाल के शिर पर अगारे रखे (3)

(15) दूसरे भगवान का लाछन (2)

ऊपर से नीचे (आडी चावी)

(2) खरतर गच्छ का प्रादुर्भाव किसने किया (4)

(4) देराऊर मे देवलोक हुए (6)

(6) जैन धर्म का महा पर्व (4)

(8) गुरुदेव को सात वरदान दिये (3)

(10) अधर्म का हार (2)

(12) वितभय पट्टनम मे देवता ने किसकी वर्षा की ?

(14) सीता के पुत्र का नाम (2)

(16) समवसरण का पहला कोट (3)

प्रश्न 4. गुरुदेव के संदर्भ में अपने अनुभव एवं भावों को अभिव्यक्त करें।



चले मुक्ति निलय

प्रश्न 1

1 सद्भावना
2 सम्यक्त्व
3 सद्विवेक समकित
4 समता
5 सद्भावना
6 सद्धर्म
7 समता
8 सम्यग्चरित्र
9 समकिती आत्मा की
10 समता
11 समकित
12 सम्यक्त्व
13 समकित
14 सम्यग् दृष्टि आत्मा
15 सम्यग् ज्ञान
16 सम्यक्त्व
17 सद्आत्मा
18 सम्यग्दर्शन
19 सम्यग्दृष्टि
20 समकित
21 सम्यग्चरित्र
22 सम्यग्तप
23 सम्यग्धम
24 सम्यग्दर्शन
25 सम्यग्ज्ञान
26 सम्यग्ज्ञान
27 सम्यग्दर्शन
28 सम्यग्दृष्टि आत्मा
29 सदात्मा
30 सम्यग्तप
31 सम्यग दर्शन
32 समकित
33 समकिती आत्मा
34 सम्यग चरित्र
35 समता
36 सम्यग दर्शन
37 सम्यग चरित्र
38 सम्यग चरित्र
39 समकिति आत्मा
40 समकिती आत्मा
41 सम्यग्दर्शन
42 सम्यक्त्व
43 सम्यग्ज्ञान
44 सम्यग्ज्ञान
45 सच्चे पश्चाताप से
46 सम्यग्दर्शन
47 सम्यग्ज्ञान
48 सम्यक्त्व पाने के बाद
49 सम्यग ज्ञान
50 समकित
51 सम्यग्चरित्र
52 समकिती आत्मा मे
53 सम्यग ज्ञान

54. सम्यग दर्शन
55. सम्यग चरित्र
56. समकिती आत्मा
57. सम्यग चरित्र
58. सम्यग ज्ञान
59. सम्यग दृष्टि
60. सम्यग चरित्र
61 सद् विवेक
62. सद् विचार, सदाचार,
63. समभाव
64. सच्चा पश्चाताप
65 सभूत विजयजी
66 सद्गुरु
67. समकित
68 सम्यग्ज्ञान
69 सद् श्रद्धा
70 सम्यग ज्ञान
71. सम्यग् ज्ञान
72. सम्यग दर्शन, ज्ञान
73. सम्यग चारित्र, समर्पण भाव
74. सम्यग ज्ञान के आधार पर
75. सम्यग ज्ञान
76. सम्यग् ज्ञान
77. सर्व सिद्धि मत्र
78 सर्व जिव करुं शासन रसी
79 सद्गुरु
80. सम्यग ज्ञान चारित्र
81 समकित
82 समता, समकित
83 समकिती आत्मा
84. सच्चा पश्चाताप
85. सम्यक्त्व
86 सम्यग ज्ञान
87. सदाचार, शियल
88. समकिती
89. समकिती
90. सम्यग दर्शन
91 समकिती
92. सम्यग तप ज्ञान के प्रभाव से
93. सम्यग ज्ञान
94. सम्यक्त्व
95 सम्यग दर्शन, समर्पण भाव
96 समकित, सद्बुद्धि
97. समकित निर्धी
98 समकित
99 सम्यक्त्व
100. समकित
101. प्रतिक्रमण
102 सामायिक
103 मास्तुषाचार्य, गोशाला
104. मरु, देवी, हल्लु किसान
105. चदन बाला, भगु आचार्य
106 धन्ना अणगार, अग्नि शर्मा
107. स्वार्थ सिद्ध के देव, तन्दुल मत्स
108. खंधक मुनि, खधक मुनि के 500 शिष्य

प्रश्न 2

1 धर्मरुचि अणगार नागश्री
2 महावीर गोशालक
3 महावीर जमाली
4 सुदर्शना जमाली
5 श्रेणिक गोशाला
6 सयति राजा
7 धन्ना शालिभद्र को
8 मास्तुष मुनि
9 अरणिकाचार्य मरुदेवी
10 गजसुकुमार बाहुबली
11 चद्ररुद्राचार्य के शिष्य मेघरथ
12 अर्जुन माली गौतम स्वामी
13 दुर्मुख स्थूलभद्र
14 समुद्रपाल
15 सयति
16 धर्मरुचि रोहणिया चोर
17 पारस मैतार्य मुनि
18 इलायचि
19 मरुदेवी
20 इलायची
21 पाच पाडव गजसुकुमार
22 मरुदेवी भरत
23 जयन्ति
24 अरणिका पुत्र
25 18 पाप स्थान वैराग्य

प्रश्न 3

1 समरादित्य
2 मम्मण सेठ
3 किपाक फल
4 तत्व ज्ञान
5 वदन
6 तीर्थ
7 जीर्ण सेठ
8 वसुमति
9 झोली
10 कलह
11 रेवती
12 कुणाल
13 दुबरक्लोसिस
14 म्लेछ
15 बलभद्र
16 पद्मावती
17 रिष्ठपुर
18 पारसमणि तीर्थ
19 लक्ष्मण

प्रश्न 4

1 ✓
2 ✓
3 ✓
4 ×
5 ×
6 ×
7 ×
8 ✓

9 ✓
10. ×
11 ✓
12 ✓
13 ✓
14 ✓
15 ✓
16. ✓
17. ✓
18. ✓
19 ✓
20 ✓
21 ✓
22 ×
23 ×
24 ✓
25 ✓

1. समकित वती
2 सम्यग ज्ञान
3 ज्ञाता धर्म
4 वरुण
5 पवन
6 तप
7 नवकार
8 तीन लोक
9 रवी 10 मणिरथ
11. वज्र
12 पद्मलेश्या
13. रविन्द्र
14 सुभद्रा

समरो मंत्र भलो नवकार (1)

प्रश्न 1.

1. भगवती सूत्र कल्पसूत्र
2. 9
3 8
4. 35
5 68
6 नमो लोए सव्व साहूण
7 3
8 अरिहत सिद्ध
9. आ. उ. सा.
10 108
11 सफेद लाल पीला हरा काला
12 नमो लोए सव्व साहूणं
13. चौथे पद
14. 500
15 7
16. 50
17. शाश्वत
18. 108
19. आ उ. सा.
20. 14
21 पच मंगल महा सूत्र स्कन्ध है
22. 68
23 सद्गति मोक्ष देव
24 अरिहत सिद्ध
25. आ. उ. सा
26 नमो
27 अ सि आ उ. सा

28 असिआउसा अष्टापद सिद्धाचल आबु उज्जित गिरि साचोर
29 नरक
30 तीन
31 सिद्ध सेन दिवाकर
32 तीन
33 अल्प–भाव
34 पाच
35 आचार्य
36 नवकार मत्र
37 चार
38 आ उ सा
39 महानिशिथ
40 अनादि
41 एक लाख
42 3
43 चूलिका
44 नमस्कार नियुक्ति
45 दूसरे सिद्धपद
46 एक करोड
47 12 नवकार
48 नम्रता विनय
49 32
50 परमेष्ठि गीता
51 विद्याण
52 बाहर मे विमानिक
53 नमा सिद्धाण
54 पूर्व उत्तर
55 ॐ
56 7
57 वृद्ध नमस्कार फल
58 33
59 82
60 उपधान
61 8
62 39
63 4
64 एक कोडा कोडी सागरोपम
65 पापो
66 54000
67 प्राकृति
68 अरिहत सिद्ध
69 साधु
70 आ उ सा
71 सिद्ध
72 चार
73 अरिहत
74 सिद्ध
75 अरिहत सिद्ध
76 आ उ साधु
77 आ उ सा
78 अरिहत
79 सर्प
80 अमर कुमार
81 हुण्डक
82 आ उ सा
83 शिव कुमार

84 सुदर्शन
85. सर्प
86. सुभद्रा
87. कवल और सवल
88. 84 लाख
89. अनानु पूर्वि
पूर्वानु पूर्वि
पश्चानुपूर्वि
90. 180
91. सिद्ध सेन
92. 6-8
93. गुणो
94 सर्व
95. पदस्थ
96. देव गुरु व धर्म
97. अनत मति
98 बहुवचन
99. नवकार मंत्र
100 नवकार मत्र
101. एक करोड

प्रश्न 2

1. सवत्सरी 5
2 मरुदेवी 4
3. रोयणिया 4
4. मन्दोदरी 4
5. त्रस 2
6. बलभद्र 4
7 डोरी 2
8 नरक 3
9. वज्र ऋषभ 8
सधयण
10. कालोद घी 4
11. रति सार 4

प्रश्न 3नवकार

1 नव
2. नर
3. वन
4. कार
5 कर
6. कान

प्रश्न 4

1 अरिहंत
2. अरूहा
3. अर्हत
4. अरूह
5. अविचल
6. अविनाशी
7. वीतराग
8 जिनराज
9. परमेश्वर
10. जिनेश्वर
11 ईश्वर
12 भगवान
13. प्रभो
14 विभो
15 जगनाथ

16 अतुल
17 अरूपी
18 अगोचर
19 अभोगी
20 अजर
21 अमर

श्रावक व्रत सुरतरु फलियो (3)

प्रश्न 1

1 मोक्ष
2 14
3 मोह
4 12
5 96
6 त्रिकाल पूजा
7 जिन
8 अभिषेक
9 तिलक
10 पापो
11 साधु
12 इस जन्म
13 प्रतिक्रमण
14 सात
15 माता–पिता
16 गृह मन्दिर
17 720
18 19
19 देश
20 सात
21 देश विरति
22 शान्ति
23 36
24 तीर्थ
25 सामायिक
26 सात
27 कुछ भी नहीं
28 नवकार मत्र
29 5
30 पच्चखाण
31 उपवास
32 गुरु
33 11
34 साधर्मिक अनुकपा
35 रत्नत्रय
36 शास्त्रो अर्थ
37 48
38 पोषध
39 घरवले
40 सचित
41 नमो जिणाण
42 नशिले
43 पच्चीस
44 सात
45 17
46 नवपद
47 चालीस
48 सयम
49 मत्थएण वदामि

50. आलोचना
51. अष्ट
52. धर्म
53. प्रणाम
54. ज्ञान, साधारण, देव
55. पाच
56. तीन
57. 32
58. छानकर
59. 36, 450
60. 3
61. मूलचंद
62. कुमारपाल
63. मांस
64. 10
65. तीर्यंच, नरक
66. आयंबिल
67. 12
68. पीठ
69. रव
70. आरती दीपक
71. चौविहार
72. सूझता
73. दस
74. 33
75. दाई
76. नवकारसी
77. उणोदरी
78. आयंबिल
79. जिनवाणी
80. 22
81. 84
82. रात्री भोजन
83. प्रदक्षिणा
84. सवा
85. नीति
86. 17
87. दुःख
88. धर्म प्राप्ति
89. एक
90. 10
91. गुरु
92. 18, नवकार मंत्र बोलने
93. आनंद
94. 12
95. आनंद
96. विजय सेठ
97. स्वाध्याय
98. सुकृत, दुष्कृत
99. नीद्रा
100. पुण्या
101. छः

प्रश्न 2

1. सत्य व्रत
2. विमलांचल
3. जीव दया
4. वसुमती

5 करुणा
6 रूप
7 शासन
8 सज्जन
9 नल
10 रथ
11 सिद्ध लोक

प्रश्न 3
1 आनद
2 चुलपिता
3 चुल्लशतक
4 महाशतक
5 नदनी पिता
6 कामदेव
7 सुरादेव
8 कुडगोलिक
9 सालिही पिता
10 सद्दाल पुत्र

उत्तर

वीतराग वाटिका के पुष्प चुनिय (4)
1 विचार
2 वीर प्रम
3 वीतराग
4 विमलाचल
5 वीरा
6 विमलेश्वर यक्ष
7 विपदा
8 विनय घर
9 विपुल गिरि
10 विमल शाह
11 वीसस्थानक
12 विर धवल
13 विवाह पन्नती
14 वीरमती
15 विहार
16 विष्णु
17 वीरप्रभु
18 विनय विजयत्री
19 विमल नाथ
20 विजयादशमी
21 वीटि
22 वीस स्थानक
23 विभग ज्ञान
24 वीर विजय
25 विमोचन
26 विद्या देवी
27 विश्वास
28 विद्युत
29 विवेक
30 वीरा
31 वितमय पटनम
32 विजय
33 वीरचन्द गाधी
34 विपाक विजय
35 विदेह

36 विविक्त वसति सेवा
37 विद्युत कुमार
38. विक्रम राजा
39. बीस दिन
40. विपुल मति मन पर्यव ज्ञान
41 वीरा के
42 विजया दशमी
43. विजया
44 विशाल लोचन
45. विनमी
46 विलेपन
47 वियोग गति
48 वीस कोडा कोड़ी
49. विकलिन्द्रिय
50. विधुन्माली
51 बीस करोड
52 वीर प्रभु ने
53. वीणा
54. वीण्य का अभ्यास
55. वीणा रस
56 वीर्यान्तराय
57 विनय
58. विद्या
59. विशाखानन्दी
60. वीर रस
61. विजय सेठ विजया सेठानी
62 विज्ञान
63. वीरा
64 विजय विजयन्त
65 विष का प्याला
66 विकलेन्द्रिय
67 विश्वभूति
68. वीर प्रभु ने
69 विडियो
70. विनय कुमार
71. विच्छु
72. वीर वीर
73. विमल चिन्तामणि
74. विधि कारक
75. वीर्यान्तराय
76. वीर्या चार
77. विनिता नगरी
78. विविध कुसुम वर जाति
79. विविध पूजा सग्रह
80. विवाह पन्नती
81. विद्यामद
82. विजय मुहूर्त
83. विनिता नगरी
84. वियोग
85. विमल केवली
86. वीर प्रभु ने
87. वीतराग
88. विमलनाथ
89. विमलनाथ
90. वीस धनुष
91. विजया

92 विमलनाथ
93 विधुर
94 विरोचन ऋषि
95 विमलशाह मत्री
96 विप्र
97 वीरा मोरा गज थकी उत्तरो
98 वीटी
99 वीस वर्ष
100 वीर वीर
101 विकथा
102 विषय काठिया
103 विनय गुण
104 विक्रम सूरिनी
105 विशाल सम्पति
106 विनाश
107 विराट
108 वीर कृष्णा
109 विजय सिह
110 विद्युत वेग
111 विष कन्या
112 विनय गुण
113 विनय
114 वीर्यात्मा
115 वीतराग स्तोत्र

प्रश्न 2

1 मनोरमा 4
2 हाथी 2
3 वीरमती 4
4 रतीसार 4
5 नागकेतु 4
6 थमण पार्श्वनाथ 7
8 रेवती 3
9 तारगा 3
10 रक्षित सूरि 5
11 नवकार 5
12 हाथ 2
13 रावण 3

प्रश्न 3

1 भरत
2 सागर
3 शाति
4 कुथु
5 अर
6 मघवा
7 पदम
8 सनत्
9 जयवन्त
10 ब्रह्मदत्त
11 हरिषेण
12 सूमूम

प्रश्न 4

1 विम
2 चल
3 लाल
4 विमला
5 लालच

आओ ईश्वर का ध्यान करें (5)

प्रश्न 1

1 इन्द्र
2 इन्द
3 इन्द्रभूति
4 इलायची कुमार
5. ईश्वर
6 इज्जत ईर्ष्या
7. 21 हजार
8. इन्द्र प्रस्थ
9. इन्द्रिय
10. इन्द्रियो को वश मे
11. 21 हजार
12 51
13. ईरियावहिय
14 ईश्वर
15. ईर्या समिति
16 31
17. इन्द्र
18. 21 हजार
19. इच्छकार
20. 61 हजार
21. इन्द्र ध्वज
22. इन्द्र
23. इलावर्धन
24. इन्द्रप्रस्थ
25. 21 हजार
26. इडा
27 इल्य
28 इन्द्र ध्वजा
29 इटालियन
30. इह सथुओ
31 इजिनियर
32. इच्छा
33. इक्षुखड
34. इक्ष्वाकु
35 इकतालीस हजार
36 इम्तिहान
37. ईर्या पथिक
38. इन्द्र भूति
39. इक्षुरस
40. इन्द्रिय
41. इथर
42. इलायची कुमार
43. ईसामसी
44. इंगाल
45. ईहा
46. ईषिक देव
47. ईरिया वहियं
48. ईश्वर
49. ईर्या समिति
50 इन्द्र
51. ईशान
52. इंग्लिस
53. ईशान
54 इलाहाबाद

55 इद्रजीत
56 इज्जत
57 इजेक्शन
58 ईर्ष्या
59 ईमानदारी
60 इज्जत
61 इष्टदेव
62 इत्थ
63 ईरियावहिय
64 इन्द्रागाधी
65 इनाम
66 61
67 इगाल कर्म
68 इन्द्रमूति
69 इक्षुकार
70 इर्ष्या
71 21
72 इन्द
73 इर्या समिति
74 इत्र
75 इक्षुकार
76 इश्वर ब्रह्म
77 ईकाई राठोड
78 इलायची
79 इकाई
80 इलाहाबाद
81 इहतित्थ
82 इन्द्र धनुष
83 इदिय
84 इन्दौर
85 इशानेन्द्र
86 इलायची
87 21
88 इशाई
89 21 लाख वर्ष
90 इसाफ
21 इग्यारा महिने
32 इतवार
93 ईशान इन्द्र
94 ईर्ष्या
95 इन्द कुम
96 इत्वरिका
97 ई शित्व
98 इ शित
99 इच्छा निरोधनतप
100 21
101 इन्द
102 इडर
103 इद
104 इटाली
105 इपत्प्रागमरा
106 71, 80, 645
107 इग्यारह
108 इकतीसा
प्रश्न 2
1 इलायची

2 इच्छकार
3. इष्ट वियोग
4 इन्द्रा
5 इक्षुकराजा
6 इर्या समिति
7 इत्वरिक
8 इन्द्रियो को
9 इतिहास
10 इक्षुरस
11 इन्कमटेक्स
12 इन्द्रभूति
13 इह लोग
14. ईर्ष्यालु
15 इमानदारी
16. इन्सान
17 इश्वर
18 इन्सानियत
19 इकोवी नमुक्कारो
20 इच्छाकार
21. इरावली
22 इक्यावन
23. इषुकार
24. एकसठ हजार भोजन
25 इन्द्रिय जय तप
26 इन्द्रदत्त
27. इकतीस धनुष एक लाख
28. इहलोक भय
29 इन्द्रिय व्यापार
30. इषु गति
31. इन्सानियत
32. इष्ट
33 इतजार
34. इजिन
35 इरिया पाथिक
36. इकरार
37. इत्र
38 इगलिस
39. इंद्र
40. इंजिन
41. इशान कोण
42. इरियावहियं
43 इतजार
44. इकलोते
45. इन्सान

प्रश्न : 3

(अ) (1) चकू (2) चीर (3) माला (4) लार (5) इलायची (6) इलायची कुमार

(ब) (1) सूचना (2) लोच (3) नाच (4) सुना (5) सुलोचना सति (सुलोचनाश्री)

प्रश्न 4

1	ऋजुसूत्र नय	6
2	षटरस	4
3	भद्र सेठानी	3
4	जिन राज	5
5	नेमिनाथ	4
6	सर्वानुभूति	5
7	रघुवश	4
8	प्रीति	2
9	लक्षशिला	4
10	मदन रेखा	5
11	माउण्ट आबु	4
12	हरिभद्र सूरि	6
13	रोयणिया	4

प्रश्न 5

(1) त्रिपृष्ठ वासुदेव
(2) द्विपृष्ठ
(3) दत्त
(4) पुडरिक
(5) पुरुष सिह
(6) पुरुषात्तम
(7) स्वयप्रभ
(8) लक्ष्मण
(9) कृष्ण

उत्तर

देवाधि देवा चरण सेवा

प्रश्न 1

1 देवास देलवाडा
2 दशान भद्र
3 10 भव
4 देवलोक
5 देवभद्र
6 देवता
7 दया दाम दमन (
8 दुर्भविजीव
9 देवता भव रोगी
10 दुर्मुख राजा
11 देवकी कृष्ण
12 द्वेष
13 देवाधि देव
14 देवलोक
15 देवभद्र
16 देव
17 देवकुल
18 दशरथ
19 देवकी
20 दशवैकालिक
21 देव
22 दान
23 दशमी
24 देशविरति
25 दर्शनाचार
26 दश

27 दशरथ
28. दावानल
29. दिपक
30. देशा वगा सिक्क
31. दश लाख
32. दन्त वणिज्य
33. देवसी प्रतिक्रमण
34. दिवस चरिम
35 दर्शन विराधना
36. दश
37. दीन दुखियो की
38. दुर्जन
39. दिनकर
40 द्वारिका
41. दुशासन
42 दशाण भद्र
43. दिल्ली
44 देवाधि देव
45. देव दुदुभी
46. दिपावली
47 दैत्य दानव
48. दुर्बल
49 दर्पण
50 दधिवाहन
51 दश
52. दिशा
53 दूध दही
54 देव दुदुभी
55 देव
56 दर्शनावरणीय
57. दश
58. दुर्गति मे
59. दमयन्ति
60. देवेन्द्रनाथ
61. दर्शनावरणीय
62. दर्शन विनय
63 देवश्रुत
64. देवी
65. दत्त दामोदर
66 दुरितारी
67. देवानदा
68 देलवाड़ा
69 दशहरा
70 देवता
71. दडवीरज
72. 10 क्रोड
73 देव चन्द्र जी
74 दश
75 देव सेन
76. दानान्तराय
77. दुर्भाग्य दुस्वर
78 दर्शन पद
79 देवदुष्य
80. दशमव
81. दिगम्बर
82 दडक

83 दामोदर
84 दर्शन ज्ञान चरित्र
85 दीक्षा
86 दशमुख
87 दश
88 देवानदा
89 देवद्रव्य
90 दीक्षा
91 दशमुख
92 10 लाख
93 दामिनि
94 दूसरा देवलाक
95 देवद विप्र
96 देवसेन देवसेना
97 दुर्मुख
98 10 लाख मण
99 द्विपायन त्रःषि
100 दशमुख
101 देवशर्मा
102 देव विमान
103 देवका
104 देव सूरि
105 देवर्धिगणि
106 दुर्लभ राजा
107 दर्शाण
108 देवकरु
109 देवपाल

देवजसा दरशन करो

प्रश्न 2

1 देवर्द्धिगणि	5
2 वज्रस्वामी	5
3 जहर	3
4 सामायिक	4
5 दर्शाणभद्र	5
6 रक्षा बधन	5
7 शम्बुक	3
8 नमि	2
9 कपिल	3
10 रोयणिया	4

आड़ी चाबी

प्रश्न 3.

1. देशविरति	5
2. देवानंदा	4
3. तिर्यंच	3
4. विपाक	3
5. चरम	3
6. तिर्च्छालोक	4
7. नरक	3
8 रजोहरण	5
9. दमयन्ति	4
10 शस्त्र	2
11. कनक	3
12 चमडी	3
13. कपुर	3
14. मनक	3
15 एकत्व	3
16. तिमिर	3
17.खारा	2
18. कर्मग्रन्थ	4
19.केवल ज्ञान	5
20. रघुवश	4
21 5 सौ पाच सौ	3
22 यथाख्यात	5
23. तमप्रभा	4
24. णमो	2
25. तत्त्व	2
26. एकेन्द्रिय	4
27. लड्डु	2
28. ज्ञात	2
29. ज्ञान	2
30. हरण	3
31 मरू देवी	4
32. मन	2

कान्ति औरभ (7)

उत्तर

प्रश्न 1.

1. कांकदी
2. काचर
3. कांटोपर
4 कांपिला नगरी
5. कांच का महल
6 काल कौशिक
7. कामिनी
8 काकन्दक
9 कादम्बक
10. काई
11. करुणा
12. कास वृक्ष की
13. कार्मण
14. काल
15. कार्यण सधातन

16 कार्ति केय
17 काल
18 काजी का
19 कामित पूर्ण पार्श्वनाथ
20 कारिमर
21 कालियानाग
22 कारक
23 कारुणयावस्था
24 काय गुप्ति
25 कामरा
26 काक्षा
27 काल कूट जहर
29 कारगृह
30 कानडी
31 काल लक्षण
32 काव्य शक्ति
33 काष्ट कान्तिमान
34 कष्ट
35 कापोत
36 कार्तिक
37 काचली
38 कायक्लेश
39 काउसग्ग
40 कालोदधि समुद्र
41 काशी की झाझ
42 कायोत्सर्ग
43 काठियावाडी
44 कार्मण
45 कामी
46 कामी पुरुष
47 कालिदास
48 कार्तिक सेठ
49 कार्मिकी बुद्धि
50 कावडिया भामाशाह
51 कादा
52 काधवा
53 काय सवर
54 कार्तिक कृष्ण तीज
55 कालिकाचार्य
56 काछोली
57 कालु
58 काय पुष्य
59 काश्यद
60 काला
61 काश्यपी
62 काय योम –
63 काल सौकरिक
64 कागज
65 काकीनी
66 काल
67 काकदी
68 कामदेव
69 कायदड
70 काराग्रह
71 काश्यय

72 कार्तिक सेठ
73. काल
74 काय भोग संसप्प भोगे
75. कार्य
76. कार कार्तिक काय क्लेश,
77. काय गुप्ति
78 कालिकाचार्य
79 कान्ति
80 कार्तिकवद अमावस
81. कासी
82. काजल
83 काम राग
84. काला
85. काग
86 कार्मण
87. काश्यप
88 कापरडा पार्श्वनाथ
89 कादम्बरी
90 काशी
91 कावेरी
92. काम्बली
93. काराट पात्र
94 काया
95 कानखजूरा
96 काकनी
97 कार
98 काबु
99 कानुडा
100. कानिका
101. काल

प्रश्न 2.

1 काया
2 काजी
3. कांकण डोरा
4. काकरिया
5. कामना
6. काचली
7. कादम्बनी
8. कापालिक
9 काचनपुर
10. काशी राष्ट्र
11. कान्ति सूरि
12. काल
13. काया
14 कार्मण
15 कालिकाचार्य
16. कादम्बरी
17. कावी
18. काकनी रत्न
19. कामदेव
20. काल सौरिक
21. कार्मीकि बुद्धि
22 काल
23. काली
24 कायोत्सर्ग
25. काश्यप

26 काश्मीर
27 काजल
28 कार्मण
29 काया
30 कालोदधी
31 कार्तिक सेठ
32 कालिक सूत्र
33 काय क्लेश
34 काय याग
35 कार्मण काययोग
36 काम धेनु
37 कान्ति
38 कार्तिक
39 कालिक
40 काजु

प्रश्न 3

1	कनकरथ	2	काया
3	किरगत	4	कीलिका
5	कुभार	6	कूरगडू
7	केमरा	8	कैलारा
9	काणिक	10	कौशल्या
11	कठ	12	क

प्रश्न 4 कान्ति सागर सूरिणी

1 कान्ति
2 सागर
3 गज
4 जरा
5 हराग
6 राग
7 जटर
8 राग
9 गम
10 मगर
11 साजी

प्रश्न 5

1 अनुत्तर विमान 7
2 बल्लभीपुर 5
3 समय सुन्दरजी 7
4 रवीन्द्र नाथ 5
5 वेगड शाखा 5
6 रक्षित सूरि 5
7 वेमान 3
8 रजोहरण 5
9 नवलखा राणा कुम्भ 8
10 हीयमान 4
11 आहार प्रर्याप्ति 6
12 वेदान्तदर्शन 6

प्रश्न न 6

(1) जिनेश्वर सूरि
(2) अभय देव सूरि
(3) जिनदत्त सूरि
(4) जिन चन्द्र सूरि
(5) कुशल सूरि
(6) सुखसागर सूरि
(7) आनद सूरि
(8) देव चन्द सूरि
(9) समय सुन्दर जी
(10) दृष्टि सागर सूरि
(11) उदय सागर सूरि
(12) कर्षन्त सागर सूरि
(13) मणि प्रभ सागर सूरि

मणि आलोक (8)

करा म मा मि मी रा म म तक पश्न हल

1 मणि
2 मनुष्य
3. महावीर
4 मन
5 मोक्ष
6. मल्लीनाथ
7 मोहनीय
8. मरू देवी
9. मान
10. मानतुगाचार्य
11. महिला
12. माता
13. मासक्षमण
14 मस्तक
15. मूर्ति
16. माता
17. मृगापुत्र
18. मगध
19. महाविदेह
20. मोक्ष
21 मद
22. मादक
23 मदन रेखा
24 मिथिला
25. महापुरुषोका
26. मेघ रथ
27 मुहपत्ति
28 मगलाचरण
29 मच्छर
30 मयर हिय
31 महाभद्र
32 मैनासुन्दरी
33. मलीन
34. मदोदरी
35 मोतीलाल
36. मोती
37. मूला
38. मैथुन
39. महाविदेह
40. महामारी
41. मन के
42. मोहरी
43. महाकाल, माणवक, महापद्म
44. मरण
45. मतिमन पर्यव
46. मनोगुप्ति
47. मघवा
48 मगध पति
49. मनोरमा
50. मिथ्यात्व
51. मणिधारी दादा
52. मास मधु मक्खन
53. मार्गानुसारी
54. मल परिषह
55. मिथ्याकार
56 मान माया मूल
57 मृगावती
58 मरूदेवी
59. मणि प्रभसागर
60. मनक

प्रश्न 2.

1. महाभारत
2 महावीर
3 मिथ्यादर्शन

4 मत्थएण वदामी
5 मगल
6 महावीर
7 मोक्ष
8 मकडी
9 मृत्यु
10 मीठा
11 गिट्टी
12 ममता
13 मणिरथ
14 गाया
15 मणिवय स्वामी
16 मथरा
17 मेरा
18 मन
19 मत्र
20 मोक्ष
21 मीरा
22 मूह
23 मधुर
24 ममता
25 मच्छर
26 माफ
27 मदर
28 महाव्रत
29 मति मन पर्यव
30 मूल-भूल
31 मित्र
32 मूर्ति
33 मदरसा
34 मेतार्य
35 मानवता
36 मदिर
37 मदिर
38 मदिर मूर्ति
39 मोक्ष मोहा
40 मदिरा
41 मनोरथ
42 महामगल
43 महा निर्जरा
44 मनुष्य क्षेत्र
45 महाकाल
46 मघवा
47 महीधर
48 महासेन
49 मदन मोहन मालवी
50 मन्नारगुडी
51 महासेन
52 महाकाली
53 महेन्द्रपुर
54 महियाल राजकी
55 मनोरमा
56 महुवा
57 मधुवन
58 मति
59 मनक
60 मन
61 महाव्रतो
62 महेन्द्रराजा
63 महा
64 मन्दोदरी माणवय स्वामी
65 मम्मण
66 महापर्दव
67 मल्लयोद्धा

68 महायश
69 मदिरा
70 मयूर पख
71 महावीर
72 महाहिम वन
73 महत्तरा
74 महाविदेह
75 माध्यस्थ
76 मत्स्यमार
77 माता–पिता
78 मरणान्तिक
79 माउण्ड आबु
80 मान
81 मार्कोनी
82 माया
83 मातञ्जय विजय जी
84 मार्गाध्ययन
85 मानवता
86 मालकोश
87. मिश्रगुणस्थान
88 मित्र वाहन
89. मीमासा
90 मुहूर्त
91 मुनि सुव्रत स्वामी
92 मुदगर
93. मुष्टि
94. मुहम्मद गौरी
95 मुनि गिरि
96 मुक्ति निलय
97 मुक्ति
98 मोहनी
99 मोटेरा
100. मौर्य पुत्र
101 मौन
102 मेत्री
103 महान
104 मिथ्यात्व
105 मैशूर
106. मिरा
107 मागलिक
108. मेरू

प्रश्न 4.

1. मल्लवादी 4
2. हाथी 2
3 भक्तामर 4
4 द्रव्य 2
5. जिनपाल 4
6. नलराजा 4
7 रावण 3
8. जम्बु स्वामी 4

प्रश्न 4

1 महायक्ष
2 मातग
3 विजय
4. कुसुम
1. महाकाली
2 महाज्वाला
3 मानसी
4 महामानसी
5 काली

जिनेश्वर को नमन कर
महावीर का जाप करे
अरणिक मनक अर्जुनमाली गजसुकुमाल
अभय कुमार

मणिधारी जिनचन्द्र सूरि

प्रश्न 5

1 मणि
2 धारी
3 जिन
4 सूरि
5 चन्द्र
6 धाम

ज्ञान कला कुञ्ज (9)

उत्तर

प्रश्न 1

1 कमल
2 कर्म
3 कलश
4 कपर्दी
5 कल्याणक
6 कटपूतना
7 कलक
8 कर्ण
9 कस
10 कबूतर
11 कडवा
12 कपिल
13 कडरिक
14 [illegible]
15 कटरिक
16 करीन
17 कपिल
18 कपीला
19 कर्मदान
20 कस
21 कगन
22 कल्पसूत्र
23 कमल
24 कपिल
25 कडरिक
26 कडरिक
27 कडाई
28 कलह
29 कडरिक
30 कडवा
31 कलकत्ता
32 कलिग
33 कमलावती
34 काम्पिला
35 कपिल
36 [illegible]
37 [illegible]
38 कपट
39 [illegible]
40 [illegible]
41 [illegible]
42 [illegible]
43 [illegible]
44 [illegible]

45. करकडू
46 कमली
47. करकडू
48. कल्पात कल्प
49. कलियुग
50 कषाय
51 कवल
52. कटारिया
53. कपिल
54. करकडु
55. कमठ
56. कन्या कुमारी
57. कथपावोवी
58. कलावती
59. कल्पसूत्र
60. कमला
61. करेमिभते
62. कस्तूरी
63. कदम्बगिरी
64. करूणा निधि
65. कमठ
66. कल्पद्रुम सुधर्मा
67. कर्त्तव्य परायण
68. कम्पति स्वामी
69. कम्प्रिय
70. कंडरिक
71 कचन कामिनी
72 कंडरिक
73. कल्पतरू
74. कपिल
75. कच्छ
76. कंडरिक
77. कलिका चार्य
78. कल्पवृक्ष
79. कलियुग
80. कलकी
81. कंद मूल
82. कच्ची हल्दी
83. कथन करला गौ
84. कंदपा
85. करपात्र
86. कनक रथ
87. कलस
88. कदलीवन
89. कर्केतन
90. कपगल
91. कनक सेना
92. कल्पसूत्र
93. कछुआ
94 करूणा
95. कज्याणकंद
96. कठोर
97. कर्म
98. ककण पार्श्वनाथ
99. कल्याण पार्श्वनाथ
100. कमल पत्रवत

101 कर्म
102 करूणा
103 कटियारा
104 कल्प
105 करमाशा
106 कछुआ
107 कषाय
108 कर्ण फूल
109 कनक रथ
110 कनक
111 कनक खण
112 कण्टक
113 कर्मभूमि
114 कर्म सिद्धान्त
115 कल्पातीत
116 कषाय
117 कल्पवृक्ष
118 कनकवती
119 करण
120 कच्छ कच्छावती
121 कर्ण
122 कपिल
123 कथा
124 कर्कश कठोर
125 कडरवानी
126 कच्छुआ
127 ककसूरि
128 कनक सूरि कल्पपूर्ण सूरि
129 करेडा
130 करोड पूर्व
131 कषाय
132 कल्प पलि मन्धु
133 कलक
134 कराउ नही वचन से काया से
135 कल्पोप पन्न

प्रश्न 2

1 कर्म
2 कर्मभूमि
3 करेमिमते
4 कलह कपट
5 कल्पातीत
6 करूणा
7 कदर्प
8 कपिला
9 कषाय
10 कल्पसूत्र
11 कच्छुआ
12 कपट
13 कणविती
14 कर्णिका
15 कबीर
16 करण कदब
17 कर्म पवाद
18 कण्डरिक
19 कपिल
20 कदम्ब कदम्बक गिरि

21 कलिकुण्ड
22 कनक बाहू
23 कनक कमल
24 कवलाहार
25 कनोड्डु
26 कोशम्बी कमल कुसुम
27. करूणा
28 कर्म
29 कहानी
30. कण्ड
31. कलह
32 कमठ कष्ट
33. कमल
34. कगन
36 कल्पवृक्ष
37. कर्त्तव्य
38 कर्त्तव्य
40 कलिकुड
41 कलम
42 कल्याण मदिर
43 कमाई
44. कथा
45 कन्या कुमरी कनाल
46 करतल
47. कपूर
48. कयसना
49. करकड्डु
50 कवि कालिदास

शब्द लोक की सफर

आड़ी चाबी	खड़ी चाबी
1 राजमती	4
2. राजचन्द्र	4
3. तीन भुवन	5
4. द्रव्य	2
5 जनक	3
6. नल	2
7 कमल	3
8. गगन	3
9 ललिताग	4
10 कनकावली	5
11. कनक	3
12. नकुल	3
13 काल	2
14. लाभान्तराय	5
15 क्षिपरा	3
16 वज्रकुमार	5
17 कालिमा	3
18 कलह	3
19 मान	2
20. नवकार	4
21 रती	2
22 लव	2
23 तीर्थकर	4

प्रश्न 4

सभी अक्षरों को मिलाइये

अ 1 कचन
  2 गिरी

च 1 पुलाक
  2 कर्ण
  3 कला
  4 पूर्ण
  5 कलापूर्ण सूरि जी

स 1 कर
  2 वीर
  3 सागर
  4 रविन्द्र
  5 सार
  6 कसार
  7 रग
  8 सव अक्षर मिलाने से कवीन्द्र सागर सूरि जी

उत्तर

पर्व पर्युषण [illegible] लो रे (10)

प्रश्न 1

1 र[illegible]विचार
2 [illegible]
3 [illegible]
4 सूय
5 [illegible]
6 [illegible]
7 सुम[illegible]
8 सुमित्र
9 सुधर्मा
10 सूरसिह
11 सुमेरू
12 सुरेन्द्र
13 सुतारक
14 सुसीमा
15 सुमगला
16 सुयश्य
17 सुरभिगध
18 सूर्यप्रज्ञप्ति
19 सुमति
20 सुपार्श्व
21 सुबाहु
22 सुर सुन्दरी
23 सुर पुष्प वृष्टि
24 सुप्रतिष्ठित
25 सुर गिरि
26 सुरदेव
27 सुयड
28 सुधा सोदर याग ज्योत्सना
29 सुधा
30 सुग्रीव नगर
31 सुपड
32 [illegible]
33 सुगीत
34 सुन्दरी
35 [illegible]

36. सुभद्रा
37. सुलसा
38. सुयधम्मथुई
39 सुदिसू अ सुहिएसुअ
40. सुरपखा
41. सूर
42. सुदर्शना
43. सुवर्ण जैसी
44. सुमंगला
45. सुव्रत
46. सुभद्रा
47. सुभ्रम
48. सुभद्र
49 सुगध सुरभिगध
50. सूक्ष्म क्रिया प्रति पाति
51. सूक्ष्म सपराय
52. सुदेव सुगुरु सुधर्म
53. सुमेधा
54. सुलसा
55 सुराष्ट्र
56. सुप्रतिबुद्ध
57. सुदामा
58. सुपारी
59. सुमति थावर काय
60 सुदिपक्ष
61. सुलस
62. सूरज कुड
63. सुरमी अखंड कुसुम ग्रही
64. सुख सुख सुख
65 सुनद
66 सूरसेन
67. सुदर्शन चक्र
68. सुरदत्त सेठ
69. सूर्ययश राजा
70. सुझता
71 सुर सुन्दरी
72. सुघोसा सुधर्मा
73. सुदि 10
74. सुमित्रा
75. सुग्रीव
76. सुमित्र
77. सुप्रथा
78. सुविधिनाथ
79. सुभट वश
80. सुमेरु हाथी
81. सुग्रीव
82. सुखम
83. सुयशा
84. सुदृस्ति सूरि
85. सुव्रते
86. सुबाहू
87. सुलसा
88. सुवर्ण बाहू
89. सुविधि
90. सुमुख मंत्री
91. सूरदेव

92 सुयोद्धन
93 सुनेमि
94 सुहस्ति सूरि
95 सुदर्शन सेठ
96 सूर्य के समान
97 सूर्य कान्ता
98 सुकोशल
99 सुषमा
100 सुलोचन
101 सूर्य
102 सुव्रत
103 सुवर्ण
104 सुनन्दा
105 सुबन्धु
106 सुलोचनाश्री
107 सुज्येष्ठा
108 सुलसा
109 सुरसेन
110 सुकोशल
111 सुथरी तीर्थ
प्रश्न 2
1 दशा
2 श्रुत
3 स्कध
4 दशाश्रुत स्कध
प्रश्न 3
1 980 ध्रुवसेन
2 चार एक
3 3,7,21, सात आठ
4 मेघकुमार
5 चौथा
6 82
7 10/5
8 परभान्न बहुल ब्राह्मण
9 हकार मकार धिकार,
10 रथनेमी
11 50
12 प्रमाद के कारण
13 12,15
14 10,14,1,2
15 3 अरब 88 करोड 80 लाख
16 कानो म खिला निकालना
17 सगम देव ने 20 एक रात्री मे
प्रश्न 4
1 2
2 3
3 4
4 नाभि कुलकर
5 1 वर्ष अधिक 1 मास
6 ऋषभ श्रेयास
7 नेमि
8 भद्रबाहु स्वामी स्थूल भद्र
9 अभयदेव सूरि
प्रश्न 5
1 प्रिय दर्शना
2 सुदर्शना
3 नदीवर्धन

4. चेटक
5 सुपार्र्व
6 यशोदा
7 जमाली
8 विदेहदिन्ना
9 शेषवती
10. समरवीर

उत्तर

प्रश्न 1

तीर्थ दर्शन कर भव सागर तरिये

1 शत्रुजय
2 गिरनार
3 शखेश्वर
4 उपरियालाजी
5 भोयणी
6 खभात
7 पावगट
8 कावी
9 गन्धार
10 भरुच
11 झगडिया
12. लोढण
13 तारगा
14 भिलडियाजी
15 नवखडा पार्श्वनाथ
16 हस्तगिरि
17 वल्लभीपुर
18 कुभारिया
19 मेत्राणातीर्थ
20. मोटापोसीनातीर्थ
21. महुआ
22 कदम्बगिरि
23. भोटोल तीर्थ
24 गाभू तीर्थ
25 नालिया तीर्थ
26 नवखडा घोघा
27 चम्पापुरी
28. परमलताल
29 हस्तिनापुर
30 कठगोला
31. अनीम गज
32. मथुरा
33 जेसलमेर
34 काकन्दी
35 चित्रकूट
36 महिमापुर
37 सौरीपुर
38. लोद्रवा
39. केशरियाजी
40. करोडा
41. देवकुल पाटक
42. नाडलाई
43 चन्द्रपुरी
44 मोढेरा
45 सुथरी
46 तालध्वज (तलाजा)

47 नान्दिया
48 देलवाडा
49 अमर सागर
50 हस्तगिरि
51 प्रभास पाटण
52 भद्रश्वर
53 माण्डवगढ
54 बिम्बडोम
55 परासली
56 भक्षी
57 कुम्भाज गिरि
58 अमरावती
59 नागेश्वर
60 रत्नपुरी
61 डुगरपुर
62 बामणवाडजी
63 भिनमाल
64 जीरावला
65 अष्टापद
66 वट पद्र तीर्थ
67 सिहपुरि
68 कौशाम्बी
69 अयोध्या
70 काम्पिल्य
71 ब्रह्मसर
72 जेसलमर
73 नाकोडा
74 फलवृद्धि पार्श्वनाथ
75 भद्रेश्वर
76 अना तीर्थ
77 तेरा तीर्थ
78 गिरनार
79 अजादश पार्श्वनाथ
80 वालम तीर्थ
81 कुमारिया जी
82 गधार
83 लक्ष्मतीर्थ
84 सिद्धवर कुट
85 भोपावर
86 सोन गिरि
87 आगासी
88 अतरिक्ष
89 कुलपाक
90 भेलुपुर तीर्थ
91 अचलगढ तीर्थ
92 जीरावला
93 मुण्डस्थल
94 नाणा बेडा नान्दिया
95 हथुण्डी राता महावीर
96 वर काणा
97 नाडोला
98 पार्श्वमणि तीर्थ
99 अष्टापद
100 सिद्धाचल
101 अपटापट
102 नदीश्वर द्वीप

103. नदीश्वर द्वीप
104. सम्मेत शिखर
105 पुपकरार्ध द्वीप
106 त्रिपति, हरिद्वार, ऋषिकेश,
107 अष्टापद नदीश्वर
108 महाविदेह क्षेत्र

प्रश्न 2

विहर मान के नाम

1 बाहु
2 सुबाहु
3 सुजात
4 अनतवीर्य
5 सुरप्रभ
6 विशाल
7 वज्रधर
8 चन्द्रानन
9 प्रषभानन्न
10 महासेन
11 देवसेन
12 अजितवर्य

प्रश्न 3

1 अवन्ति 3
2 कापरडा 4
3 थराद 3
4 नीतोडा 3
5 आबु 2
6 शेरीसा 3
7 तलाजा 3
8 नाकोडा 3
9. नालिया 3
10 वितभय पटनय 8
11. टाणकपुर 5
12. अतरिक्ष 4
13. चलिये 3

प्रश्न 4

1 सुर
2. सुरज
3 रज
4. सुण्ड
5 जलाशन्द (सुरजकुण्ड)

उत्तर

गिरिवर दर्शन विरला पावे

प्रश्न 1

1 सवालाख
2 आदिनाथ भगवान
3 64 इन्द्र
4. भरत
5 अम्बिका
6 23
7 36
8 चैत्री पूनम
9 भरत
10 सूर्यावर्त
11 रायणरुख
12 भरत
13 कपर्दी कवड

14 गिरिराज की त्रिकाल वदना
15 इशानेन्द्र
16 करमासा
17 स्वर्ग नाम गिरि शिखर
18 जय तलेटी
19 त्रैलोक्य विभ्रम
20 शत्रुजय
21 धनेश्वरसूरि
22 बडनगर
23 एक हजार
24 चातुर्मास
25 नदी वर्धन
26 1 करोड
27 शत्रुजय
28 माणक चद
29 श्रावक
30 इन्द्र
31 श्री नाम गणधर
32 99 पूर्व
33 12
34 चिलन
35 पुडरिक गणधर 5 करोड
36 आनद पुर नगर
37 धन पति सिंह
38 श्रीनाभ गणधर
39 स्वर्ग सुख
40 अम्बिका

41 भरत
42 8
43 108
44 तीन क्रोड
45 6
46 10 क्रोड
47 दो
48 5
50 स्वर्ग
51 ढाई कोस
52 विकमशी
53 दडवीर्य राजा
54 हस्तनी
55 चाथे
56 बाह उशाह
57 वस्तुपाल
58 15 87
59 विधामण्डन सूरि
60 1587 विधामण्डन सूरि
61 ताराचन्द्र
62 पाच
63 उजमफई की
64 प्रेमावसाही
65 प्रेमावसही मोदी
67 शुकराज
68 चन्द्र
69 रायण वृक्ष
70 स्वर्ण गुफा

71 सोजे की

72 विमल गिरि

73 पुष्पदत गिरि

74 कैलास गिरि

75 कदम गिरि

76 पादलिप्त सूरि

77 आठम

78 चैत्र वद आठम

79 जवड शाह

80 शत्रुजय

81 शृगार सुन्दर युगादिदेव

82 15

83 ऋषभ देव अजितनाथ

84 20 क्रोड

85 91

86 8

87 कार्तिक पूनम

88 4

89 विमह वाहन

90 देवकी

91 शाम्ब प्रदुम्न

92 माघ वद तेरस

93 वैशाख वद छट्ठ

94 दो

95 रामचन्द्र जी

96 श्रीनाभ गणधर

97 सुहस्तिनी

98 दो

99. सगर

100. समर

101. दो

102 18 फुट

104 24 हजार

104. 15 255 777

105. 57

106. चौमुख

107. सवा दो मील–3750

108. 7

प्रश्न 2

1 अरिहंत

2. नवकार

3. सिद्धचक्र

4 शुक्लध्यान

5. शत्रुजय

6 पर्युषण

7 अभयदान

8 कल्पवृक्ष

9 मेरु पर्वत

10 ब्रह्मचर्य व्रत

11 भगवती

12 स्वयम्भू रमण

13 केवलज्ञान

14 स्वाती

15 चन्द्रकान्त

12 तीर्थ को
13 सायिक
14 4
15 अभत्य
16. सचित
17 चौतीस
18 चार
19 पूर्व
20 80
21 12
22 कुर्मापुत्र
23. केवल
24. 35
25 महावीर
26 कर्म शत्रु
27. 12
28 3
29 3
30 शक्रस्तव
31 32
32 170
34 6
35 अजितनाथ
36 11
37 कमल
38
39 निहार
40 झुकते
41 स्वर्ग
42 पक्षी
43. उलटे
44 सहित
45. 4
46. श्री चदने
47. मुक्त
48 8
49. मालकोश
50 खड़गासन
51 9
52 प्रथम
53 अघाती
54. समचतुर
55. 3
56 3
57. 64
58 56
59 छत्र
60 1008
61 सफेद
62 वात्सल्य
63 स्वय
64 सांवत्सरिक
65 महावीर
66 लोकान्तिक
67 पाच
68 मनः पर्यव
69 तीन
70 वीतरागता

प्रश्न 3

1 जलधर
2 वरदत्त
3 गगाधर
4 पद्मनाथ
5 हरिहर
6 महोधर
7 सागर चद्र
8 नेमिप्रभ
9 कर्णभद्र
10 अजितभद्र
11 राजेश्वर

पावन ज्ञान गंगा

उत्तर

प्रश्न 1

1 पचमगल सूत्र
2 पद्मप्रभुजी
3 पवनजय
4. पक्षाल
5 पडिक्कमण
6. पद्मनाथ
7 परमानन
8 पद्मसरोवर
9 पच मुष्ठि
10 पर्यपण पर्व
11 पन्नवणा
12 पश्चिम
13 पर्वत की दरार
14 परमाणु
15 पल्योपम
16 पडिलेहण
17 पद्मलेश्या
18 परिभोग
19. परमात्मा
20 परिग्रहपरिमाण व्रत
21 पचेन्द्रिय वध
22 पशुओ को
23. परिष्ठा पनिका
24 परिवेदना
25 पदस्थ ध्यान
26 परिवर्तना
27. पच्चिस
28 परव्यपदेश
29. परिहार विशुद्धि
30 पवित्र
31 पद यात्रा
32. पचास
33 परदेशी राजा
34 पर्याय
35. परिमडल सस्थान
36 परलोक प्रशसा
37 पर्याप्ति
38 पर्यायार्थिक नय
39. पहुच्च मक्खिदण
40 परमाणुवाद
41 परोपकार प्रमाणिकता

97 पच्चखाण भाष्य
98 परिणाम अच्छा मिलता है
99 पर्युपासना
100 परपरिवाद
101 पद्मावती

प्रश्न 2

1 पल
2 पचाग
3 पदार्थ
4 परिश्रम
5 पल्योपम
6 परिग्रह
7 पथिक
8 परितापना
9 पराकाष्ठा
10 परावर्तन
11 परमहस
12 परिमाण

पद्मसरोवर

प्रश्न 3

1 पद्म
2 सरोवर
3 सर
4 वर
5 रस

प्रश्न 4

1 इक्षुकार
2 महावीर
3. पुणिया
4 जबडशाह
5 भरत
6 गर्दतोय
7. कल्पवृक्ष
8 रोहगुप्त

जिन शासन के चमकते सितारे

उत्तर

प्रश्न 1

1 गजसुकुमाल
2 चद्ररुद्राचार्य
3 अतिमुक्तक
4 सिदर्शी, ललित विस्तार
5 धनपाल, कुमारपाल
6. आर्य रक्षित
7. पादलिप्त सूरि
8 कुमारपाल
9 सान्तनु
10 धर्मघोष
11 प्रसनचन्द्र
12 अरर्णिका पूत्र
13 उदयन
14 मेघरथ
15 शान्तिनाथ का पूर्व भव
16 धन्नाजी
17 नदीषेण
18 हरिभद्रसूरि
19 स्कन्धक

74. धर्मरूची
75. पेथडशाह
76. आर्द्र कुमार
77. मेघ कुमार
78. रोहणिया, जिनवाणी
79 रत्नाकर
80. धन्ना काकदी
81 कालिक
82. स्थुलिभद्र
83 मेतार्थ मुनि
84 नेमिनाथ
85. धर्म रूचि
86. संयति राजा
87. समुद्रपाल
88. स्थुलिभद्र
89. नग्गई राजा
90. जम्बु कुमार
91 मनक
92 नमुचि, विष्णु कुमार
93 सीता
94 रावण
95. अवंति सुकुमार मुनि
96 सुकुमार सेन
97 लुणिग वसही
98 स्थुलिभद्र
99 कुमारपाल
100 दर्शणभद्र
101 शालकाजी
102. गौतम स्वामी
103. सुबाहु, शालिभद्र
104. विजय सेठ सेठानी
105. मेघरथ राजा
106. पुण्डरिक
107. रोहणिया
108. धन्ना सेठ
109. इक्षुकार राजा
110. मम्मण सेठ
111. कीर्ति ध्वज
112 अवंति
113. नयसार बलभद्र
114. नेमिनाथ, उदयसागर जी
115. समुद्रपाल
116. चेटक
117. धन्नाजी
118 बाहुबली
119 थावच्चा पुत्र
120 अभिची
121 प्रसन्नचंद
122 गौतम स्वामी, चंदनबाला
123 अर्जुनमाली
124 रतिसार
125. गुणचंद्र
126 वलकल चिटी
127 खंधक मुनि
128 बाहुबली
129 कुर्मापुत्र

130 भरत
131 अइमुक्ता
132 पृथ्वी चद्र
133 गौतम स्वामी
134 आषाढी भूति
135 इलायची पुत्र
136 नागकतु
137 झाझरिया
138 कुरकुडु
139 चद्ररुद्राचार्य
140 चद्रकद्राचार्य के शिष्य
141 अभय कुमार
142 ऋषभ देव क 98 पुत्र
143 धर्मरुचि
144 स्कन्धदक सूरि
145 नदीषण
146 हनुमान
147 तेतली पुत्र
148 नमि राजर्षि
149 युगबाहु
150 नदिषण
151 अभयदव सूरि

प्रश्न 2

1 मरुदवी माता
2 नागश्री
3 [illegible]
4 [illegible]
5 [illegible]
6 ब्राह्मी सुन्दरी
7 मदन रेखा
8 सुलसा
9 सीता
10 राजुल
11 देवनदा
12. जयति श्राविका
13 नागश्री
14 चपा
15 मृगावती
16 पुष्पचुला साध्वी
17 राजा श्रेणिक की दस रानिया
18 राजिमती
19 रेवती
20 विशलया
21 पुष्पचुला साध्वी

अभयदेव सूरिजी

प्रश्न 3

1 अभय
2 भय
3 देव
4 सूरि
5 अरि
6 जीव
7 भव
8 अभय
9 जीभ
10

प्रश्न 4

1. अमर कुमार
2 अभय कुमार
3. आद्र कुमार
4. वज्र कुमार
5. खंदक
6. अरणिक
7 प्रभव
8. जंबू कुमार
9. मनक
10. भरत
11. बाहूबली
12. गजसुकुमार
13. मैतार्य

पंक्ति—अब हम अमर भये ना मरेंगे

प्रश्न 5

1 अजितनाथ
2. बलदेव
3 हरिश्चंद्र
4. महेन्द्र राजा
5 अमर कुमार
6. मम्मण सेठ
7. रतिसार
8. भव्य
9. ये योगिनाऽपि
10. नाभि राजा
11. महाविदेह
12. रेवती
13. गेहाकारा

जैन धर्मोऽस्तु मंगलम्

उत्तर

1. आर्य रक्षित
2. देवर्धि गणि
3. सिद्धसेन दिवाकर
4. मानतुग सूरि
5. मानदेव सूरि
6. हरिभद्र भट्ट
7. सहस्रमल्ल
8 सिद्धर्षि गणि
9. बप्पभट्ट सूरि
10. नागार्जुन
11. तिलक मंजरी
12. अभयदेव सूरि
13 वादिदेव
14. चन्द्रप्रभ सूरि
15. हेमचन्द्र सूरि
16 कालिका चार्य
17. उदयन मंत्री
18. कुमार पाल
19. जमाली
20. गौतम स्वामी
21. कोशा
22. जबू स्वामी
23. स्थूलभद्र
24. मनक
25. सप्रति

26 शय्य भवस्वामी
27 वज्र स्वामी
28 भद्रबाहु स्वामी
29 वज्रसेन
30 स्थूलभद्र
31 आर्य महागिरि
32 आर्य समित सूरि
33 आर्य रक्षित सूरि
34 सिद्धसेन
35 पादलिप्ताचार्य
36 रत्नप्रभ सूरि
37 जिनेश्वर सूरि
38 चन्द्र सूरि
39 अभयदेव सूरि
40 जिनवल्लभ सूरि
41 जिनदत्त सूरि
42 मणिधारी जिनचन्द्र सूरि
43 कुशल सूरि
44 जिनचन्द्र सूरि
45 विनयप्रभ उपाध्याय
46 समय सुन्दर जी
47 देवचन्द्र जी
48 आनन्दघन जी
49 क्षमाकल्याणक जी
50 सुखसागर जी
51 श्रीमद् रायचन्द्र जी

तीन की करामात

प्रश्न 2

1 विनय विवेक विचार
2 उपन्नेवा विग्नेवा ध्रुवेवा (उत्पाद व्यय ध्रौव्य)
3 सरलता समता सदाचार
4 माया नियाणा मिथ्यात्व
5 दया दाम दमन
6 तप त्याग तन्मयता
7 सम्यक ज्ञान सम्यक दर्शन सम्यक चरित्र
8 श्रद्धा शील सत्य
9 पद प्रतिष्ठा पैसा
10 चिन्ता विषय कषाय
11 आधि व्याधि उपाधि
12 जरा रोग मृत्यु
13 अहिंसा अपरिग्रह अनेकांत
14 स्त्री वेद पुरुष वेद नपुंसक वेद
15 सम्यक दृष्टि मिथ्या दृष्टि मिश्र दृष्टि
16 मन योग वचन योग काया योग ।

जिनदत्त सौरभ

उत्तर

प्रश्न 1

1 धोलका सोमचन्द्र
2 बाघगजी बाहडदेवी हुवड
3 9 वर्ष
4 अशोकचन्द्र सूरि

5. जिनेश्वर सूरि
6 जिनदत्त सूरी, उज्जैन
7 जिनदत्त सूरि
8 गिरनार पर्वत पर, अम्बिका देवी की
9 उज्जैन के महाकाल के मन्दिर से
10 अजमेर
11 बडनगरी
12 सिमधर स्वामी
13. एक लाख तीस हजार
14 जिनदत्त सूरि ने, मणिधारी
चन्द्र सूरि को
15 जिनदत्त सूरि ने उज्जैन मे
16 चित्तौडगढ, वैशाख कृष्ण 6
17 विक्रमपुर
18 57
19. सदेह दोहावली चचरी, प्रकरण, श्रुतस्तव गणधर सादृशतक, सर्वाधिमष्टी स्तोत्र
20. चित्तौडगढ
21. मत्री लूणाशाह के सर्प देशे पुत्र को जीवन दान देकर
22 सुलतान के पुत्र का
23. सूरत
24. पाटन
25. रासानु दादा इव सर्व देवा
26 जिन वल्लभ सूरि ने, देवभद्र सूरि जी को
27. जिनदत्त सूरि
28. संवत् 1211 आषाढ शुक्ला 11, अजमेर
29. जिनदत्त सूरि
30. जैसलमेर
31. दस हजार से अधिक

प्रश्न 2

1. चन्द्रसूरि
2. लोच
3. संगम
4. घडी
5. सम्मेत शिखर
6 बलदेव
7. पूरण सेठ
8 जनक
9. नरक
10. कोशा

पंक्ति—
"चलो संघ सब पूजन को"

जि	न	द	त्त	प	श्री
ने	नि	ना	थ	यू	जि
ख	सु	र	ति	ष	न
र	जो	ह	र	ण	कु
ज	ग	ज	ज	मा	श
त	नी	ल	म्	न	ल

■ ■

द्वितीय विभाग

नवकार महामन्त्र

1

इस सूत्र का शास्त्रीय नाम श्री पचमगल महाश्रुतस्कन्ध है क्योकि अरिहन्त सिद्ध आचार्य उपाध्याय और साधु इन मगलभूत पॉचो परमेष्ठियो को इस सूत्र द्वारा नमस्कार किया गया है। इसके जाप स्मरण से विघ्न दूर होते है व अचिन्त्य शक्तियॉ प्राप्त होती है। इसलिए इसको महामन्त्र कहते है। यह चौदह पूर्व का सार है। यह मन्त्र भगवती सूत्र कल्पसूत्र से उद्‍धृत है। इस मन्त्र की अपूर्व महिमा शास्त्रो मे वर्णित है।

शब्दार्थ

णमो अरिहताण	अरिहन्त भगवन्तो को मै नमस्कार करता हूँ।
णमो सिद्धाण	सिद्ध भगवन्तो को नमस्कार करता हूँ।
णमो आयरियाण	आचार्य भगवन्तो को नमस्कार करता हूँ।
णमो उवज्झायाण	उपाध्याय महाराजो को मे नमस्कार करता हूँ।
णमो लोए सव्वसाहूण	लोक म रहे हुए सभी साधुओ को मैं नमस्कार करता हूँ।
एसो पच णमुक्कारो	इन पॉचो को किया हुआ नमस्कार
सव्वपावप्पणासणो	सब पापो का नाश करने वाला है।
मगलाणच सव्वेसि	
पढम हवई मगल	सभी मगलो मे श्रेष्ठ मगल है।

प्रश्न 1 णमो अरिहन्ताण के क्या क्या अर्थ हो सकते हैं--

उत्तर--(1) अरि = अन्त शत्रु = राग द्वेष हन्ताण = नाश करने वालो को णमो = नमस्कार करता हूँ। राग व द्वेष आत्मा के वीतराग भाव के

अनादिकाल से शत्रु बने हुए है उनका नाश करने वाले जिन अरिहन्त बनते है।

(2) अरि = घाति कर्म रूपी शत्रु, हताण = नाश करने वालो को णमो = नमस्कार करता हूँ।

प्रश्न 2. घाति कर्म किसे कहते हैं–

उत्तर–आत्मा के मुख्य गुण ज्ञान, दर्शन, चरित्र व वीर्य का घात करने वाले कर्म घाति कर्म कहे जाते है। घाति कर्म के मूल चार भेद है–

ज्ञानावरण, दर्शनावरण, मोहनीय, अन्तराय।

इन चार घाति कर्मो का नाश करने से अरिहन्त बनते है।

माला के 108 मणके क्यो ?

12 + 8 + 36 + 25 + 27 = 108

3. नमो अरिहन्ताण अर्हन्तो को नमस्कार करता हूँ। अर्हद यानि देव इन्द्रादि से पूजने, योग्य केवल ज्ञान होने पर इन्द्र भी सेवा के लिये उपस्थित होते है तथा कम से कम करोड़ देवता हमेशा भगवान की सेवा के लिये सदा तैयार रहते है। अरिहन्तः जिनेश्वर आदि पर्यायवाची नाम है।

प्रश्न 3. नमो अरिहन्ताणं में बहुवचन क्यों है ?

उत्तर–भूतकाल मे जितने अरिहन्त भगवन्त हुए है, भविष्य मे जितने होगे, और वर्तमान मे जितने हैं उन सबको नमस्कार करने के लिये बहुवचन का प्रयोग किया गया है। जैन दृष्टि से अनन्त भगवन्त माने गये है।

प्रश्न 4. अरिहन्त भगवान चार कर्मो के नाश होने पर बनते हैं जबकि सिद्ध भगवन्त आठों कर्मो के क्षय होने पर बनते हैं। इस प्रकार शुद्धि की अपेक्षा से सिद्ध की आत्मा अरिहन्त की आत्मा से अधिक शुद्ध है तो फिर अरिहन्तों को पहले नमस्कार क्यों किया गया है ?

उत्तर–सिद्ध बनने का मार्ग व सिद्ध का स्वरूप अरिहन्त ही बताते है शरीर आदि न होने से सिद्ध नही बताते। इसलिए पहले अरिहन्त को बाद मे सिद्ध को नमस्कार किया गया है। यहाँ पर उपकार दृष्टि को प्रधान रखा गया है।

प्रश्न 5. अरिहन्त भगवान के कौन से 12 गुण होते हैं ?

उत्तर–अरिहन्त भगवान के 4 अतिशय + 8 महाप्रतिहार्य = 12 गुण होते है।

प्रश्न 6 अतिशय किसे कहते हैं ?

उत्तर—अतिशय यानि उत्कृष्टता = विशेष चमत्कार वाले गुण जो दूसरे मानव व देवो म न हो सके वे अतिशय अरिहन्त भगवन्तो म 4 होते हैं।

प्रश्न 7 अतिशय कौन से होते हैं ?

उत्तर—(1) पूजातिशय—भगवान की भक्ति के लिये 64 इन्द्र व देव सेवा के लिये उपस्थित रहत है जब भगवान विहार करते हैं तब देवता उनके पैरो के नीचे 9 कमल बनाते हैं चामर डोलते है इत्यादि पूजातिशय स होता है। दूसरे सभी केवल ज्ञानियो के इस प्रकार का अतिशय नहीं होता है।

(2) वचनातिशय—अरिहन्त भगवान अर्धमागधी भाषा मे बोलते है किन्तु जानवर पशु पक्षी मनुष्य आदि सभी प्राणी अपनी-अपनी भाषा मे समझ सकते है। उनके वचन 4 कोस तक सुनाई देते है। परन्तु दूसरे सभी केवल ज्ञानियो के वचनो मे यह सामर्थ्य नहीं होता है।

(3) ज्ञानातिशय—केवल ज्ञान होने से भूत भविष्य व वर्तमान काल के पदार्थों को व तीनो लोक के द्रव्य गुण एव पर्याय को जानते हैं। प्रभु का ज्ञान जगत को बोध दने वाला होन से यह भगवान का ज्ञानातिशय है। यद्यपि अन्य केवल ज्ञानी जीवो को बोध दे सकते हैं परन्तु अनुत्तरवासी देवो को तो तीर्थंकर ही बोध दे सकते है।

(4) अपायापगमातिशय—अपाय—नुकसान करने वाले राग द्वेष विघ्न उपद्रव आदि अपगम दूर करना/भगवान के राग द्वेष दूर हो जाते हैं। वे जहाँ भी विचरते हैं वहाँ 500 कोस तक मारी मरकी टिड्डी पतगा आदि के उपद्रव शत्रु सेना का आक्रमण व देश द्रोह नहीं होते है।

प्रश्न 8 प्रतिहार्य का क्या अर्थ होता ?

उत्तर—प्रतिहार—द्वारपाल के सामने सेवा क लिय इन्द्र द्वारा नियुक्त किये हुए देव उनका कार्य = प्रतिहार्य। प्रवचन सारोद्धार में कहा भी है कि 'प्रतिहारा इव। प्रतिहारा = सुरपति नियुक्ता देवा तेषा कर्मणि प्रतिहार्याणि' प्रतिहार्य आठ होते हैं व इस प्रकार होते है —

(1) **सिंहासन**—रत्न जिसमे लगे हुए हो ऐसा सुवर्णमय सिंहासन आकाश मे चलता है जहॉ भी देशनादि के लिये भगवान बैठते है वहॉ सिहासन नीचे आकर योग्य स्थान पर स्थापित हो जाता है।

(2) **चामर**—रत्न जिसमे लगे हुए हो ऐसे सुवर्णदण्ड वाले श्वेत चामर भगवान के दोनो तरफ होते है।

(3) **भामण्डल**—कर्मक्षय के कारण भगवान अरिहन्त का रूप इतना तेजस्वी बन जाता है कि वह सूर्य के प्रचण्ड रूप के समान दुरालोक बन जाता है। अर्थात् कर्मक्षय होने पर शरीर का तेज इतना होता है कि ऑखे चकाचौंध हो जाती है। अत भगवान का रूप देखा नही जा सकता। इसलिये अरिहन्त भगवान के शरीर मे से तेज को इकट्ठा करके भगवान के पीछे के भाग चक्र के आकार मे तेज पुज देवता बनाते है।

(4) **छत्रत्रय**—मोतियो के हारो से सुशोभित तीन छत्र आकाश मे चलते है और भगवान जहॉ देशना देते है वहॉ पर भगवान के मस्तक पर तीन छत्र आ जाते है। मानो वे सूचित करते है कि आपने तीन लोक का साम्राज्य प्राप्त किया।

(5) **पुष्पवृष्टि**—डठल नीचे हो और पखुडियॉ ऊपर हो इस तरह पॉच रगो के पुष्पो की वृष्टि घुटनो तक एक योजन क्षेत्र मे देव करते है। जिससे चारो बाजू का क्षेत्र सुगन्ध से मघमघायमान बन जाता है।

(6) **अशोक वृक्ष**—समवसरण मे जहॉ भगवान बैठते है वहॉ भगवान के बारह गुना ऊँचा एक योजन की परिधि वाला अशोक वृक्ष देव बनाते है। उसके ऊपर चैत्यवृक्ष होता है। चैत्य वृक्ष का मतलब उस वृक्ष से है जिसके नीचे खडे रह कर परमात्मा को केवल ज्ञान हुआ हो।

(7) **दिव्यध्वनि**—मालकोश वगैरह राग की ध्वनि देशना के समय देव करते है जिससे श्रोतागण के हृदय आनन्द विभोर बनते है।

(8) **दुन्दुभि**—भगवान के आगे आकाश मे आवाज करती हुई दुन्दुभि चारो ओर लोगो को यह सूचना देती है कि मोक्ष नगर के सार्थवाह के समान भगवान आये है उनकी आप शरण लीजिए।

प्रश्न 9 नवकार मन्त्र के अन्दर पहले नमो शब्द क्यो है ?

उत्तर—जैन दर्शन के अन्दर कोई भी क्रिया विनय पूर्वक होनी चाहिए और धर्म का मूल भी विनय है इसलिये उस विनय को लाने के लिए पहल नमो बोला जाता है।

प्रश्न 10 अरिहन्त के कितने प्रकार है उनको समझाईये ?

उत्तर—अरिहन्त के चार प्रकार है—

नाम अरिहन्त—जैसे महावीर स्वामी दामोदर शब्द आदिनाम अरिहन्त कहलाते है।

स्थापना अरिहन्त—अरिहन्त की प्रतिमा फोटो आदि स्थापना अरिहन्त कहलाते है।

द्रव्य अरिहन्त—अरिहन्त भगवान के जीव जो भूतकाल मे अरिहन्त हो चुके या भविष्य मे अरिहन्त बनने वाले हो वे द्रव्य अरिहन्त कहलाते है। जैसे श्रेणिक महाराजा कृष्ण रावण आदि भविष्य मे अरिहन्त बनने वाले है। इसलिये वे भी द्रव्य अरिहन्त कहलाते है।

भाव अरिहन्त—तीर्थंकर नाम कर्म का उदय होने पर समवसरण म बैठकर देशना देते है तब वे भाव अरिहन्त कहलाते है। जैसे सिमन्धर स्वामी आदि।

इन चार प्रकार के अरिहन्त मे से किसी एक को भी नही माने तो मिथ्यात्वी कहलाता है और स्थापना अरिहन्त से सिद्ध भी होता है इसलिए मूर्ति भी माननी चाहिये।

प्रश्न 11 अरिहन्त कैसे बनते हैं ?

उत्तर—अन्तिम भव की अपेक्षा से तीसरे भव म विशस्थानक या किसी एक पद की आराधना के साथ 'सभी जीव करू शासनरसि' इस भावना के बल पर तीर्थंकर नाम कर्म बाधते है तथा उस नाम कर्म का उदय अन्तिम भव मे आता है। तब वे तीर्थंकर बनते है। तीर्थंकर जिनेश्वर य सब पर्यायवाची शब्द है।

प्रश्न 12. एक काल में ज्यादा से ज्यादा कितने तीर्थंकर होते हैं उनके क्षेत्र कौन-कौन से होते हैं। वे कौन से भगवान के समय में हुए हैं ?

उत्तर—ज्यादा से ज्यादा उत्कृष्ट से एक काल मे 170 तीर्थंकर होते है वे अजितनाथ भगवान के वक्त मे हुए थे। जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र मे, ज० ऐरावत क्षेत्र, ज० महाविदेह क्षेत्र, धातकी खण्ड के दो भरत क्षेत्र धा० दो ऐरावत क्षेत्र, धा० दो महाविदेह क्षेत्र आधे पुष्कर द्वीप क्षेत्र मे, आ० पु० दो ऐरावत आ०पु० दो महाविदेह क्षेत्र मे।

प्रश्न 13. अरिहन्त भगवान कितने दोषों से रहित होते हैं वे कौन-कौन से कर्म के नाश से कौन-सा दोष नष्ट होता है ?

उत्तर—भगवान अठारह दोषो से रहित होते है—

(1) ज्ञानावरणी कर्म के नाश से (1) अज्ञान दोष नष्ट होता है।
(2) दर्शनावरणी कर्म के नाश से (2) निद्रा दोष नष्ट होता है।
(3) मोहनीय कर्म के नाश से (3) मिथ्यात्व (4) अविरति (5) राग (6) द्वेष (7) हास्य (7) रति (9) शोक (10) अरति (11) भय (12) जुगुप्सा (घृणा) (13) काम यह ग्यारह दोष नष्ट होते हैं।
(4) अन्तराय कर्म के नाश से (14) दानान्तराय (15) लाभान्तराय (16) भोगान्तराय (17) उपभोगान्तराय (17) वीर्यान्तराय ये पॉच दोष नष्ट होते है।

प्रश्न 14. सिद्ध का स्वरूप क्या है ?

उत्तर—जब आत्मा कर्मो से सहित होती है तब अनेक स्थान पर नीचे या ऊपर भटकती रहती है। जैसे हाइड्रोजन गैस के गुब्बारे के साथ पत्थर बाधा हुआ होता वह ऊपर नीचे फेका जा सकता है यदि वह पत्थर अलग किया जाये तो गुब्बारा ऊपर ही जायेगा। इसी प्रकार आठ कर्मो से रहित बनने पर आत्मा ऊपर ही जाती है किन्तु सिद्ध शिला के ऊपर लोक के अन्तिम भाग तक जाती है और वहॉ स्थिर हो जाती है। वहॉ से आगे नही जा सकती क्योकि उसके आगे धर्मास्तिकाय नाम का गति सहायक द्रव्य नही होता है। सिद्ध की आत्माऍ ऊपर से समान व नीचे से विषम होती है क्योकि कई आत्मा खडे-खडे मोक्ष मे जाती है तो कोई बैठकर मोक्ष मे

जाती है कोई काई सोते हुए भी जा सकती है। जैसे हाइड्रोजन के गुब्बार किसी छत को छूते है तब ऊपर से समान होते हैं। परन्तु नीचे से विषम सिद्ध बनी हुई आत्मा कभी भी वापिस जन्म मरण नहीं करती ऐसे सिद्धो को नमस्कार करने से हमारी आत्मा का उर्ध्वीकरण होता ह। जब एक आत्मा सिद्ध बनती है तब अव्यवहार राशि मे से एक आत्मा व्यवहार राशि मे आती है।

प्रश्न 15 आचार्य का स्वरूप सक्षेप मे लिखिये ?

उत्तर–तीर्थंकर की अनुपस्थिति मे सघ के नायक आचार्य होते है। लोगा को धर्म के भावार्थ का उपदेश देते है। उनके 36 गुण होते है पॉच इन्द्रियो को वश मे रखने वाले चार कषाय के त्यागी पॉच समिति व तीन गुप्ति का पालन करने वाले होते हैं।

प्रश्न 16 उपाध्याय किसको कहते है?

उत्तर–जिनेश्वर भगवान के आगमा का अध्ययन करके गुरु के हाथो स उपाध्याय पद प्राप्त करके मुनिया को शास्त्रा का अध्ययन कराते है ऐसे 25 गुणो से सुशोभित है। 11 अग 14 पूर्व = 25 गुण।

प्रश्न 17 साधु का स्वरूप क्या है ?

उत्तर–ससार की मोह माया को छोडकर पाच महाव्रत धारण करके 27 गुणो से विभूषित 22 परिषह विजेता कचन कामनी के त्यागी छकाय जीव रक्षक आदि अनेक गुणो को धारण करने वाले हैं।

प्रश्न 18 नवकार मन्त्र के अन्दर अन्तिम चार पदों का उच्चारण क्यो किया गया है ?

उत्तर–पच परमेष्ठियो को पहले 5 पदो से नमस्कार करके सुकृत किया है। उस सुकृत की अनुमोदना करने के लिए चार पद बोले जाते है। सुकृत करने के बाद उसकी अनुमोदना से कई गुना अधिक पुण्य बध होता है। इन चारो पदो मे 5 परमेष्ठियो के लिये नमस्कार का महत्व बताया गया है। इसलिए अन्तिम चार पदो का उच्चारण किया गया है।

प्रश्न 19. नमो अरिहन्ताणं पद कौन-सी इन्द्रिय को वश में करता है ?

उत्तर—श्रोत्रेन्द्रिय को वश मे कर लेता है।

प्रश्न 20. आधुनिक काल में इस भरत खण्ड में अरिहन्त हमारे सम्मुख नहीं है। कहाँ विराजमान है ?

उत्तर—महाविदेह क्षेत्र मे।

प्रश्न 21. यह मन्त्र शाश्वत है अशाश्वत ? किस तीर्थकर ने यह निर्णय किया ?

उत्तर—भूतकाल मे अनन्त चौविशी हुई है और भविष्य मे अनन्त चौविशी होगी लेकिन नवकार महामन्त्र की आदि किसी ने बताई नही है। भविष्य मे उनकी आदि कोई बता नही सकेगा नही। नवकार मन्त्र शाश्वत है नवकार मन्त्र अनादि और अनन्त है।

प्रश्न 22. कई लोग सुबह उठते ही अपनी हथेली के दर्शन क्यों करते हैं ?

उत्तर—दोनो हथेलियो की आयुष्य रेखाओ को जोडने से दूज के चन्द्रमा सा आकार बनता है वैसा ही आकार सिद्धालय का होता है और प्रत्येक अगुली की तीन-तीन पोखे है चार-चार अगुलियो के मिलाकर कुल चौबीस पोखे हुये। जैन दर्शन मे भी तीर्थकर चौबिस है। चौबिस तीर्थकर के दर्शन हथेली के दर्शन करने से होते है। उठते के साथ पहले हथेली के दर्शन करते समय चौबिस तीर्थकरो को भाव से सथारा या बिस्तर मे नमस्कार करे।

प्रश्न 23. महान चमत्कारी मन्त्र :

उत्तर—विश्व मे लाखो व्यक्ति, जैन इस महामन्त्र का जाप करते है। इसमे 68 अक्षर है इन अक्षरो मे अद्‌भुत मन्त्र शक्ति छुपी हुई है। शुद्ध भावो के साथ तन्मय होकर इनका जाप उच्चारण करने से ध्वनि तरगो के प्रकम्पन अन्त करण मे उर्जा का विस्फोट होता है। जिसके प्रभाव से हमारी अध्यात्मिक शक्तियॉ जाग जाती है और शरीर मे भिन्न-भिन्न चेतना केन्द्र शक्तिशाली एव ज्योतिर्मय होकर रोग, शोक, भय, चिन्ता आदि को नष्ट कर

देते हैं। यह मन्त्र अशुभ ग्रहो की पीडा भूत प्रेत हिंसक जीवो का उपद्रव रोग तथा दुष्टघात आदि से रक्षा कवच की भाति सदा सदा रक्षा करता है। आरोग्य सोभाग्य आदि अनेक प्रकार से भौतिक एव अध्यात्मिक लाभ देने वाला यह महामन्त्र अक्षय शक्ति माना स्रोत गया है।

प्रश्न 24 नवकार मन्त्र मे पद और सपदा कितने है ?

उत्तर—इनमे पद 9 तथा सपदा 8 है।

प्रश्न 25 नवकार मन्त्र में लघु तथा गुरु अक्षर कितने है ?

उत्तर—नवकार मन्त्र मे लघु अक्षर 61 तथा गुरु अक्षर 7 है।

प्रश्न 26 नवकार मन्त्र में पॉच पदो मे कितने अक्षर हैं ?

उत्तर—35 अक्षर हैं।

प्रश्न 27 नवकार मन्त्र मे सर्व अक्षर कितने हैं ?

उत्तर—68 सर्व अक्षर है।

प्रश्न 28 नवकार मन्त्र में मूल का पद कौन सा है ?

उत्तर—नमो लोए सव्व साहूण।

प्रश्न 29 नवकार मन्त्र का ध्यान करने से कितने सागरोपम के अशुभ कर्म नष्ट होते हैं ?

उत्तर—पॉच सौ सागरोपम।

प्रश्न 30 सिर्फ 'न' से कितने सागरोपम के अशुभ कर्म क्षय होते हैं ?

उत्तर—7 सागरोपम।

प्रश्न 31 नवकार मन्त्र मे कितने पद चश्मा लगाते हैं ?

उत्तर—आचार्य उपाध्याय साधु।

प्रश्न 32 नवकार मन्त्र में कुल कितने तीर्थ की यात्रा होती है ?

उत्तर—68 तीर्थ की यात्रा होती है।

प्रश्न 33 नवकार मन्त्र के जाप से किस गति का [illegible] ता है ?

उत्तर—सद्गति या देव अर्थात् मोक्ष।

प्रश्न 34 नवकार मन्त्र मे साध्य क्या है और साध[illegible] है ?

उत्तर—अरि०, सिद्ध साध्य है और आ०, उ०, सा० साधन है।

प्रश्न 35. नवकार मन्त्र में ऐसा कौनसा शब्द है जो बार-बार आता है ?

उत्तर—नमो शब्द बार-बार आता है।

प्रश्न 36. नवकार मन्त्र का संक्षिप्त रूप बताईये ?

उत्तर—असिया उसा।

प्रश्न 37. अरिहन्त सिद्ध के कितने कर्म बाकी हैं ?

उत्तर—अरिहन्त के 4, सिद्ध के कुछ नही।

प्रश्न 38. नवकार मन्त्र में पॉच पद तीर्थ के कौन सूचक हैं ?

उत्तर—"अ" अष्टापद, "सि" सिद्धाचल, "आ" आबु, "उ" उजित गीरि, "सा" साचोर।

प्रश्न 39. नवकार मन्त्र के 9 लाख जाप करने वाला किस गति में नहीं जाता ?

उत्तर—नरक गति मे नही जाता।

प्रश्न 40. नवकार मन्त्र के 9 करोड़ जाप करने वाला कितने भव में मोक्ष जाता है ?

उत्तर—3 भव मे मोक्ष जाता है।

प्रश्न 41. ''नमोऽर्त'' सूत्र किसने बनाया ?

उत्तर—सिद्ध सेन दिवाकर ने।



तत्त्व ज्ञान

2

प्रश्न 1 अनादिकाल से कर्म सहित आत्मा कहाँ थी।

उत्तर–अनादिकाल से कर्म सहित आत्मा सूक्ष्म साधारण वनस्पति काय मे अव्यवहार राशि निगोद मे थी अव्यवहार राशि की आत्मा को एक श्वास के अन्दर 18 बार जन्म 17 बार मरण होता है।

प्रश्न 2 अव्यवहार राशि की आत्मा कहा रहती है।

उत्तर–अव्यवहार राशि निगाद की आत्माए 14 राजलोक के अन्दर ठूस ठूस कर भरी हुई है। लोकाकाश का एक भी प्रदेश ऐसा नहीं है जहाँ अव्यवहार राशि निगोद की आत्मा न हो सूक्ष्म होने के कारण यह आत्मा हमे दिखाई नही देती।

प्रश्न 3 सूक्ष्म निगोद का जीव एक वर्ष मे कितने भव करता।

उत्तर–सूक्ष्म निगोद का जीव एक वर्ष मे सतर करोड सत्तर लाख अट्ठासी हजार आठसो भव करता है (7 77, 88, 800)

प्रश्न 4 अव्यवहार राशि मे से आत्माएँ बाहर कैसे निकलती।

उत्तर–जब कोई एक आत्मा ज्ञान दर्शन चारित्र की आराधना करके मोक्ष मे जाती है तब एक आत्मा अव्यवहार राशि मे से बाहर निकलकर व्यवहार राशि म आती है।

प्रश्न 5 क्या सभी आत्मा मोक्ष की आराधना कर सकती है।

उत्तर–नहीं भव्य आत्मा ही मोक्ष की आराधना कर सकती है अभव्यात्मा जातिभव्यात्मा मोक्ष की साधना नहीं कर सकती।

प्रश्न 6 भव्य अभव्य जाति भव्य किसे कहते है।

उत्तर–(1) जा आत्माएँ मोक्ष जा सकती है उसे भव्य कहते है

(2) जो आत्माएँ मोक्ष नहीं जा सकती वे अभव्य आत्माएँ

(3) जिन आत्माओ म मोक्ष की योग्यता होने पर भी माक्ष की सामग्री पाँच इन्द्रिय वगेरे नहीं मिलती वे जाति अभव्य कहलाती है जेसे कि सीजने

वाले मूग, करडु मूग व जगल मे पडे हुए मूग।

प्रश्न 7. जातिभव्य अभव्य आत्मा में क्या अन्तर है।

उत्तर–एक को मोक्ष की सामग्री नही मिलती दूसरे को सामग्री मिलने पर भी साधना करने के भाव नही जगते।

प्रश्न 8. चरमावर्त्त में आये हुये जीव के क्या लक्षण हैं।

उत्तर–दुखी जीवो के प्रति अत्यन्त दया करुणा, गुणानुरागी, औचित्य का पालन हृदय मे स्नेह, प्रेम मोक्ष के प्रति अनुराग, वीतराग वाणी पर पूर्ण श्रद्धावत।

प्रश्न 9. जीव किसे कहते हैं–

उत्तर–सुख-दु.ख का वेदक, अष्ट कर्म का करता तथा भोगता, तीन काल मे शाश्वत कभी विनाश नही होने वाला असख्य प्रदेशी हो उसे जीव कहते है।

प्रश्न 10. विश्व में जीव कितने प्रकार के होते हैं ?

उत्तर–दो प्रकार के मुक्त और ससारी।

प्रश्न 11. मुक्त जीव किसे कहते है ?

उत्तर–जो जीव कर्म खपाकर, कर्म रहित हो कर मोक्ष मे चले गये ससार मे पुन. आवागमन नही उसे मुक्त जीव कहते है।

प्रश्न 12. संसारी जीव किसे कहते हैं।

उत्तर–शुभाशुभ कर्मो के वश से जो जीव चार गतियो मे भ्रमण से विराम नही पाते वे ससारी जीव है।

प्रश्न 13. संसारी जीव कितने प्रकार के होते हैं।

उत्तर–ससारी जीव दो प्रकार के होते है त्रस तथा स्थावर।

प्रश्न 14. त्रस जीव किसे कहते हैं।

उत्तर–जो जीव सुख-दु ख पाने के लिये इधर-उधर चलते फिरते है स्थानान्तरित होते है।

प्रश्न 15. स्थावर जीव किसे कहते हैं।

उत्तर–जो जीव एक ही जगह स्थिर रहते है। अपने आप चल फिर नही सकते वे स्थावर जीव अप्काय, अग्निकाय, वायुकाय, आदि जीव।

प्रश्न 16. जीव के कितने भेद हैं।

उत्तर–जीव के 563 भेद है नरक के 14, तिर्यंच के 48 मनुष्य के 303, देवता के 193 ।

प्रश्न 17 गति किसको कहते उसके नाम लिखो।

उत्तर–नाम कर्म के उदय से जीव की पर्याय विशेष को गति कहते नरक तिर्यञ्च मनुष्य और देव।

प्रश्न 18 किस कारण से जीवात्मा नरक गति मे जाती है ?

उत्तर–महान आरम्भ करने से परिग्रह मे मूर्छा रखने से पचेन्द्रिय जीवो की हत्या करने से उत्सूत्र प्ररुपणा करने से किये हुये उपकारो को भूल जाने से आदि अनेक कारण स नरक मे जाती है।

प्रश्न 19 किस कारण से जीवात्मा तिर्यञ्च गति मे जाती है।

उत्तर–गूढ हृदयवाला–जिसके दिल की बात कोई नहीं जान सके जबान मिठी हो पर दिल मे जहर भरा हुआ हो गुरुभगवन्त स पापो की आलोचना नहीं करने वाले तिर्यञ्च गति मे जाता है।

प्रश्न 20 किस कारण से मनुष्य गति मे जाती है।

उत्तर–अल्प कषायी दान म रूचि मध्यम गुणवाला क्षमा ऋजु आदि कारणो से जीव आत्मा मनुष्य मे जाता है।

प्रश्न 21 किस कारण से जीव आत्मा देवगति मे जाती है।

उत्तर–पचमहाव्रत धारी साधु देशविरति श्रावक अविरत सम्यग दृष्टि आत्मा, बाल तपस्वी, अकाम निर्जरा आदि बाह्य शुभानुष्ठानो के द्वारा जीवात्मा देव गति में जाती हैं।

प्रश्न 22. पानी के एक बूद में कितने जीव हैं।

उत्तर–36563 जीव पानी के एक बूद मे है।

प्रश्न 23 बासी भोजन करने से क्या पाप है।

उत्तर–बासी भोजन मे नहीं दिखने वाले अति सूक्ष्म जीव लालिया (लालायक) नाम के बेइन्द्रिय जीवो की उत्पत्ति होती है जिनेश्वर की आज्ञा भग होती है बासी भोजन से करने से अनेक प्रकार के रोगो की उत्पत्ति होती है दुर्गति का बध होता है।

प्रश्न 24 नरक के चार द्वार।

उत्तर–रात्रि भोजन कदमूल आचार परस्त्रीगमन।

नव तत्त्व

3

प्रश्न 1. संसार में मुख्य तत्त्व कितने हैं।

उत्तर—दो जीव तत्त्व अजीव तत्त्व।

प्रश्न 2. जीव और अजीव के परस्पर सम्वन्ध के कितने तत्त्व गिने हैं।

उत्तर—नौ, जीव, अजीव, पुण्य, पाप, आश्रव, सवर, निर्जरा, बध, मोक्ष।

प्रश्न 3. जीव तत्त्व किसको कहते हैं।

उत्तर—प्राणो को धारण करे परन्तु अपने हित अहित को न समझे तथा अपने सुख एवं दुख का अनुभव न करे।

प्रश्न 4. अजीव तत्त्व किसको कहते हैं।

उत्तर—प्राणो को धारण करे परन्तु अपने हित अहित् को न समझे तथा अपने सुख एवं दुख का अनुभव करे।

प्रश्न 5. पुण्य तत्त्व किसे कहते हैं।

उत्तर—जिससे सुख आमोद प्रमोद तथा अनुकूलता प्राप्त हो अथवा शुभ कर्म बन्ध की कारण भूति क्रिया को पुण्य तत्त्व कहते है।

प्रश्न 6. पाप तत्त्व किसे कहते हैं।

उत्तर—प्राणियो को नरकादि गति का दुःख भोगना पड़े ऐसी चोरी, परदारा गमन, हिसा आदि सावद्य क्रिया करनी पडे उसे पापतत्त्व कहते है।

प्रश्न 7. आश्रव तत्त्व किसे कहते हैं।

उत्तर—जिस पाप कर्मो का द्वार खुला रहे तथा शुभा शुभ कर्म का सचय हो वह आश्रव तत्त्व।

प्रश्न 8 सवर तत्त्व किसे कहते हैं।

उत्तर--जिस क्रिया के द्वारा पाप कर्मों का आगमन रूक जाये पाप वन्ध न हो व सवर तत्त्व।

प्रश्न 9 निर्जरा तत्त्व किसे कहते है।

उत्तर--जिससे वन्धे हुए शुभाशुभ कर्मो का नाश हो और नूतन कर्मों का बधन हो वह निर्जरा तत्त्व।

प्रश्न 10 वन्ध तत्त्व किसे कहते हैं।

उत्तर--दूध और पानी के समान जिससे आत्मा के साथ कर्मो का सम्बन्ध हो उस बन्ध तत्त्व कहते है।

प्रश्न 11 मोक्षतत्त्व किसे कहते हे ?

ज्ञानावरणीय आदि कर्मो का सर्वथा नाश होकर आत्मा निर्लेप हो जाये वह मोक्ष तत्त्व है । नवतत्त्वों मे पुण्य, पाप आश्रव वन्ध ये चार तत्त्व हेय है जीव अजीव यह दो तत्त्व ज्ञेय है सवर निर्जरा मोक्ष यह तीन तत्त्व उपादेय है।

प्रश्न 12 जीव शरीर के कान से भाग म रहता है।

उत्तर--जीव शरीर के समस्त भाग म रहता है जैसे तिल मे तेल और दूध से घृत है।

प्रश्न 13 प्रत्येक जीव समान प्रदेश गण शक्ति ज्ञान स्वभाव वाले होते है या भिन्न भिन्न ?

उत्तर--प्रत्यक जीव मूल स्वभाव से तो सव तरह से समान हाते है परन्तु कर्म क कारण ज्ञान गुण और स्वभाव मे एक दूसरे से कम अधिक देखे जाते है।

प्रश्न 14 जीव को कर्म कव से लगे है।

उत्तर--अनादि काल से जीव आर कर्म साथ ही है।

प्रश्न 15 स्थूल देह से जव जीव भिन्न होता है तव उसके साथ क्या क्या रहता है।

उत्तर--तेजस तथा कार्मण य दो शरीर और शुभा शुभ कर्म सामग्री।

प्रश्न 16. जीवमात्र सुख चाहते हैं वह सुख कहाँ है।

उत्तर—सुख जीव के पास ही है।

प्रश्न 17. अपने पास सुख हो तो फिर अन्य जगह क्यों ढूँढता है ?

उत्तर—अपनी अज्ञानता के कारण।

प्रश्न 18. जीव स्वतन्त्र है या परतन्त्र।

उत्तर—जब तक कर्म से विमुक्त न हो वहाँ तक परतन्त्र और विमुक्त होने पर जीव स्वतन्त्र है।

प्रश्न 19. सुख कितने प्रकार का है।

उत्तर सुख दो प्रकार का आत्मिक सुख, पौदगालिक सुख।

प्रश्न 20. कंद मूल का त्याग क्यों आवश्यक है।

उत्तर—जैन शास्त्रो मे इन्हे अनतकाय कहा गया है क्योकि छोटे से छोटे भाग मे अनत जीव है इन सब्जियो के खाने से अनत जीवो की हत्या का पाप लगता है। पुन निगोद आयुष्य का बध होता है इसलिये अवश्य त्याग करना चाहिये।

प्रश्न 21. वनस्पति काय कितनी है उसके नाम लिखो।

उत्तर—वनस्पति काय दो प्रकार की है साधारण वनस्पति काय प्रत्येक वनस्पति काय।

प्रश्न 22. प्रत्येक वनस्पति काय कितनी है तथा किसको कहते हैं ?

उत्तर—एक शरीर मे एक ही जीव हो वह प्रत्येक वनस्पति कहलाती है आम, अगूर, केला, तोरू आल, मटर, चन्ना गेहूँ आदि 10 लाख प्रत्येक वनस्पति काय है।

प्रश्न 23. साधारण वनस्पति काय किसे कहते हैं वैज्ञानिक उदाहरण द्वारा समझाये।

उत्तर—एक शरीर मे अनेक जीव हो उसे साधारण वनस्पति कहते है जैसे आलू, प्याज, शक्कर कद आदि विज्ञान के सूक्ष्म दर्शन यत्र के द्वारा देखकर कहा एक स्टेम्प मे या डाक के एक टिकट पर 25 करोड सूक्ष्म जीवाणु रह सकते है एक छोटे-से केप्सूल मे एक करोड जीवाणु रह सकते

है तो सोचा आलू प्याज आदि साधारण वनस्पति मे कितने जीव हो सकते है 14 लाख साधारण वनस्पति काय है।

प्रश्न 24 द्विदल अर्थात् क्या और उसके साथ कौन सी वस्तुऐं नहीं खानी चाहिये।

उत्तर—द्विदल अर्थात जिस अनाज के दो फाड एक जैसे दो टुकडे होते है जैसे गवार चना बटाणा चावल मूग उडद इत्यादि उसके साथ दूध दही गर्म किय बिना नहीं खाना चाहिये क्योकि द्विदल के साथ दूध दही वगैरह इकट्ठ हान से असख्यात बेइन्द्रिय जीव उत्पन्न होते है हिसा से बचने के लिए द्विदल के साथ कच्चा दूध दही नहीं खानी चाहिये।



चतुर्थ-विभाग

जैन श्रावक की दिनचर्या 4

प्रश्न 1. जैन किसे कहते हैं।

उत्तर—जिनेश्वर भगवान की आज्ञा को मानने वाला और यथा शक्ति पालन करने वाला जैन कहलाता है।

प्रश्न 2. श्रावक किसे कहते हैं।

उत्तर—जो बारह व्रत आदि का पालन करने वाला होता है और जिन मूर्ति, जिन मन्दिर, जिनागम तथा साधु, साध्वी, श्रावक व श्राविका इन सात क्षेत्रे मे भक्ति से एवम दुखियो की अनुकम्मा से अर्थात् दया से द्रव्य का सद्व्यय करता हो उसे श्रावक कहते है।

प्रश्न 3. श्रावक की दिनचर्या को विस्तृत रूप से समझाइये।

उत्तर—श्रावक को करीब सूर्योदय से डेढ घण्टे पहले जगना चाहिये उठकर अष्ट कर्म निवारण हेतु आठ नवकार महामन्त्र का जाप करना चाहिये फिर मै कौन हूँ मेरा धर्म क्या है मेरा कुल क्या है मुझे कौन से व्रत लेने चाहिये कैसे अलौकिक देव, गुरु, वह धर्म मिले है इत्यादि चिन्तन करना चाहिये। उसके बाद मे प्रतिक्रमण करना चाहिये क्योकि वह आवश्यक क्रिया है अगर प्रतिक्रमण कारण वशात नही हो सके तो विश्व के समस्त तीर्थ जिन मन्दिर प्रतिमा आदि को याद करना चाहिये महापुरुष और सतियो को याद करना चाहिये मैत्री आदि चार भावनाओ का चिन्तन करना इसके बाद मे नवकारसी आदि का पच्चक्खाण करना घर मन्दिर का दर्शन करके फिर बडे मन्दिर जाना चाहिये दर्शन करते समय भगवान का उपकार याद आना चाहिये है परमात्मा आप की कृपा से मुझे कुलीन मनुष्य भव मिला तथा धर्म आदि की सामग्री मिली उसको याद करके गद्-गद् होना

चाहिये चिन्तामणि से भी अत्यन्त मूल्यवान ऐसे प्रभु दर्शन को पाकर अतिहर्ष होना चाहिये आनन्द के आसुओ से आँख भीगी होनी चाहिये फिर धूप दीप वासक्षेप आदि से पूजा तथा चैत्य वदन (भाव पूजा) करके पच्चक्खाण लेना चाहिये फिर उपाश्रय के अन्दर आकर गुरु को वदन करना चाहिये। और सुख शाता पूछकर उनके पास पच्चक्खाण लेना चाहिये और उनको भात पानी, वस्त्र पात्र पुस्तक औषधि आदि का लाभ लेने की विनती करनी चाहिये। फिर अगर नवकारसी का पच्चक्खाण हो तो घर आकर नवकारसी करके गुरु महाराज के पास आकर आत्मा का हितकर अमूल्य अचित्य भव समुद्र से पार उतारने वाली ऐसी जिनवाणी का श्रवण करना चाहिए जिनवाणी से कर्मों का क्षय होता। जिनवाणी के द्वारा आत्मा का उद्धार करे जिनवाणी के प्रभाव से अर्जुन माली भी अपनी आत्मा का उद्धार कर मोक्ष प्राप्त किया। दिन मे चार हत्या करने वाला दृढ प्रहारी भी मोक्ष मे गये इस प्रकार जिनवाणी के प्रभाव से कई आत्माओ ने अपने जीवन का उद्धार किया इसलिये अपने तुच्छ स्वार्थ को छोडकर जिनवाणी का श्रवण करना चाहिये। उसके बाद अष्टप्रकारी जल चन्दन धूप दीप अक्षत नैवद्य फल फूल आदि द्रव्य पूजा करनी चाहिये। चैत्य वदन आदि भाव पूजा करनी चाहिये उसके बाद अभिग्रह पूर्वक भोजन करना चाहिये यानि अमुक द्रव्यो को अमुक विगई का त्याग कर भोजन करना।

श्रावक की अर्थ चिन्ता—भोजन के बाद श्रावक धर्म की हानि न पहुँचे इस प्रकार व्यापार करता है जाते वक्त नवकार आदि मगलिक करके जाता है ताकि उसके मन मे लगे यह व्यापार करने जैसा नहीं है ससार मे बैठा हूँ इसलिये मुझे करना पडता है धर्म की निन्दा न हो वैसा व्यापार करे उसके बाद शाम का भोजन सूर्यास्त के 48 मिनट पहले अभिग्रह पूर्वक भोजन करे उसके बाद श्रावक को घर मन्दिर के प्रतिमाजी के आगे बैठकर चैत्यवदन करके तिविहार चौविहार का पच्चक्खाण करे उसके बाद प्रतिक्रमण करना चाहिये उसके बाद आत्म गर्हा करनी चाहिये उसे सोचना चाहिये कि ये पाँच इन्द्रियाँ और उसके विषय कितने भयकर है श्रोतेन्द्रिय के कारण हिरण को अपने प्राणो से हाथ धोना पडा टीवी विडिया पिक्चर के गीत

सुनने से हमारी भी दुर्गति होगी रूप को देखने से पतग भी दीपक के ऊपर पडकर मर जाता है उसी प्रकार हम भी रूप के अन्दर मसगूल बने तो हमारी भी यही हालत हो सकती है। रसेन्द्रिय के कारण मच्छली का जीवन बर्बाद होता है हम भी खाने पीने मे रहेगे तो मनुष्य जीवन हार जायेगे। पुष्प पर मडराते भॅवरे को सुगन्ध के कारण पुष्पो मे ही बन्ध होकर प्राणो को विसर्जन करना पडता है उसी प्रकार हम भी सेन्ट इत्र आदि सुगन्ध मे ही रहेगे तो हमारे भी जीवन की दुर्गति हो सकती है। स्पर्शन्द्रिय के कारण हाथी को आजीवन गुलाम बनना पडा उसी प्रकार हम भी अगर विषय सुख के अन्दर लिप्त रहेगे तो हमारी दुगर्ति निश्चित है इन्द्रियो विषयो को जैसे-जैसे उपयोग किया जाता है वैसे-वैसे इच्छाएॅ बढती जाती है जैसे अग्नि मे घी डाल ने से अग्नि बढती जाती है।

प्रतिक्रमण करने के बाद उपाश्रय मे गुरु की सेवा भक्ति करनी चाहिये इसी सेवा के बल पर भरत चक्रवर्ती बने और उसके बाद धर्म कथा करनी चाहिये ताकि कुटुम्बी परिवार ऊपर धर्म सस्कार पडे बाद मे खुद के लिये स्वाध्याय करना अनित्य अशरण आदि बाहर भावनाओ का चिन्तन करना स्थूलभद्र, धन्ना अणगार आदि महापुरुष व सीता कलावती आदि, के सतियो का जीवन का विचार करना चाहिए क्योकि महापुरुषो का जीवन पथ, प्रदर्शन करने मे सहायक भूत होते है। बाद सोने के वक्त सात नवकार मत्र का स्मरण कर सोना अगर बीच मे जग जाये तो सवेग वर्धक भावनाओ का चिन्तन करना चाहिए।

प्रश्न 1. जैन किसे कहते हैं ?

उत्तर—जिनेश्वर परमात्मा की आज्ञा को मानने वाला जैन कहलाता है।

प्रश्न 2. जिन किसे कहते हैं ?

उत्तर—जिन्होने राग द्वेष को जीत लिया एव कषायमल से रहित है वह जिन है।

प्रश्न 3. केवलज्ञानी को कितने कर्म शेष रहते हैं ?

उत्तर—नाम, गौत्र, आयुष्य, वेदनीय ये चार अघाती कर्म रहते है। और चार घाती का क्षय होता है।

प्रश्न 4 कौन से गति के जीव सामायिक कर सकते हैं।

उत्तर–मनुष्य और तिर्यञ्च गति के जीव सामायिक कर सकते है।

प्रश्न 5 कौन कौन से गुणस्थान मे सामायिक कर सकते हैं।

उत्तर–पाचवे से नवमे गुण स्थान मे सामायिक कर सकते है।

प्रश्न 6 सिद्ध भगवान का अपने पर कितना उपकार है ?

उत्तर–जब एक आत्मा सिद्ध बनती है तब एक आत्मा निगोद मे से बाहर निकलती है।

प्रश्न 7 परमात्मा शब्द में कितने तीर्थंकरों का समाविष्ट स्थान है ?

उत्तर–परमात्मा शब्द मे 24 तीर्थंकारो का समावेश है। जैसे प = 5, र = 2, मा = 4½ त = 8, मा = 4½ = 24 तीर्थंकर ।

प्रश्न 8 सामायिक से नरक गति का कितना आयुष्य क्षय होता है ?

उत्तर–92 करोड 59 लाख 25 हजार 925 पल्योपम क्षय होता है। तथा 20 लाख मण स्वर्ण दान देने से जितना पुण्य होता है उससे अधिक एक सामायिक से पुण्य होता है।

प्रश्न 9 एक पौषध से क्या फल ?

उत्तर–27 अरब 77 करोड 77 लाख 77 हजार 770 पल्योपम का सात नव मास अधिक देवभव का आयुष्य बधता है।

प्रश्न 10 श्रावक, साधु सिद्धप्रभु की सामायिक में क्या अन्तर है ?

उत्तर–श्रावक की दो घडी साधु की जीवन पर्यन्त, सिद्धप्रभु की अनत काल की होती है।

प्रश्न 11 सामायिक में ताला और चावी का सूत्र कौनसा ?

उत्तर–करेमि भते ताला भयवदसण्णभद्दो (सामाइवयजुतो) चावी का सूत्र है।

प्रश्न 12 अठारह लाख चौवीस हजार एक सौ बीस जीवो को मिच्छामि दुक्कड देने का सूत्र ?

उत्तर–इरियावहि सूत्र ।

प्रश्न 13. एक नवकारसी करने का चमत्कार ?

उत्तर–एक जीव 100 वर्ष की स्थिति मे जितना पाप कर्म करता है उतना पापक्षय होता है।

प्रश्न 14. आवश्यक किसे कहते हैं ?

उत्तर–साधु, साध्वी, श्रावक, श्राविका, के द्वारा जो अवश्य किये जाते हैं वह आवश्यक।

प्रश्न 15. आवश्यक कितने प्रकार के तथा क्या नाम ?

उत्तर–6 आवश्यक । सामाजिक, चउवीसत्थो, वन्दना, प्रतिक्रमण, काउसग्ग और पच्चक्खाण।

प्रश्न 16. इन 6 आवश्यकों में कौन कौनसे सूत्र का उल्लेख है ?

उत्तर–करेमिभंते, लोगस्स, वादणा (अब्भुटिठयों) वंदितु, नवकार, नवकारसी, चौविहारादि।

प्रश्न 17. सामायिक की परिभाषा क्या है ?

उत्तर–सम + आय + इक = समता भाव की आय मे इक प्रत्यय लगने से सामायिक शब्द बनता है।

प्रश्न 18. सामायिक का क्या सार ? सामायिक कितने दोषों से रहित करना चाहिये।

उत्तर–द्वादशांगी का । 32 दोषो से रहित।

प्रश्न 19. धर्म पर रुचि कब शुरू होती है।

उत्तर–मोहनीय कर्म की स्थिति 60 कोड़ी-कोड़ी सागरोपम से घट कर एक कोड़-कोड़ी सागरोपम से कम रहने पर धर्म पर रूचि शुरू होती है।



तीर्थ-दर्शन 5

प्रश्न 1 तीर्थ किसे कहते हैं ?

उत्तर—जिसके माध्यम से ससार सागर को पारकर मोक्ष मे पहुँचा जाए।

प्रश्न 2 तीर्थ के प्रकार ?

उत्तर—दो। जगमतीर्थ स्थावर तीर्थ।

प्रश्न 3 जगम व स्थावर तीर्थ कौन कौन से ?

उत्तर—साधु, साध्वी श्रावक श्राविका जगम तीर्थ आबु, अष्टापद शत्रुजय आदि स्थावर तीर्थ।

प्रश्न 4 भरत क्षेत्र में तीर्थ शाश्वत है ?

उत्तर—शत्रुजय अष्टापद नदीश्वर।

प्रश्न 5 तीर्थंकर की जन्म व निर्वाण भूमि कहलाती है ?

उत्तर—कल्याणक भूमि।

प्रश्न 6 तीर्थंकर नाम कर्म का उपार्जन किससे होता है ?

उत्तर—वीशस्थानक तपाराधना से।

प्रश्न 7 नदीश्वर द्वीप की यात्रा कौन कर सकते हैं ?

उत्तर—विद्या चारण जघाचारण साधु एव देवी देवता।

प्रश्न 8 श्रीश्रीमधर स्वामी अपनी अमृतमयी देशना से किस क्षेत्र को पवित्र बनाते हैं।

उत्तर—जबुद्वीप के महाविदेह क्षेत्र को। वहीं विचरते हैं।

प्रश्न 9 अजितनाथ स्वामी के समय एक साथ उत्कृष्ट तीर्थंकर कितने हुए ?

उत्तर—170 तीर्थंकर।

प्रश्न 10 सम्मेत शिखर तीर्थ कितने तीर्थंकरो का निर्वाण धाम बना ?

उत्तर—आदिनाथ, वासुपूज्य, नेमीनाथ, महावीर स्वामी के अलावा 20 तीर्थंकरो का।

प्रश्न 11. शंखेश्वर तीर्थ की स्थापनाकर्त्ता कौन व किस कारण सें ?

उत्तर—कृष्ण महाराजा। जरा विधा के निवारणार्थ पार्श्वप्रभु की प्रतिमा का स्नात्र जल अभिमंत्रित कर छिटकाव किया जिससे रोग मुक्त होकर कृष्ण ने शखनाद किया, यही कारण।

प्रश्न 12. गिरनार तीर्थ पर भविष्य में अनागत चौबीस के कितने तीर्थकर मोक्ष पधारेंगे ?

उत्तर—पद्मनाभादि आदि 20।

प्रश्न 13. तीर्थ की स्थापना कौन करते हैं ?

उत्तर—तीर्थंकर परमात्मा।

प्रश्न 14. परमात्मा समवसरण में विराजते समय किन्हें नमस्कार करते ?

उत्तर—"नमो तित्थस्स" बोलकर चतुर्विध संघ (तीर्थ) को।

प्रश्न 15. बारह देवलोक में चैत्यालय कितने ?

उत्तर—8456023

प्रश्न 16. तीर्थ क्षेत्र में धन का व्यय करने का अपूर्व फल ?

उत्तर—सौ गुना अधिक फल तथा पुण्यानु बधी पुण्योपार्जन।

प्रश्न 17. अष्टापद तीर्थ पर कौनसे तीर्थंकर, कितने मुनियों के साथ मुक्तिनिलय में गये ?

उत्तर—आदिनाथ भगवान 10 हजार मुनियो के साथ।

प्रश्न 18. महाविदेह क्षेत्र में कितने तीर्थंकर की आत्माएँ गृहस्थावस्था में धर्माराधना कर रही हैं ?

उत्तर—1660 तीर्थकर की आत्माएँ।

प्रश्न 19. भारत में हिन्दु समाज के पास जैन तीर्थ कौनसे ?

उत्तर—तिरुपति, हरिद्वार, और ऋषिकेश।

प्रश्न 20. किस भगवान का जन्म कल्याणक कल्पवृक्ष के नीचे हुआ ?

उत्तर—आदिनाथ भगवान।

प्रश्न 21. शत्रुंजय तीर्थ पर कौन-से गणधर कितने मुनियों के साथ शिवरमणी का वरण किया ?

उत्तर—आद्य तीर्थंकर के आदिम गणधर पुंडरीक स्वामी 5 करोड़ मुनियो के साथ।



देव दर्शन पूजन 4

प्रश्न 1 परमात्मा के दर्शन करने का सकल्प करने से णमो जिणाण बोलने से द्वार पर पहुँचने से स्तुति, पूजा, चैत्यवन्दन करने से कितने उपवास का फल होता है ?

उत्तर—परमात्मा के दर्शन करने का सकल्प करने से एक द्वार पर पहुँचने से तीन णमो जिणाण बोलने से 15, स्तुति पूजा चैत्यवन्दन करने से 30 उपवास अर्थात् मासक्षमण का फल मिलता हैं।

प्रश्न 2 मदिर मे जाने के पाँच अभिगम ?

उत्तर—सचित्त का त्याग अचित का त्याग उत्तरासन अजली प्रणिधान अभिगम का अर्थ विनय दर्शाना ।

प्रश्न 3 मदिर के कितने त्रिक है विस्तृत स्वरूप बताईये ?

उत्तर—10 त्रिक होते है।

(1) निसीहि (1) मदिर मे प्रवेश करते समय सासारिक प्रवृत्ति के त्याग रूप।

(2) मदिर सम्बन्धी अन्य प्रवृत्ति के त्याग स्वरूप मूल गर्भगृह मे प्रवश करते समय।

(3) भावपूजा के प्रारम्भ के पूर्व द्रव्य पूजा के त्याग रूप। तीनो बार निसीहि बोली जानी चाहिए।

(2) प्रदिक्षणात्रिक (1) भव भ्रमण को मिटाने के लिए ज्ञान दर्शन चारित्र रूप रत्नत्रय की प्राप्ति के लिए प्रभू के दाये और से चारो और तीन प्रदिक्षणा देनी चाहिये।

(3) प्रणाम त्रिक (1) अजलीबद्ध दूर से प्रभु के दर्शन होते ही हाथ जोडकर प्रणाम करना।

(2) अर्धावनत गर्भ द्वार पर पहुँचने पर अर्ध शीर्ष झुकाकर प्रणाम करना।

(3) पांचाग प्रणिपात : चैत्यवदन करते समय दो घुटने, दो हाथ व मस्तिष्क का भूमि पर स्पर्श करते हुए प्रणाम करना।

(4) पूजात्रिक : अगपूजा प्रभु के अग पर जल चंदन व पुष्प से पुजा करना।

अग्रपूजा : धूप, दीप, अक्षत, नैवेद्य व फल पूजा करे। भावपूजा. परमात्मका के सामने जघन्य, मध्यम, उत्कृष्ट चैत्यवंदन करना।

(5) अवस्थात्रिक : प्रभु की तीन अवस्थाओं का चिन्तन करना। पिडस्थ मे जन्म, राज्य दीक्षा अवस्था का चिन्तन, पदस्थ प्रभु की केवली अवस्था का चितन करना, रूपातीत प्रभु की सिद्धावस्था का चिन्तन।

(6) दिशात्रिक : दाये, बांये व पीछे की तीनों दिशा का त्याग कर प्रभु सन्मुख दृष्टि स्थिर करना।

(7) प्रमार्जनात्रिक : चैत्यवदन पूर्व भूमिका उत्तरासन से तीन बार प्रमार्जन करना।

(8) आलंबनत्रिक : सूत्रोच्चार करते समय शब्द अर्थ व प्रभु प्रतिमा का आलबन करना।

(9) मुद्रात्रिक : योग मुद्रा, चैत्यवदन करते समय, शक्रस्तव आदि। जिनमुद्रा कायोत्सर्ग करते समय, मुक्ता शुक्ति मुद्रा जावंति, जावंत जय – वियराय बोलते समय।

(10) प्रणिधानत्रिक : प्रभु पूजा मे मन, वचन, कायो को एकाग्र करना।

प्रश्न 4. ललाट पर तिलक क्यों ?

उत्तर–प्रभु की आज्ञा को शिरोधार्य करने के लिए।

प्रश्न 5. अष्ट प्रकार की पूजाएँ कौन कौन-सी ?

उत्तर–जलपूजा : हे निर्मल देवाधिदेव आपका तो द्रव्य तथा भाव मैल दोनो धूल गये है परन्तु मै आपके अभिषेक के द्वारा मेरे कर्म मैल को धोकर मै अपनी आत्मा को निर्मल बनाना चाहता हूँ।

चंदनपूजा : हे नाथ आपने मोह का नाश करके अपनी आत्मा मे शीतलता प्रसारित की है। परन्तु मेरी आत्मा क्रोध आदि विषय कषायो से

मुग्ध है । इसलिए यह चदन की शीतलता आपको अर्पित करके मै आत्मिक शीतलता और सौरभ को प्राप्त करना चाहता हूँ।

पुष्पपूजा जिस प्रकार पुष्प सुगधित कोमल एव विकसित होते है। उसी प्रकार हे प्रभु मेरी आत्मा मे ज्ञान दर्शन चारित्र रत्नत्रय का विकास हो तथा क्रोध मान माया आदि कषायो की दुर्गंध नाश हो सदगुणो की सुगन्ध प्राप्त हो आप पर चढने वाला पुष्प जिस प्रकार भव्य बन जाता है।

उसी प्रकार मेरी आत्मा को भव्यत्व सम्यक्त्व की प्राप्ति हो।

धूप पूजा जिस प्रकार धूप से अशुभ गध का नाश होता है। चारो ओर शुभ सुगध फैलती है उसी प्रकार मेरी आत्मा के अशुभ भाव का विनाश हो शुभ भाव रूपी सौरभ प्रगटे धूप की घटाऐं उर्ध्वगामी है। वैसे ही मुझे उर्ध्वगति सिद्धशिला की प्राप्ति हो अष्टकर्म रूपी ईंजन को जलाकर उर्ध्वगमन करे।

दीपक पूजा हे परमात्मा जिस प्रकार द्रव्य दीपक का प्रकाश अधकार को नाश करता है। उसी प्रकार मेरे अज्ञान का नाशकर केवल ज्ञान रूपी भाव दीपक प्रगट करे।

अक्षत पूजा हे परमात्मा आपके सामने शुद्ध अखण्ड से नदावर्त स्वस्तिक का आलेखन कर मैं आपसे अक्षतपद स्वरूप मोक्ष की प्रार्थना करता हूँ जिस प्रकार अक्षत पुन उगता नहीं है उसी प्रकार मेरा भी इस ससार मे पुन जन्म न हो।

नैवेद्य पूजा यह आत्मा अनत काल से जन्म मरण करती हुई जन्म से लेकर मृत्यु तक आहार ग्रहण करती रही एकमात्र विग्रहगति मे गमन करते समय 1-2-3 समय तक अणहारी अवस्था म रहती हैं। उसके सिवाय ससार मे आहार प्रवृति सतत् चल रही है इसलिए आपके चरणो मे नैवेद्य रखता हूँ जिसके प्रभाव से मेरी आहार सज्ञा विनष्ट हो और मैं अणहारी पद को ग्रहण करूँ।

फल पूजा हे परमात्मा यह द्रव्यफल आपको अर्पण करता हूँ। इससे मुझे सम्यक्त्वरूपी फल प्राप्त हो अन्त मे मोक्ष फल की प्राप्ति हो।

प्रश्न 6. दर्पण पूजा का क्या तात्पर्य ?

उत्तर–दर्पण मे प्रभु का मुख देखकर उनके जैसा वीतरागी स्वरूप को प्राप्त करने के लिए राग द्वेष रहित होने के लिए दर्पण मे देखते है।

प्रश्न 7. चंवर पूजाः किसलिए ?

उत्तर–प्रभु की भक्ति प्रीति बहुमान प्रगट करने के लिए चवर ढुलाते हुए नृत्य करना चाहिये।

प्रश्न 8. जिन प्रतिमा तथा जिन पूजा का वर्णन किस आगम में ?

उत्तर–रायपसेणी सूत्र, जीवाभिगम सूत्र, ज्ञाताधर्मकथा सूत्र, उववाई, भगवती आदि और भी अनेक आगमो मे प्रतिमा व पूजन का वर्णन है।

प्रश्न 9. चैत्य किसको कहते हैं ?

उत्तर–प्रतिमा, जिन, बिम्ब, मूर्ति को चैत्य कहते है।

प्रश्न 10. आरती मंगल दीपक क्यों करना हैं ?

उत्तर–आरती उतारने से मन व शरीर की पीडा दूर होती है और मन को शाति मिलती है, मगल दीपक से मगल होता है तथा सुख की उपलब्धि होती है।

प्रश्न 11. प्रभु की नवांगी पूजा अपने हृदय में भावना भावे।

उत्तर–(1) दाये व बाये पॉव के अंगूठे पर पूजा –

जल भरी संपुट पत्र मॉ, युगलिक नर पूजंत।
ऋषभ चरण अंगुठडे, दायक भवजल अंत।।१।।

हे जिनेश्वर ! आपके चरण कमल की पूजा करते हुए मेरू पर्वत की तरह मेरे पाप कर्म भी कांप उठे मेरी अनामिका अगुली व आपके अंगूठे के कनेक्शन से पॉवर हाऊस जैसी आपकी आत्मा मे से निकलता प्रकाश मेरे अंधियारे आत्म गृह को अलौकिक करे, मेरे रोम-रोम मे मेरे खून की प्रत्येक बूँद मे मेरी आत्मा के प्रत्येक प्रदेश मे आपकी अचिन्त्य शक्ति का विद्युत प्रवाह बहता रहे आपकी प्रतिमा मे से निकलते हुए शुभ परमाणु मेरे शरीर मे सक्रात हो।

(2) दाये व बाये घुटने पर पूजा —

जानु बले काउस्सग्ग रहया विचर्या देश विदेश।
खडा खडा केवल लहयु पूजो जानु नरेश।।२।।

हे लोकेश्वर ! आपके जानु की पूजा करने से मुझ मे ऐसा बल उत्पन्न हो कि मैं भी केवल ज्ञान की प्राप्ति न हो तब तक काउस्सग ध्यान मे खडा रह सकू, उबड–खाबड रास्ते वाले व कटीले ससार मार्ग से पार उतर कर जल्दी से जल्दी मोक्ष की मजिल पर पहुँच जाऊ।

(3) दाये व बाये कलाई पर पूजा

लोकान्तिक वचने करी वरस्या वरसीदान।
कर काडे प्रभु पूजना पूजो भवि बहुमान।।३।।

प्रभु आपकी कलाई पर पूजा करते हुए पुन यही प्रार्थना है कि अब आप मेरा हाथ मत छोड़ियेगा मेरा हाथ थामकर मुझे ससार की कैद से जल्दी छुडाईयेगा।

(4) दाये व बाये कधे पर–

मान गयु अशथी देखी वीर्य अनत।
भुजा बले भव जल तर्यो पूजो खध महत।

हे निरामय आपकी स्कध पूजा के प्रभाव से मरा अहकार नष्ट हो और मुझे विनय गुण की प्राप्ति हो।

(5) मस्तक शिखा पर–

सिद्धशिला गुण उजली लोकान्ते भगवत
वसीया तेणे कारण भवि शिरशिखा पूजत।

हे विश्वपूज्य ! इस मस्तक की पूजा करते हुए मेरे मस्तिक मे यही विचार आता है कि आपकी मस्तक पूजा के प्रभाव से मेरे दिमाग के दुर्विचार नष्ट हो किसी का भी बुरा करने की भावना मेरे दिमाग मे कभी न उभरने पाये प्राणी मात्र के प्रति मैत्री भाव के मीठे झरने मेरे मस्तक प्रदेश में बहने लगे।

(6) ललाट प्रदेश पर :—

तीर्थकर पद पुण्यथी त्रिभुवन जन सेवंत
त्रिभुवन तिलक समा प्रभु भाल जयवंत।

हे मगलमूर्ति ! दमयति ने पूर्व भव मे रत्न से आपके ललाट की पूजा की जिससे उसके ललाट मे से जिस प्रकार रत्न जैसा प्रकाश बहने लगा था। उसी प्रकार मेरे ललाट मे भी अब जल्दी से केवल ज्ञान का प्रकाश बहने लगे।

(7) कठ प्रदेश पर :—

सोल प्रहर प्रभु देशना कंठ विवर वर्तुल
मधुर ध्वनि सुरनर सुणे तिणे गले तिलक अमूल।

हे काम विजेता यह वह कठ है जिसमे से कभी कोई पाप वचन, दुष्ट वचन सा असत्य वचन नही निकलता है हमेशा सत्य वचन बोलने वाले आपके कठ की पूजा के प्रभाव से मेरी वाणी की कर्कशता असत्यता, दुष्टता, उग्रता नष्ट हो मुझे आपकी पवित्र वाणी सुनने का अपूर्व अवसर भव भव मे मिले।

हृदय कमल उपशम बले बाल्या राग ने रोष
हिम दहे वन खण्ड ने हृदय तिलक संतोष।

हे जनरजन आपके हृदय प्रदेश की पूजा के प्रभाव से मेरे दिल मे विल बनाकर बैठी हुई माया की नागिने दूर हो जाये मेरे दुर्भाव नष्ट हो और विश्व मे जीव मात्र के प्रति वात्सल्य भाव जागृत हो।

(8) नाभी प्रदेश पर :

रत्नत्रयी गुण उज्जवली सकल सुगुण विश्राम
नाभीकमल नी पूजना करता अविचल धाम।

हे गुणनिधि अंतिम नाभीकमल की पूजा करते हुए मेरे अन्दर जो कुछ था वह मैने आपसे कह दिया है, अब मेरी बात पर जरा ध्यान देकर कर्मो से आच्छादित बने हुए मेरे आत्म प्रदेशो को जल्दी से जल्दी शुद्ध करने की कृपा कीजिये।

प्रश्न (8) अनामिका अगुली से पूजा किसलिये करनी चाहिये ?

उत्तर–अनामिका अगुली पूजा के लिए पवित्र मानते हे और कल्पना भी करते हैं हमे अनामी बनना हैं।

प्रश्न (9) शख घट क्यो बजाया जाता है ?

उत्तर–प्रभु पूजा दर्शनादि करके दिल मे हुए आनद को प्रकट करने के लिए घट बजाया जाता है। जिन मदिरो मे होने वाली शखनाद व घटनाद का आध्यात्मिक श्रेय मे अत्यन्त महत्त्व अकित हुआ है परन्तु अभी–अभी विज्ञान के सशोधनो ने भी हमारी प्राचीन आर्य सस्कृति के परम्परा मे आने वाले शखनाद व घटनाद के लिये नये वैज्ञानिक प्रूफ किये हैं।

* बर्लिन विश्व विद्यालय ने घोषित किया है कि रोगो के वायरस नष्ट करने हेतु शखध्वनि उत्तम औषधि है। एक सेकड मे सत्ताईस घन फूट आयु शक्ति के जोश से शख बजाया जाये तो 1200 फूट से 2600 फूट तक का वातावरण प्रदूषण मुक्त बनता है रोग के कीटाणु दूर होते हैं।
* शिकागो के डॉ० ब्राइन ने 1300 लोगो के शखध्वनि के माध्यम से रोग मुक्त किया है।
* अफ्रीका मे कई वर्षो से घटनाद के द्वारा सर्प का जहर उतारने की प्रक्रिया आज तक चली आ रही है।
* मोस्को सेनेटरीयम मे घटनाद द्वारा रोग दूर करने के प्रयोग आज किये जा रहे हैं।
* बर्मिंगहाम मे प्रसिद्ध वैज्ञानिको के द्वारा निर्णय किया गया है कि [illegible] रोग दूर होते हैं शरीर तथा मन की स्वस्थता प्राप्त होती है।



मार्गानुसारी जीवन 7

प्रश्न 1. अपुर्नबन्धक किसे कहते हैं।

उत्तर—जो जीव कभी भी 70 कोटि-कोटि सागरोपम स्थिति मोहनीय कर्म की नही बाधता ऐसी अवस्था प्राप्त कर लेता है तब वह अपुर्नबन्धक कहलाता है। इसके तीन गुण है—

(1) तीव्र भाव से पाप नही करे,

(2) ससार का बहुमान नहीं करे,

(3) उचित स्थिति का पालन करे।

प्रश्न 2. मार्गानुसारी के कितने गुण हैं उन्हें चार विभाग में लिखे।

उत्तर—मार्गानुसारी के 35 गुण होते है।

प्रश्न 3. नींव के कितने गुण।

उत्तर—नीव के 12 गुण।

(1) धर्मश्रवण—ज्ञानी के वचनो को सुनकर रस पर श्रद्धा रखना रोहिणिया चोर आदि।

(2) सत्संग—सज्जन व्यक्तियो का सग करना जैसा सग वैसा रग पारस मणि के सग से लोहा सुर्वण बन जाता है जटायु पक्षी तुलसीदास जी ने भी कहा है। "एक घडी आधी घडी आधी मे पूर्णआध तुलसी सगत संत की करे कोटि अपराध।"

(3) कदागृह त्याग—कदाग्रह अभव्य को ससार के सुख का आग्रह रहता है कदागृही व्यक्तियो को धर्म का उपदेश अच्छा नहीं लगता। व्यापारियो को कदागृह त्याग करने पर ही सम्पत्ति की प्राप्ति होती है कदागृह को न त्यागने पर हानि नुकसान होता है।

(4) पाप का भय–पाप का भय लगने से ही पाप का त्याग करने की भावना जगती है।

(5) लज्जा–लज्जा गुणवाली आत्मा पाप कर्म नहीं करती वह धर्म मे आगे बढती है जैसे कहा भी है व्यापार मे नर्म हुकूमत मे गर्म धर्म से शर्म जैसे चण्डरूद्राचार्य के शिष्य अरणिक मुनि।

(6) निन्दा का त्याग–निन्दा करने म जीव को इतना रस आता है कि आम के रस से भी अधिक मधुरता का अनुभव होता है निन्दा करने वाले स्वय दु खी होते एवम् दूसरो को भी दु खी करने का निमित्त बनता जैसे सीता को निन्दा के कारण देश निकाल का दु ख सहन करना पडा।

(7) निषप्रवृत्ति का त्याग–जो प्रवृतियाँ शिष्ट पुरुषा के द्वारा निन्दा के पात्र बनी हो उनका त्याग करना –

(1) शराब (2) जुआ (3) मासाहार, (4) शिकार (5) परस्त्री (6) वैश्या (7) चोरी शराब से तम्बाकुसे बीस नुकसान होते हैं जुआ से पाण्डवो को राज्य छोडना पडा मासहार से सोदास को राज्य से भ्रष्ट होना पडा अण्डे त्याग।

(8) इन्द्रिय गुलामी का त्याग–इन्द्रियो की गुलामी के कारण रूपसेन के सात भव बिगडे घ्राणेन्द्रिय की गुलामी के कारण मेतारज का जीव चण्डाल कुल मे जन्मा रसनेन्द्रिय के कारण मगु आचार्य को गधी गट्टर मे जन्म लेना पडा। स्पर्शेन्द्रिय के कारण सुकुमालिका को घरबारी होना पडा।

(9) अन्तर शत्रु विजय–अन्तर शत्रु 6 होते हैं।

(1) काम (2) क्रोध (3) मान (4) मद (5) हर्ष (6) लोभ।

काम यानि स्त्री को पुरुष की तरफ आकर्षण पुरुष को स्त्री की तरफ आकर्षण उदाहरण रावण काम के कारण सीताजी के सामने दीन बना।

(2) क्रोध–क्रोध से चण्डकोशी सर्प अनेक जीवो का हत्यारा बना भगवान महावीर स्वामी के उपदश से क्षमा धारण करने से देव बना इसी तरह गज सुकुमाल झाझरिया आदि ऋषि क्रोध पर विजय पाने पर मोक्ष गये।

(3) मान—मान के कारण बाहुबलजी को बारह महीने तक भयंकर कष्ट सहन करने पडे फिर भी केवल ज्ञान नही हुआ मान पर विजय पाने पर पैर उठाते ही केवल ज्ञान हुआ।

(4) मद—महावीर स्वामी का जीव मरीचि के भव मे कुल का मंद करने से नीच कुल मे उत्पन्न होना पडा।

(5) हर्ष—भौतिक वस्तु की प्राप्ति पर आनंद मानना। **लोभ**—के कारण सभूम चक्रवती नरक में गया।

(6) सौम्यता—स्वभाव मे सौम्यता रखनी चाहिये जिससे सद्‌भाव व सहानुभूति प्राप्त होती है। सौम्यता के अभाव मे महाभारत का युद्ध हुआ। गुणसागर मुनि की सौम्यता देखकर उदयसुर उसकी पत्नी 25 राजकुमार ने दीक्षा ली। वाणी विचार आकृति को शान्त, व सौम्य रखनी चाहिये जिससे हरेक कार्य में सबका सद्‌भाव और संयोग मिल सकता है।

(7) बुद्धि के आठ गुण—बुद्धि सुन्दर और सूक्ष्म होनी चाहिये बुद्धि की सुन्दरता व सूक्ष्मता से जीव अनेक प्रकार के संघर्षो से बच सकता है।

(1) शुश्रुषा, (2) श्रवण, (3) ग्रहण, (4) धारणा, (5) ऊहाधारण, (6) अपोह धारण, (7) अर्थ विज्ञान, (8) तत्त्व ज्ञान जिनकी बुद्धि आठ गुणो को धारण करती है उसका मानव जीवन सफल होता है।

(8) न्याय सम्पन्न वैभव—गृहस्थ जीवन के अन्दर धन वैभव की आवश्यकता रहती है। किन्तु वह धन वैभव नीति न्याय प्रमाणिकता से प्राप्त करना चाहिये। अन्यथा लाभान्तराय कर्म बांधता है।

उचित गुण 10

(1) उचित व्यय—अपनी आय के चार विभाग करे। उसमे से ¼ व्यापार मे लगाए वे खजाने मे रखे ¼ पुण्य के पोषण में खर्च करे ¼ अपनी निजी धर्म में खर्च करे। इसी प्रकार आय के अनुसार व्यय करने से स्वयं ऋणी बन करके चिन्तित नहीं बनता तथा धर्म मे खर्च करने से अध्यात्मिक संस्कार दृढ़ बनते।

(2) उचित वेश—अपने वैभव के अनुसार वेश भूषा पहनी चाहिये। श्रीमन्त होकर फटे टूट कपडे पहने तो कजूस कहलाता है। गरीब होकर श्रीमन्त वस्त्र पहले तो उडाउ गिना जाता उचित वेश पहना चाहिये। उचित वेश मे यह ध्यान रखे वह वेशभूषा दूसरो को विकार उत्पन्न करने वाला न हो नहीं तो उदवट वेश गिना जाता है।

(3) उचित विवाह—समान कुल शील धर्म स्वभाव के अनुकूल यदि शादी न हो तो गृहस्थ जीवन भी दु खमय मे वन जाता है। जैसे हिन्दू मुस्लिम का।

(4) उचित घर—घर स्वच्छ सुन्दर होना चाहिये अधिक खिडकियॉ दरवाजे नही होने चाहिये जिससे चोरो का भय नही रहता।

(5) उचित देश—जहॉ पर सर्प बिच्छु चोर डाकु का भय नही हो ऐसे क्षेत्र मे हमे रहना चाहिये। क्योकि उपद्रव वाले स्थान मे रहने से हमारे मन की एकाग्रता नहीं रहती। जिस कारण धर्म साधना अच्छी तरह नहीं कर सकते।

(6) उचित भोजन—मानव को अपनी प्रकृति के अनुसार उचित भोजन करना चाहिये। हमे जीभ के वश मे होकर जैसे तैसी अनुचित वस्तुओ को नही खाना चाहिये।

(7) अजीर्ण होने पर भोजन का त्याग करना चाहिये—अन्यथा शरीर पेट की अनेक बीमारियो से ग्रस्त हो जाता है जिससे असमाधि भय वन जाता है। जमिकद जैसे वनस्पति जिसे खाने से अनन्त जीवो की हत्या होती है। ऐसी अभक्ष्य वस्तुओ को नहीं खाना चाहिए अपना पेट ही भरना है तो दूसरी वस्तुओ से भर सकते है पेट ही एक मशीन है अत इसको आराम मिलना चाहिये। 15 दिन मे एक उपवास करना चाहिये। जिससे अपने मे आध्यात्मिक चतना जागृत होती है और स्वास्थ्य भी अच्छा रहता है। मर्यादित सात्विक भोजन से हमारे विचार भी सात्विक होते है।

(8) आदेश कालचर्या त्याग—अत हमे अयोग्य देशकाल निषिद्ध स्थानो मे नहीं जाना चाहिये। क्योकि ऐसे स्थानो मे रहने वाले लोगो के सम्पर्क के कारण हमारे जीवन मे बुराइयॉ प्रवेश कर जाती है सुनहरा मानव

जीवन पतन की गरत मे गिर जाता हे हमे अपने जीवन के विकास के लिये दूषित क्षेत्र से दूर रहना चाहिये। अच्छे व्यक्तियो की सगत से शुभकार्यो मे सहकार मिलता हे। मैत्री आदि शुभ भावो का प्रादुर्भाव होता ह।

(9) प्रसिद्ध देशाचार का पालन—हम जिस समाज मे रहते है वहाँ पर शिष्ट पुरुषो ने जो प्रणालिका चालु की हैं तदनुसार वर्तन करना चाहिये लोक विरुद्ध कार्य का त्याग करना चाहिये। जिसे हम लोक प्रिय बनते हैं। स्नेह प्रेम सद्‌भावो मे वृद्धि होती है।

(10) बलाबल विचार—कोई भी कार्य करने के पहले हमे अपने शारीरिक, मानसिक, आर्थिक, अध्यात्मिक, आदि दृष्टिकोण से सोचना चाहिये बाद मे अपने को शक्य लगे तो करना चाहिये। नही तो नही करना चाहिये यदि हमे बिना सोचे विचारे कार्य को किया तो बाद मे पश्चाताप करना पडता है।

(1) माता-पिता का पूजन करना—माता-पिता का विनय बहुमान आदर सत्कार पूजा भक्ति करनी चाहिये माता-पिता के उपकार हम पर अगणित है माता-पिता के उपकार का ऋण इतना है कि जिन्दे जिन्दे अपनी चमडी उतारकर माता-पिता के लिये जूते बनाये जाए तो भी उनके उपकार का ऋण नही चुकाया जाता श्रवण कुमार ने अपने माता-पिता को कावड मे बिठाकर 68 तीर्थो की यात्रा कराई थी भक्ति से आर्शीवाद मिलता है। शुभ बन्धन से हम सुखी बनते है। माता-पिता उपकारी है आज्ञा मानना प्रणाम करना विनय करना, सामने नही बोलना कटु वचन नही बोलना, धर्म मार्ग पर लगाकर ऋण मुक्त होना चाहिए।

(2) पोष्य पोषण—पोषण करने योग्य पत्नी, पुत्र, पुत्री विधवा छोटे भाई, बहन, भतीजे, नौकर आदि का पोषण करना चाहिये।

(3) अतिथि सेवा—अपरिचित परिचित साधर्मि पचमहाव्रत धारी साधु की सेवा करना चाहिए जैसे की दण्डवीर्य राजा के उपर इन्द्र प्रसन्न होकर कुण्डल हार धनुष बाण व रथ भेट किया।

(4) शिष्टाचार प्रशंसा—शिष्ट पुरुषो के आचार की प्रशसा निन्दा का त्याग आपत्ति मे धैर्य औचित्य कृतज्ञ आदि की प्रशसा करना।

(5) गुण पक्षपात–क्षमा नमता सरलता सतोष सज्जनता उदारता दाक्षिण्यता स्थिरता पवित्रता पापभीरूता इत्यादि गुणी आत्मा की प्रशसा करना दूसरो के दोषो को नही देखना दूसरो के दोष लिखे जाये देखे जाये तो उसकी अपेक्षा करना।

(6) परोपकार–दूसरो का कार्य बिना स्वार्थ से करना दूसरे के सुख–दु ख मे सहानुभूति बताना जिन शासन के लिये साधर्मिक के लिये तन मन धन से परोपकार करना।

(7) त्रिवर्ग अबाधा–धर्म अर्थ काम इन तीनो मे बाधा न पहुँचे ऐसा जीवन जीना चाहिये गृहस्थ मे रहकर अर्थ काम की साधना करने से पुण्य रूपी बीज नष्ट हो जाता है। अकले अर्थ मे मशगुल रहते तो मम्मण सेठ की तरह 7 नरक मे जाना पडता है।

(8) चारित्र ज्ञान वृद्ध–विश्व मे लोक उपकारियो की थोडी भी सविशेष भक्ति करते है तो ज्ञानवृद्ध और चारित्र पात्र जो जगत के और महान उपकारी हो उनकी सेवा मे सर्वस्व समर्पित करना चाहिये।

शिखर के पाँच गुण–मार्गानुसारी जीवन के गुणो मे चमकते सितारे के समान लोकप्रियता आदि श्रेष्ठगुण शिखर के गुण कहलाते है।

(1) लोकप्रियता–हमे ऐसा जीवन जीना चाहिये कि मरने के बाद भी लोग याद करे। जिनदत्तसूरि हेमचन्द्र सम्प्रति कुमारपाल जैसे लोकप्रिय जीवन जीवे।

(2) दीर्घ दृष्टि–हरेक कार्य को आगे पीछे सोचकर कार्य करे जिससे अच्छा परिणाम आवे। क्षण मात्र की सफलता देख कर राजी नहीं होना। हरेक व्यक्ति को भविष्य को सोचना चाहिये।

(3) विशेषज्ञता–उपर उपर का देख कर कार्य नही करना किन्तु सार असार कार्य अकार्य का विचार करके प्रवृति करे। इस प्रकार गुण दोनो के अन्तर को जानकर दोष का त्याग करके अपने गुण प्रकट करे उसे विशेषज्ञ कहते है।

(4) कृतज्ञता—देव गुरु माता-पिता या अन्य किसी व्यक्ति ने अपने ऊपर उपकार किया है। उन उपकारो को भूलना नहीं चाहिये उसके प्रति कृतघ्न बनना चाहिये।

(5) दया—अधे, लूले, नगडे, पगु, गूगे बहरे रोगी निराधार निर्धन आदि दु खी जीवो को मदद करनी चाहिये क्योकि दया धर्म का मूल है। अपने को दु.ख नही चाहिये सुख चाहिये वैसे दूसरो को भी दु.ख पसन्द नही है सुख पसन्द है। तो अपनी और से उनको मुख देना चाहिये सुख देने से सुख मिलता है। दु ख देने से दु ख मिलता है। इसलिये दु:खी जन पर दया करनी चाहिये।



कर्म प्रकृति 8

प्रश्न 1 कर्म किसे कहते है ?

उत्तर—जीव के राग द्वेष आदि परिणामो के निमित्त से कार्मण वर्गणा रूप पुद्गल स्कध जीव के साथ बन्ध को प्राप्त होते है उन्हे कर्म कहते है।

प्रश्न 2 जीव को दु ख सुख देने का निमित्त कौन है ?

उत्तर—जीव के बाधे हुए शुभा शुभ कर्म

प्रश्न 3 ये कर्म कितने प्रकार के हैं उनके नाम लिखो ?

उत्तर—कर्म आठ ज्ञानावरणीय दर्शनावरणीय वेदनीय मोहनीय आयु नाम गोत्र, अतराय।

प्रश्न 4 प्रत्येक कर्म जीव की कौन कौन सी शक्तियों के अवरोध करने वाले हैं ?

उत्तर—ज्ञानावरणीय ये ज्ञान की अनन्त शक्ति को दबाने वाला है दर्शानावरणीय दर्शन को वेदनीय आत्मीय अनन्त सुख को मोहनीय क्षायिक सम्यक्त्व को आयुष्य अक्षय स्थिति गुण को नाम कर्म अमूर्ति को गौत्र अगुरु लघु गुण को अन्तराय आत्मिक अनन्त शक्ति को रोकने वाला है।

प्रश्न 5 ज्ञानावरणीय कर्म कैसे बन्धता है—उस कर्म की स्थिति कितनी है।

उत्तर—ज्ञानी के कार्य मे विघ्न डालने से उनका अपमान करने से क्लेश द्वेष तथा ज्ञान की अन्तराय देने से ज्ञानावरणीय कर्म का बन्ध होता है जघन्य कर्म की स्थिति अन्तर्मुहूर्त और उत्कृष्ट तीस कोडा कोडी सागरोपम की।

प्रश्न 6. दर्शनावरणीय कर्म कैसे वन्धता उसकी स्थिति कितनी है ?

उत्तर—दर्शन मे अन्तराय देने से, विघ्न करने से दर्शना वरणी कर्म का बन्ध होता है उसकी स्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त की और उत्कृष्ट से तीस कोडा कोडी सागरोपम की।

प्रश्न 7. वेदनीय कर्म के कितने भेद ?

उत्तर—दो, साता असाता वेदनीय।

प्रश्न 8. साता असाता वेदनीय कर्म कैसे वनते ?

उत्तर—प्राणियो को शान्तवना देने से दया अनुकम्पा किसी भी प्रकार से कष्ट नही देने से साता वेदनीय कर्म का बंध होता है प्राणियों को अशान्ति देने से शारीरिक मानसिक दु ख देने से, निर्दयता से व्यवहार करने से असाता वेदनीय कर्म का बन्ध होता है।

प्रश्न 9. साता असाता वेदनीय की स्थिति कितनी है।

उत्तर—जघन्य से दो समय की उत्कृष्ट से पन्द्रह कोडा कोडी सागरोपम की स्थिति साता वेदनीय की होती है असाता वेदनीय की जघन्य एक सागरोपम के 7 भाग मे से 3 भाग मे एक पल्योपम के असख्यातवे भाग कम की और उत्कृष्ट से तीस कोडा कोडी सागरोपम की।

प्रश्न 10. मोहनीय कर्म कैसे बंधते उसका फल क्या है ?

उत्तर—तीव्र क्रोध मान माया लोभ करने से प्राणियो के साथ क्रूर व्यवहार करने से कर्म का बध होता है मोहनीय कर्म की 28 प्रकृतियॉ है। सत्य को नही जानता असत्य मे लिप्त रहता है।

प्रश्न 11. मोहनीय कर्म की आत्मा कैसी होती है ? उसकी स्थिति कितनी है।

उत्तर—जैसे मद्यपान के नशे से भान रहित हिताहित के मार्ग को मनुष्य नहीं समझ सकता, उसी तरह मोहनीय कर्म के उदय से मनुष्य आत्मज्ञान, सत्यमार्ग के साधन, अपने कर्त्तव्य को नही समझ सकता उसकी स्थिति जघन्य अन्तर मुहूर्त की उत्कृष्ट सित्तर कोड़ा कोडी सागरोपम होती है।

प्रश्न 12. आयुष्य कर्म के कितने भेद।

उत्तर—चार भेद नरक तिर्यंच मनुष्य देव।

प्रश्न 13 देवता नारकी मनुष्य तिर्यंच का आयुष्य कितना है।

उत्तर—नारकी व देवता का आयुष्य जघन्य दश हजार वर्ष का उत्कृष्ट तैतीस सागरोपम का तिर्यंच व मनुष्य का जघन्य अन्तर्मुहूर्त का उत्कृष्ट तीन पल्योपम का।

प्रश्न 14 नाम कर्म के कितने भेद है।

उत्तर—दो। शुभनाम कर्म और अशुभनाम कर्म। शुभनाम और अशुभ नाम कर्म कैसे बधता है। मन वचन काया की सरलता से न्याय मार्ग पर प्रवृत करने से परमात्मा का ध्यान करने से दान पुण्य करने से शुभनाम कर्म का बध होता है इनके विपरीत चलने से अशुभनाम कर्म का सचय होता है। नाम कर्म की स्थिति जघन्य आठ मुहूर्त की उत्कृष्ट बीस कोडा कोड सागरोपम की।

प्रश्न 15 गोत्र कर्म के कितने भेद है।

उत्तर—दो। उच्च गौत्र नीच गौत्र।

प्रश्न 16 उच्च नीच गौत्र कैसे बन्धता है उनका फल क्या है स्थिति कितनी है।

उत्तर—जाति कुल बल रूप तप, शास्त्र लाभ एश्वर्यता इन आठ प्रकार के मद से नीच गौत्र का बन्ध होता है। और ये वस्तुएँ प्राप्त होने पर भी गर्व न करे तो उच्च गौत्र का बन्ध होता है। उच्च गौत्र से जाति बल कुल रूप आदि उच्च मिलते हैं नीच गौत्र से ये आठो वस्तुएँ हल्की एव तुच्छ मिलती हैं। जघन्य आठ मुहूर्त की उत्कृष्ट बीस कोडा कोड सागरोपम होती है ।

प्रश्न 17 अन्तराय कर्म किस प्रकार से बधता है ? उस का फल क्या है ? स्थिति कितनी है ?

उत्तर—दान लाभ भोग उपभोग और वीर्य उनका किसी जीव के उपयोग मे अन्तराय आता है मनुष्य किसी को अन्तराय देता है वैसी ही अन्तराय स्वय को भोगनी पडती है। जघन्य अन्तर मुहूर्त की उत्कृष्ट बीस कोडा कोडी सागरोपम की स्थिति हैं।

❖ ❖ ❖

गुणस्थानक

9

प्रश्न 1. जीव के गुण की एक-एक से उन्नत सीढ़ियों के स्थान को क्या कहते हैं।

उत्तर—गुणस्थानक।

प्रश्न 2. गुणस्थानक कितने और कोन से है ?

उत्तर—चौदह (1) मिथ्यात्व, (2) सास्वादान, (3) मिश्र, (4) अविरति सम्यक दृष्टि, (5) देशविरति, (6) प्रमत, (7) अप्रमत, (8) निवृत्ति बादर, (9) अनिवृति बादर, (10) सूक्ष्म संपराय, (11) उपशात मोह, (12) क्षीण मोह, (13) सयोगी केवली, (14) अयोगी केवली।

प्रश्न 3. मिथ्यात्व अर्थात् क्या ?

उत्तर—दृष्टि का विपर्यास।

प्रश्न 4. मिथ्यात्व को दृष्टांत के द्वारा समझायें।

उत्तर—जैसे धतुरे के बीज खाने वाला सफेद वस्तु को पीली देखता है वैसे ही मिथ्यात्व मोहनीय कर्म के उदय से प्राणी जगत के वास्तविक स्वरुप को मिथ्या समझता है।

प्रश्न 5. मिथ्यात्व में ऐसा कौन-सा गुण है जिससे मिथ्यात्व गुण स्थानक कहलाता है ?

उत्तर—मिथ्यात्व मे रहने से गुप्त सर्व ज्ञान मे से अक्षर के अनत वे भाग जितना ज्ञान प्रगट रहता है इसलिये उसे गुणस्थानक कहते है।

प्रश्न 6. मिथ्यात्व मुख्य कितने प्रकार का है ?

उत्तर—पॉच अभिग्राहिक, अनभिग्राहिक अभिनिवेसिक, संशयिक, अणाभोगिक।

प्रश्न 7. अभिग्राहिक अर्थात् क्या ?

उत्तर–प्रत्येक असत्य को बिना विचारे ग्रहण करे।

प्रश्न 8 अनभिग्राहिक अर्थात् क्या ?

उत्तर–किसी बात का निर्णय किये बिना सत्य असत्य को स्वीकारे।

प्रश्न 9 अभिनिवेसिक अर्थात क्या ?

उत्तर–समझ बूझ कर अपना दुराग्रह रक्खे छोडे नहीं।

प्रश्न 10 सशयिक अर्थात् क्या ?

उत्तर–प्रत्येक सत्य बात परही सशय रक्खे।

प्रश्न 11 अणाभोगिक अर्थात् क्या।

उत्तर–बेभानावस्था जिस मे किसी बात की कुछ खबर न रहे।

प्रश्न 12 सास्वादान सम्यक्त्व का अर्थ क्या ?

उत्तर–आस्वादान सहित वह सास्वादान।

प्रश्न 13 आस्वादान का'अर्थ क्या ?

उत्तर–ऊपर के गुणस्थानक को त्यागते ही इस गुणस्थान मे जीव छ आवलिका जितना समय रहता है। अर्थात् ऊपर के स्थान से नीचे के स्थान मे आते हुए मध्य के समय मे पूर्व का स्वाद रहता है।

प्रश्न 14 सास्वादान एक भव मे कितने समय आता है।

उत्तर–पाँच वक्त।

प्रश्न 15. सास्वादान सम्यक्त्वी उत्कृष्ट कितने समय में मोक्ष जाता है।

उत्तर–अर्द्ध पुदगल परावर्तन मे आखिर मोक्ष जाता है।

प्रश्न 16 पुदगल परावर्तन का समय कितना।

उत्तर–अनत उत्सर्पिणी और अवसर्पिणी जिसमे समाजाय।

प्रश्न 17 मिश्र गुणस्थानक का अर्थ क्या ?

उत्तर–सम्यक्त्व और मिथ्यात्व की मिश्रता।

प्रश्न 18 मिश्र गुणस्थान की स्थिति कितनी है ?

उत्तर–अन्तर मुहूर्त रहकर या तो ऊपर चढता है या नीचे गिरता है।

प्रश्न 19. अविरति सम्यक्त्व का अर्थ क्या ?

उत्तर–असत्य मान्यता का त्याग सत्य मान्यता पर श्रद्धा परन्तु व्रत को न आदर सके।

प्रश्न 20. सम्यक्त्व के कितने भेद है ?

उत्तर–पॉच क्षायिक, क्षयोपशमिक, औपशमिक, सास्वादन, और वेदक।

प्रश्न 21. क्षायिक क्षयोपशमिक और औपशमिक का अर्थ क्या है।

उत्तर–मोहनीय कर्म की मूल दो प्रकृतियॉ है चारित्र मोहनीय 11 दर्शन मोहनीय इनमे से चारित्र मोहनीय की 25 प्रकृतियॉ है और दर्शन मोहनीय की तीन (1) समकित मोहनीय, (2) मिश्रमोहनीय, (3) मिथ्यात्व मोहनीय। ये तीन और दर्शन मोहनीय की 25 कुल 28 प्रकृति दर्शन त्रिक और चार अनतानुबधी क्रोध मान माया, लोभ इन सात प्रकृति का क्षय करने से क्षायिक समकित गिना जाता है। इनका उपशम करने से औपशमिक समकित और कुछ क्षय और कुछ उपशम करने से क्षयोपशमिक समकित गिना जाता है।

प्रश्न 22. देशविरति गुणस्थान में कितनी प्रकृतियो का क्षयोपशम होता है ?

उत्तर–सात प्रकृति पहले कही हुई वह और अप्रत्याख्यान क्रोध मान, माया, लोभ, इन ग्यारहो का क्षयोपशम होता है।

प्रश्न 23. पॉचवें गुण स्थान वाला जीव कितने भव में मोक्ष जाता है।

उत्तर–जघन्य तीसरे भव मे उत्कृष्ट पन्द्रहवे भव मे मोक्ष जाता है।

प्रश्न 24. प्रमत और अप्रमत संयति का अर्थ क्या ?

उत्तर–यह दोनो सर्व विरति होते हुए भी संयम मे थोड़ा बहुत प्रमाद सेवने वाले होते है वे प्रमत सयति और सयम मे प्रमाद सेवने वाले हो उन्हे अप्रमत संयति कहते है।

प्रश्न 25. छठे और सातवें गुण स्थानक में कितनी प्रकृतियों का क्षयो पशम होता है ?

उत्तर–छठे गुण स्थान मे ग्यारह प्रकृति पहिले कही वह प्रत्याख्यान के क्रोध मान माया लाभ यह पन्द्रह प्रकृति का क्षयोपशम होता है और सात म गुणस्थान मे सज्वलन क्रोध सहित सोलह प्रकृति का क्षयोपशम होता है।

गुणस्थान

प्रश्न 1 छठे सातवे गुणस्थान मे कोन होता है।

उत्तर–पॉच महाव्रतधारी साधु पुरुष।

प्रश्न 2 साधुपना एक भव मे मन से कितनी वार आता है।

उत्तर–उत्कृष्ट नव सौ वार।

प्रश्न 3 निवृति वादर गुणस्थान में कितनी प्रकृतियो का क्षयोपशम होता है।

उत्तर–आठवे गुणस्थानक मे पहिले कही हुई सोलह प्रकृति और सज्वलन का मान मिलकर 17 प्रकृति का क्षयोपशम होता है।

प्रश्न 4 निवृत्त वादर गुणस्थानक की कैसी स्थिति होती है।

उत्तर–शुक्ल ध्यान प्रकट होता है सहज समाधि रहती है केवल ज्ञान रूप सूर्य के उदय के पूर्व ही अनुभव ज्ञान रूप अरूणोदय प्रकट होता है।

प्रश्न 5 निवृति वादर गुणस्थानक मे हर एक जीवन जाने वाला अन्त मे केवल्य ज्ञान की सीमा तक पहुँच सकता है।

उत्तर–इस जगह उपशम और क्षपक ऐसी दो विचार की श्रेणियाँ है इसमे से जो उपशम श्रेणी पर चढता है वह ग्यारहवे गुणस्थान मे जाकर पतित हो जाता है और जो क्षपक श्रेणी पर चढता है वह कर्म के दल को तोडते समय समय पर अनत गुणी विशुद्धि करते तेरहव गुणस्थान म जा केवल ज्ञान प्राप्त कर लेता है इस गुण स्थानक का दूसरा नाग अपूर्वकरण।

प्रश्न 6 इस गुणस्थान वाला कितने भव करके मोक्ष जाता है।

उत्तर–जघन्य इसी भव मे और उत्कृष्ट तीसरे भव म।

प्रश्न 7 नवमें अनिवृति वादर गुणस्थान में कितनी प्रकृतियों का क्षयोपशम होता है।

उत्तर—सतरह पहिले कही वे और सज्वलन की माया स्त्री वेद पुरुष वेद नपुसक वेद सब मिलकार इकवीस प्रकृति का क्षयोपशम करता है।

प्रश्न 8. दसवां सूक्ष्म संपराय गुण स्थानक में कितनी प्रकृतियों का क्षयोपराम होता है।

उत्तर—इकवीस पहिले कही वे और हास्य रति अरति भय शोक जुगुप्सा इन सत्ताईस प्रकृतियो को क्षयोपशम करता है।

प्रश्न 9. ग्यारहवां उपशांत मोह गुणस्थान में कितनी प्रकृतियों का क्षयोपशम होता है।

उत्तर—सत्तावीस पहिले कही वे और संज्वलन का लोभ ऐसी अट्ठाइस प्रकृति का उपशम करता है।

प्रश्न 10. उपशांत मोह का अर्थ क्या है ?

उत्तर—उपशांत अर्थात् जिसने मोह सर्वथा दबा दिया है अर्थात् पानी के नीचे मैल स्थित रहता है परन्तु पानी निर्मल दृष्टिगत होता है उसी तरह यहॉ पर मोहनीय कर्म के उपशम होने से अद्यवसाय निर्मल होते हैं।

प्रश्न 11. इस गुणस्थानक का परिणाम क्या है ?

उत्तर—इस गुणस्थानक मे जो मर जाये तो अनुत्तर विमान के देव बनते हैं नही तो चौथे गुण स्थान मे रहते कदाचित पतित हो जाये तो प्रथम गुणस्थानक मे आ जाता है परन्तु वहॉ से आगे नहीं चढते।

प्रश्न 12. बाहरवां क्षीण मोहनीय गुणस्थानक में कितनी प्रकृतियों नष्ट होती है।

उत्तर—पहिले कही हुई अट्ठाईस प्रकृतियो को सर्वथा नष्ट करता है।

प्रश्न 13. उस गुणस्थानक की स्थिति (परिणाम) कैसी होती है।

उत्तर—क्षपक श्रेणी, क्षयिक भाव, क्षायिक समकित और यथा ख्यात चारित्र मे रहते कारण सत्य जोग सत्य भाव अकषाय वीतरागी अविकारी वर्धमान परिणामी अप्रतिपाती होता है वहॉ अन्तर मुहूर्त रहता है और इसी जगह ज्ञानावरणीय, दर्शना वरणीय, अन्तराय का भी क्षय कर तेरहवे गुणस्थानक के पहिले समय मे ही केवल ज्योति प्रकट करता है उसे क्षीण मोहनीय गुणस्थानक कहते है।

प्रश्न 14 तेरहवे गुणस्थान का नाम क्या ? और उनका लक्षण क्या ?

उत्तर–मन वचन काया से जिनकी वीर्य प्रवृत्ति होती है उसे सयोगी केवली गुणस्थानक कहते है इस गुणनास्थानक पर घाती कर्म का सर्वथा क्षय हो जाने से केवल ज्ञान केवल दर्शनादि गुण प्रकट होते है।

प्रश्न 15 यह गुणस्थान मे कितने समय रहता है।

उत्तर–जघन्य अन्तर मुहूर्त और उत्कृष्ट थोडा कम क्रोड पूर्व।

प्रश्न 16 अयोगी केवली गुणस्थानक अर्थात् क्या ?

उत्तर–इस गुणस्थानक मे मन वचन काया के जोग और प्राण का निरोधकर रूपातित परम शुक्ल ध्यान म पचाक्षर अ इ उ ऋ लृ ह स्व स्वर बोलने जितना समय लगे वेदनीय आयुष्य नाम गौत्र कर्म का क्षय कर शरीर से मुक्त होता है। उसके बाद सिद्ध शिला पर जाती है।



दशम–विभाग

वार्षिक कर्त्तव्य

विश्व वत्सल्य अनन्त उपकारी परमर्षियो ने आवश्यक कर्त्तव्यो का उपदेश देकर प्रति वर्ष कम से कम एक बार करने योग्य 11 कर्त्तव्य बताये है।

(1) श्रीसंघ पूजा–साधु साध्वी श्रावक श्राविका रुप चतुर्विध श्री सघ का पूजन। श्री सध यह श्रमण प्रधान होता है गुणसम्पन्न श्रीसघ शासन का आधार है श्री सघ ससार रसिक नही होता। श्री सघ ससार से विरक्त और ससार का पोपक होता है श्री सघ की पूजा यह कल्याणकारी का परम कर्त्तव्य है शक्ति होतो श्री सघ की साधर्मिवात्सल्य यथा शक्ति करना आवश्यक है इस विश्व मे हरेक का सयोग सहज है। परन्तु साधर्मिका सयोग दुष्प्राप है महापुण्य के उदय से ही साधर्मिका का सयोग मिलता है। साधर्मिका का सगम को भी ज्ञानियो ने महाफलप्रद कहा है तो फिर उनकी योग्य सेवा का फल अतुल्य ही होता है।

(2) साधर्मिका भक्ति–शक्ति हो तो हमेशा अपने वहॉ निमत्रण करके सुन्दर से सुन्दर रीति से अशन, पान आदि उत्तम वस्तुओं से भक्ति करनी चाहिये। आपत्ति मे डूबे हुए साधर्मिको धन देकर उद्धार करना धर्म से रहित साधर्मिका विविध प्रकार से धर्म मे स्थिर करना धर्म की आराधना मे जोडना।

(3) यात्रात्रिक–वर्ष मे एक बार तो यह कर्त्तव्य विधि पूर्वक करना चाहिये। शक्ति न हो तो महानुभावो को फण्ड करके भी इस कर्त्तव्य को अवश्य वर्ष मे एक वार तो आराधना करनी चाहिये जिनेश्वर देवो के उद्देश्य से जो महोत्सव किया जाये उसे यात्रा कही जाती है। इस यात्रा मे तीन विभाग है।

(1) अष्टाह्निका यात्रा (2) रथयात्रा (3) तीर्थयात्रा।

अष्टाह्निका–श्रावक का हर वर्ष कम स कम एक अट्ठाई महोत्सव वडे धूमधाम से मनाना चाहिये।

(2) रथ यात्रा–रथ यात्रा म भगवान का जुलूस निकाला जाता है। चाँदी के रथ म प्रभु को स्थापित कर स्नात्र महोत्सव पूवक वेण्ड वाजे सहित सारे नगर म भगवान का रथ घुमाया जाता है भव्य आत्माओ को धर्म की प्राप्ति होती है। शिथिल बन हुये धर्म म सुस्थिर बनत है। परन्तु करन वाले को उदारता से आकर्षक रथ यात्रा करनी चाहिये।

(3) तीर्थ यात्रा–श्री शत्रुजय और गिरनार आदि तथा श्री तीर्थंकरो की जन्म भूमि आदि पॉच कल्याणक भूमि तीर्थ कहे जाते है क्योकि जो ससार समुद्र से तारे वह तीर्थ इन तीर्थो की यात्रा विधिपूर्वक एक वर्ष मे एक वार अवश्य करनी चाहिये सम्यग् दर्शन शुद्धि का प्रवल आलम्बन है।

(4) स्नात्र महोत्सव–स्नात्र महोत्सव नाम का चौथा कर्त्तव्य हरेक श्रावक को करना चाहिये। यदि प्रतिदिन न हो सके तो पर्व मे तो अवश्य करना चाहिये और यदि यह भी सम्भव न हो तो वर्ष मे एक वार तो अवश्य आडम्बर पूर्वक सव सामग्रीयो से करनी चाहिये जिससे आत्मा धर्म के सन्मुख बने। यह उत्सव सम्यग्दर्शन की शुद्धि का कारण है।

(5) देवद्रव्य की वृद्धि–जिन मन्दिर जिनमूर्ति की रक्षा करना तथा भक्ति पूर्वक जिर्णोद्धार कराना ज्ञान दर्शन चारित्र रूप गुणो की वृद्धि करने वाला है अन्त म मोक्ष सुख देने वाला है। दव द्रव्य की हानी से दुर्गति होती है इसलिये दव द्रव्य की वृद्धि क लिय तत्पर रहना चाहिये।

(6) महापूजन–पूर्व दिनो मे जिनालय मदिर चैत्य म शान्तिस्नात्र सिद्ध चक्रपूजन भक्तामर पूजन आदि महापूजन पढाना चाहिये। वर्ष म एकवार अवश्य करना चाहिये। पव के दिनो म परमात्मा की अग रचना विशिष्ट आगी जिससे अनक आत्माएँ परमात्म दर्शन से निर्मल एव पाप कर्म से मुक्त बनती है।

(7) **रात्री जागरण**—कल्याणर्थी आत्मा को तीर्थस्थान पर पर्व के दिन कल्याणक दिनो मे गुरु निर्वाण के दिन ऐसे योग्य प्रसग पाकर रात्री जागरण अवश्य करनी चाहिये। रात्रि धर्मध्यान, धर्म विचार, धर्म भावना मे पसार करनी इस रात्री मे वीतराग भक्ति गुणगान मे रक्त रहना चाहिये।

(8) **श्रुत ज्ञान की भक्ति**—श्रुत ज्ञान की भक्ति प्रतिदिन ज्ञान पूजा करनी चाहिए जिन मूर्ति के समान श्रुतज्ञान भी आधारभूत है। आगम न होतो अधेरा है प्रतिदिन न होतो वर्ष मे एक बार ज्ञान पंचमी के दिन अवश्य करनी चाहिये उस दिन ज्ञान भक्ति करना ग्रन्थ पुस्तकें छपाना, आदि श्रुत भक्ति है।

(9) **उद्यापन**—तप के समर्थन के लिये उद्यापन करना चाहिए। उद्यापन मन्दिर के शिखर के ऊपर कलश चढाने जैसा है अनेक प्रकार के तप करने के बाद तप की प्रभावना के लिये उस तप सम्बन्धी उद्यापनो मे कम से कम वर्ष मे एक बार अवश्य विधि मुताबिक करना चाहिये।

(10) **तीर्थ प्रभावना**—कम से कम वर्ष मे एक बार प्रभावना आदि करनी चाहिये। तीर्थ दो प्रकार का है। स्थावर पर्व जगम तीर्थ की प्रभावना करनी चाहिये गुरु प्रवेश महोत्सव तीर्थ की प्रभावना का कारण है। सभी प्रकार के आडम्बर से श्री सघ गुरु के सामने जावे शक्ति मुताबिक बडे आडम्बर पूर्वक गुरु प्रवेश करावे। कौणिक राजा, प्रदेशी राजा ने महोत्सव किया जैसा महोत्सव आदि तीर्थ प्रभावना करे।

(11) **आलोचना**—श्रावक का अन्तिम कर्त्तव्य है प्रायश्चित। गुरु का योग हो तो जघन्य से वर्ष मे एक बार अवश्य प्रायश्चित लेना चाहिये जम्बुद्वीप में जितने पर्वत है रेती है वह सब सोने की रत्न रूप हो जाये, उन सब का दान दे तो भी एक दिन का पाप नही छूटता। परन्तु गुरु मुख से प्रायश्चित लेने से अर्जुन मालि, दृढ़प्रहारी जैसे स्त्री, ब्राह्मण, बाल, गाय इन चार की हत्या करने वाला चोर भी प्रायश्चित से उसी भव मे मोक्ष गया प्रतिवर्ष ये अग्यारह कर्त्तव्य मुक्तिगामी आत्माओ को अवश्य आदरपूर्वक करने चाहिये।

जीवन कर्त्तव्य (1) जिन मन्दिर बनाना (2) गृह मन्दिर बनवाना, (3) जिनबिम्ब स्थापित करना (4) प्रभुप्रतिष्ठा कराना, (5) दीक्षा महोत्सव कराना (6) पददान (7) आगम लेखन (8) पोषध शाला बनवाना।

चातुर्मासिक कर्त्तव्य–(1) नियम ग्रहण (2) देशावगासिक (3) सामायिक (4) अतिथि संविभाग (5) विविधतप (6) अध्ययन, (7) स्वाध्याय (8) यतना पालन।



12 भावना

(1) अनित्य भावना—पैसा परिवार युवावस्था शरीर सत्ता आदि सभी वस्तु अनित्य है। आज जिस अवस्था में वे वस्तुएँ है कल वे उस अवस्था मे नही रहेगी। दशरथ राजा ने वृद्ध कचुकी को देखकर परिवर्तन शीलता का विचार कर चिन्तन के द्वारा अनित्य भावना प्राप्त कर वैराग्य को प्राप्त किया अनित्य भावना का चिन्तन करते-करते भरत महाराज को वैराग्य हुआ।

(2) अशरण भावना—दुःख और मरण के समय ससार के पत्नी माता-पिता आदि कोई शरण नही। जैसे कौशाम्बी देश के राजपुत्र को शूल का रोग शरीर मे हुआ तब पत्नियो ने आसू बहाने लगी। माता-पिता ने स्नेह वात्सल्य के कारण बडे-बडे वैद्य डॉक्टर आदि बुलाये किन्तु वेदना शान्त नही हुई तब राजकुमार ने सोचा वास्तव मे ससार मे मेरा कोई शरण नही सिर्फ धर्म ही शरण है राजकुमार ने रात्री मे चिन्तन किया अभिग्रह धारण किया मेरा रोग आज ही रात्री मे समाप्त हो गया तो दूसरे दिन प्रभात मे चारित्र ले लूगा इस प्रकार अशरण भावना के द्वारा रोग शान्त हुआ दूसरे दिन चारित्र लिया अनाथी कुमार।

(3) संसार भावना—इस संसार मे जीव चारो गतियो मे परिश्रम करता रहता है सुख दु.खो को भोगता रहता है ससार मे अनेक प्रकार के सम्बन्धो से जुडता रहता है ससार भावना का चिन्तन करते मल्लि नाथ के छ. मित्रो को वैराग्य हुआ।

(4) एकत्व भावना—जीव अकेला आया है। अकेला जायेगा सुख-दु.ख स्वय भोगता है। नमिराज ऋषि व्याधिग्रस्त हो गये। रानियॉ चन्दन घिसने लगी। कगन टकराने की आवाज नमिराज सहन नही कर पाये। रानियो ने

सब कगन खोलकर सिर्फ एक कगन रखा। आवाज आनी वद हो गई नमिराज का चिन्तन ने मोड लिया एकत्व मे ही शान्ति है। अनेकत्व मे अशान्ति है। ससार मे सभी वस्तुओ का त्याग कर व्रत स्वीकार करूँगा। रोग शान्त हुआ सवेरे चारित्र लिया। इस प्रकार एकत्व भावन भाते कर्मों को रोकने मे समर्थ बने।

(5) अन्यत्व भावना–परिवार पैसे पत्नी शरीर वगैरह सभी पर है मेरे नहीं मरुदेवी माता ने तथा मृगापुत्र ने इस चिन्तन से धर्म ध्यान पर चढकर के शुक्ल ध्यान पर आरूढ होकर केवल ज्ञान प्राप्त किया।

(6) अशुचि भावना–यह शरीर मास खून हड्डियाँ से बना हुआ है मलमूत्र से भरा हुआ है। नाक आदि से अपवित्र वस्तुएँ बहती रहती हैं सुगन्धी आहार भी शरीर मे दुर्गंध वाला बन जाता है। अशुचिभावना पर चिन्तन करते हुये सनत्कुमार को वैराग्य हुआ।

(7) आश्रव भावना–आश्रव के 42 भेद बताये हैं। उनसे आत्मा मे कर्म आते ही रहत हैं ओर आत्मा उनसे भारी बनती रहती है ये सब कब रूकेगे इत्यादि आश्रव भावना का चिन्तन करते हुए समुद्र पाल मुनि को वैराग्य हुआ।

(8) सवर भावना–समिति गुप्ति वगैरह 57 भदो का चिन्तन करते हुए हरिकेशी बल मुनि को वैराग्य हुआ।

(9) निर्जरा भावना–आगे कहे जाने वाले अनशन आदि निर्जरा के 12 भेदा का चिन्तन करते अर्जुन माली को वैराग्य हुआ।

(10) लोकत्वभावना–चौदह राजलोक उसमे रहे हुए 6 द्रव्य देव व नारक के स्थान असख्यात द्वीप समुन्द्र वगैरह का चिन्तन करते शिवराजर्षि को वैराग्य हुआ।

(11) बोधि दुर्लभ भावना–अनादि काल से भटकते हुए जीव को चक्रवर्तीपना देवपना राजपना इत्यादि सुलभ है। किन्तु सम्यग्दर्शन प्राप्त

करना दु:शक्य है अत सम्यक्त्व प्राप्ति के लिये प्रयत्नशील रहे व प्राप्त सम्यक्त्व वाली आत्मा उनका रक्षण करे। इस प्रकार चिन्तन करते ऋषभदेव के 99 पुत्र को वैराग्य हुआ।

(12) धर्मभावना–ससार सागर से पार उतारने वाला धर्म ही है धर्म के प्रभाव से सुख मिलता है लोक भी धर्म प्रभाव से अंतरिक्ष मे निराधार रहा हुआ है। इत्यादि चिन्तन करते धर्मरूचि अणगार को वैराग्य हुआ।

***(i)* मैत्री भावना**–इस विश्व मे मेरा कोई भी शत्रु नही है। प्राणि मात्र के साथ मेरी मित्रता है विश्व के प्राणी मात्र का कल्याण होवे यही हार्दिक अभिलाषा है और मेरा आत्म कल्याण का अपूर्व उपाय है ऐसा चिन्तन से युगबाहु मर कर देवलोक मे गया।

***(ii)* प्रमोद भावना**–इस विश्व मे सुन्दर परिणाम को लाने वाले गुणो की प्राप्ति दुर्लभ है ऐसा मानकर दूसरो मे जो गुण दिखे उनको देखकर अपना हृदय आनन्द विभोर हो जावे वह अपनी आत्मा मे गुणों को विकसित करने का एक अमूल्य उपाय है।

***(iii)* कारुण्य भावना**–रोग बुढापा दरिद्रता सद्धर्म की अप्राप्ति से दु:खी प्राणियो को देखकर हृदय मे दया परिणाम अकुरित होवे बिचारे ! ये प्राणी दुःख से मुक्त कैसे होवे इत्यादि चिन्तन ।

मध्यस्थ भावना–जिन आत्माओ के कल्याण के लिए उनको सन्मार्ग पर लाने के लिय प्रयत्न करने पर भी यदि वे सन्मार्ग पर नही आते तो उनके प्रति द्वेषी बनकर तिरस्कार की भावना न लाकर उनकी उपेक्षा करनी चाहिये यही मध्यस्थ भावना है।



सामान्य प्रश्नोत्तर 12

प्रश्न 1 धर्म किसे कहते हैं।
उत्तर—जो दुर्गति मे जाते हुए जीव का बचाता है।
प्रश्न 2 धर्म का मूल क्या है।
उत्तर—विनय।
प्रश्न 3 विनय का अर्थ क्या है।
उत्तर—विशिष्ट नीति (न्याय)।
प्रश्न 4 पाप का भूल क्या है।
उत्तर—लोभ।
प्रश्न 5 रोग का मूल क्या है।
उत्तर—स्वादिष्ट वस्तु खाने का कुव्यसन।
प्रश्न 6 दु ख का मूल क्या है।
उत्तर—राग (स्नेही)।
प्रश्न 7 दु ख किसे कहते हैं।
उत्तर—परतन्त्रता।
प्रश्न 8 सुख किसे कहते हैं।
उत्तर—सज्ञान स्वतन्त्रता।
प्रश्न 9 सुख का निदान क्या है।
उत्तर— सतोष।
प्रश्न 10 सतोष का अर्थ क्या है।
उत्तर—इच्छाओ को रोकना।
प्रश्न 11 ससार में जागृत कौन है।
उत्तर—विवेकी समदृष्टि।
प्रश्न 12. ससार में सुप्त कौन है।
उत्तर—अविवेकी मिथ्या दृष्टि।
प्रश्न 13 ससार में मदिरा कौन सी है।
उत्तर—मोह।

प्रश्न 14. संसार में अमृत कौन सा है।
उत्तर– अनुभवियो का हितोपदेश।
प्रश्न 15. संसार में अग्नि कौन सी है।
उत्तर–ईर्ष्या।
प्रश्न 16. गुरु कौन हो सकता है ?
उत्तर–जो आत्मा के हितार्थ उपदेश देता है।
प्रश्न 17. हित का अर्थ क्या है ?
उत्तर–कर्म दुःख से मुक्त होना।
प्रश्न 18. शिष्य किसे कहते हैं ?
उत्तर–जो गुरु की आज्ञा धारक और शक्तिकारक
प्रश्न 19. दरिद्री कौन है ?
उत्तर–अधिक तृषणावान मनुष्य।
प्रश्न 20. श्रीमंत कौन है ?
उत्तर–सर्वथा सतोषी
प्रश्न 21. मूर्ख कौन है ?
उत्तर–जो अमूल्य मनुष्य भव व्यर्थ गमाता।
प्रश्न 22. चतुर कौन है ?
उत्तर–जो जन्म सफल करता है।
प्रश्न 23. शत्रु कौन है ?
उत्तर–मनोविकार
प्रश्न 24. मित्र कौन है ?
उत्तर–आत्म बोध
प्रश्न 25. अनित्य क्या है ?
उत्तर–पौद्गलिक सर्व वस्तुएँ।
प्रश्न 26. अचल क्या है ?
उत्तर–परमात्म स्वरूप।
प्रश्न 27. संसार किसका दास है ?
उत्तर–आशा का।
प्रश्न 28. सातव्यसन कौन से है ?
उत्तर–जुआ, मांस, मद्य, वैश्यागमन, शिकार, चोरी, परस्त्री।

प्रश्न 29 क्या जानना मुश्किल है ?
उत्तर—स्वदोष तथा अपना स्वरूप।
प्रश्न 30 जड का धर्म क्या है ?
उत्तर—सडना गिरना रूपान्तर होना।
प्रश्न 31 ससार का बीज क्या है ?
उत्तर—राग द्वेष
प्रश्न 32 ज्ञान किसे कहते है ?
उत्तर—जो यर्थाथ को जाने।
प्रश्न 33 साधु कौन है ?
उत्तर—जो आत्म कार्य साधता है।
प्रश्न 34 मनुष्य कौन है ?
उत्तर—जिसमे मनुष्यत्व हो।
प्रश्न 35 मनुष्य शीर मे पशु कौन है।
उत्तर—जिसमे सारा सार हिताहित का ज्ञान न हो।
प्रश्न 36 देव कौन है ?
उत्तर—जिसमे दिव्य गुण भरे हो।
प्रश्न 37 शास्त्र का अर्थ क्या है ?
उत्तर—जिससे शिक्षा मिलती हो।
प्रश्न 38 सूत्र किसे कहते हैं ?
उत्तर—जिसमे मूल कम भावार्थ अधिक हो।
प्रश्न 39 अस्थिर वस्तु कौन सी है।
उत्तर—धन यौवन आयुष्य।
प्रश्न 40 शल्य की तरह दु खदाई कौन है ?
उत्तर—गुप्त कृत पाप कर्म।
प्रश्न 41 आदरने योग्य क्या है ?
उत्तर—सद्‌गुरु के वचन।
प्रश्न 42 सच्चा लाभ कौन सा है ?
उत्तर—आत्म स्वरूप की पहचान।
प्रश्न 43 विश्व को किसने जीता है ?
उत्तर—जिसने मन को जीत लिया है।

प्रश्न 44. अभय का स्थान कौन-सा है ?

उत्तर—यर्थाथ वैराग्य।

प्रश्न 45. समस्त संसार में उन्नत कौन है ?

उत्तर—निष्पृही मानव (निराशी)

प्रश्न 46. मन कैसे जीता जा सकता है।

उत्तर—वैराग्यमय अभ्यास से।

प्रश्न 47. धर्म का स्वरूप क्या है ?

उत्तर—परम सत्य।

प्रश्न 48. धर्म वृक्ष का फल क्या है ?

उत्तर—मोक्ष (निर्वांण)

प्रश्न 49. मोक्ष का प्रथम चरण कौन सा है ?

उत्तर— सच्चे शास्त्र का श्रवण।

प्रश्न 50. मोक्ष का बीज क्या है ?

उत्तर—सम्यक् ज्ञान (सच्चा ज्ञान)

प्रश्न 51. मोक्ष फल का रस क्या है ?

उत्तर—परमानन्द।

प्रश्न 52. परमानन्द स्वरूप किसका है।

उत्तर—अपनी आत्मा का।

प्रश्न 53. सर्व दुःखों से छूट जाना उसका नाम क्या है ?

उत्तर—मुक्ति या मोक्ष।

प्रश्न 54. चार गति में से मोक्ष किस गति में से जा सकते हैं।

उत्तर—मनुष्य।

प्रश्न 55. क्या करने से कर्मो की निर्जरा होती है।

उत्तर—तपस्या करने से।

प्रश्न 56. बहुत पाप करने वाला जीव कहा जाता है।

उत्तर—नरक मे।

प्रश्न 57. प्रमाद का अर्थ क्या है।

उत्तर—धर्म कार्य मे आलस्य करना।



तप महिमा 4

प्रश्न 1 एक पोषध सहित पोरसी का क्या फल है ?

उत्तर–3 अरब 46 करोड 22 लाख 22 हजार 222 पल्योपम नारकी के दुख टलते हैं।

प्रश्न 2 घडी घडी के पच्चखाण से क्या लाभ मिलता है।

उत्तर–2 करोड 53 हजार 408 पल्योपम नारकी के दुख टलते है।

प्रश्न 3 एक नवकारसी का क्या फल है।

उत्तर–100 वर्ष का नारकी के दुख टलते है।

प्रश्न 4 एक पोरसी का क्या फल है।

उत्तर–एक हजार वर्ष का।

प्रश्न 5 साठ पोरसी का क्या फल।

उत्तर–दस हजार वर्ष नारकी के दुख टलते हैं।

प्रश्न 6 परि मुड्ड का क्या फल है ?

उत्तर–एक लाख वर्ष का नरक का आयुष्य टलता है।

प्रश्न 7 एक एकासने का क्या फल है ?

उत्तर–दस लाख वर्ष का नारकी के दुख टलते हैं।

प्रश्न 8 एक एकल ठाना का क्या फल के दुख टलते हैं।

उत्तर–एक करोड वर्ष का नारकी के दुख टलते हैं।

प्रश्न 9 एक आयविल से क्या फल मिलता है।

उत्तर–एक अरब वर्ष का नारकी के दुख टलते हैं।

प्रश्न 10 एक उपवास का क्या फल मिलता है।

उत्तर–1000 करोड वर्ष का नारकी के दुख टलते हैं।

प्रश्न 11 एक अभिग्रह का क्या फल है।

उत्तर–10000 क्रोड वर्ष का नारकी के दुख टलते हैं।



बहु रत्न वसुन्धरा

(दिव्य पुरुषों की गौरव गाथा)

(1) विमलशा ने पूरी जमीन पर स्पेश्यल बनाई हुई चोरस सुवर्ण मुद्राए बिछाकर आबु पर प्रभु मदिर के लिये जमीन खरीदी।

(2) विमलशा ने 18 करोड 53 लाख रुपये खर्चकर देलवाडा मे मदिर का निर्माण कराया।

(3) वस्तुपाल तेजपाल ने आबु पर 12,5300,000 द्रव्य खर्च कर जिन मन्दिर का निर्माण करवाया।

(4) बाहदश ने आकर कहा, मदिर मे दारो पड गई है ऐसे अशुभ समाचार लाने वालो को भी दुगना इनाम दिया।

(5) देदाशा ने सोने की पौषधशाला बनाने को तैयार हो गये। परन्तु चोरी के भय से चूने मे केशर मिश्रित करके पौषधशाला बनाई।

(6) कुमार पाल राजा ने तारगा, खभात, पाटण कुमारियाजी आदि स्थानो मे 1944 जिनालयो का निर्माण कराया 16,000 मन्दिरो का जिर्णोद्वार कराया 36,000 जिन बिम्ब भराये। अपने पिताजी के आत्म श्रेयार्थ त्रिभुवनपाल विहार नामक भव्य प्रसाद का निवार्ण कराया। उसमे रत्न की 24 प्रतिमाजी सुर्वण की 24 प्रतिमाजी और 24 की चॉदी की प्रतिष्ठा करवाई। मूलनायक नेमिनाथ प्रभु की 125 इच की रिष्ट रत्नमयी प्रतिमा भराई इस जिनालय मे कुमार पाल ने छियानवे करोड सोना मुहरो का सद्व्यय किया। कुमार पाल राजा त्रिभुवन पाल विहार मे प्रतिदिन 62 सामन्तो तथा 1800 श्रीमन्तो 72 राजाओ के साथ अष्ट प्रकारी पूजा करते थे।

(7) भरत चक्रवर्ती अपनी अगुठी से नीलम रत्न की प्रतिमा भराई अष्टापद पर चौविस तीर्थकरो के रत्न मय बिम्ब भराये।

(8) सप्रति राजाने सवा लाख नविन जिन मदिर बनवाये सवा करोड प्रतिमाये भराई 13 हजार जिर्णोद्वार कराये 95 हजार पच धातु की प्रतिमाये बनवाई 100 दान शालाए– कायम की इस तरह जिन मन्दिरो से तीन खण्ड की भूमि अलकृत की तथा जिनालय के शिलान्यास का समाचार आने के बाद भी सप्रति राजा भोजन करते।

(9) सिद्ध सैन सूरि जी ने विक्रमादित्य राजा को प्रतिबोध देकर शत्रुजय का सघ निकलवाया। सिद्धसेन सूरि जी के उपदेश से 170 सोने के मदिरो का अन्य राजाओ को उपदेश देकर तीर्थ उद्धार कराये।

(10) वस्तुपाल का बडा भाई लुणिग मृत्यु शय्या मे पडे थे उस समय वस्तुपाल भाई के गले लगाकर पूछता है भाई आप की अन्तिम इच्छा बताइये। काल दीपक बुझने लगा है लुणिग आर्थिक स्थिति देखकर कहा तीन काल नवकार का जाप करना। वस्तुपाल बोलते है भैया ओर कुछ मागिये भैया मैने विमल व वसही नामक मन्दिर का दर्शन करने गया मैने मन ही मन म सकल्प किया ऐसा विशाल जिन मदिर बनाने का सद्भाग्य नहीं है। परन्तु इन मदिर मे छोटा सा गोखला बनाकर एक बिम्ब की प्रतिष्ठा करवाऊँगा वस्तुपाल भाई के स्वपन को शाकार देने के लिये दृढ वचनो के साथ कहते हैं आप विश्वास रखो वचन देता हूँ। आपके नाम से आबु की धरती पर एक भव्य जिनालय बनावा कर ही रहूँगा। भाई की भावना का हार्दिक अनुमादन करते हुवे लुणिग ने प्राण छोड दिये। मत्रीश्वर वस्तुपाल तेजपाल ने अपनी जीवन काल मे कुल 5 हजार जिनालयो का निर्माण कराया और सवा लाख जिन बिम्ब भराये।

(11) अनुपमा देवी ने प्रभु पूजा करते ऐसे भाव उत्पन्न हुवे की बत्तीस लाख सोना मुहरा के आभूषण उतारकर प्रभु चरणो मे रख दिये उसी वक्त 1 करोड पुष्पो से परमात्मा की पूजा की। देरानी की भक्ति भावना देखकर जेठानी ललिता देवी हृदय भी द्रवित हो गया। उसने भी बत्तीस लाख के आभूषण प्रभुचरणो मे समर्पित कर दिये। दासी के शरीर पर एक लाख के गहने थे वह अपनी सेठानी को देखकर उसके भाव जगह उठे उसने भी सारे दागिने उतार कर प्रभु चरणो मे समर्पित कर दिये।

(12) सिद्धराज ने 85 इज की श्री ऋषभ देव की प्रतिमा भराई। राज विहार नामक विशाल जिनालय मे प्रतिष्ठा कराई।

(13) हसुमति के मजाक से पासिल ने पैतालीस हजार मणँ सुवर्ण से प्रतिमा भराई जिनालय बनाया। रग मडप का लाभ अपनी विधवा बहन को दिया। नौ लाख सोना की मुहरे व्यय करके मेघनाद मडप का निर्माण कराया।

(14) काली के कडदे वचन से घनसार के घर आये शिल्पियो को देखकर पत्नी को कहा मेरे पास तो धन नही है तुम चाहो तो जेवर बेच कर मदिर का जीर्णोद्धार करवाये। पत्नी ने आभूषण उताकर जीर्णोंद्धार के लिये दे दिये। प्रतिष्ठा महोत्सव के खर्च के लिये धनसार धनोपार्जन के लिये परदेश गये। इन्द्र ने धनसार को रत्न पोट ली दी। उससे धनसार ने बडे महोत्सव के साथ प्रतिष्ठा कराई और अपनी भाई की पत्नी को सुवर्ण जीभ भेट की। सघ बोलने लगा कटु वचन बोलने वाली काली को यह उपहार।

(15) सिद्धराज ने साजन मत्री को दडनायक रूप मे नियुक्त किया था एक बार कर लेने सौराष्ट्र भेजा गिरनार तीर्थ की यात्रा करने गये बिजली गिरने से मदिर की स्थिति देखकर हृदय द्रवित हो गया। उन्होने तीन साल की वसूल की गई कर की सारी रकम जीर्णोद्धार मे लगा दी। सिद्धराज को किसने शिकायत कर दी। दूसरे दिन गिरनार पर पधारे। गगन चूम्बी दूध से सफेद शिखरो को देखकर सिद्धराजा के मुँह से निकल गया धन्य है उसकी माता जिसने ऐसे मन्दिर का निर्माण कराया। पीछे खडे मन्त्री राज बोले धन्य है माता मीनल देवी को सिद्धराज जैसे पुत्र को जन्म दिया वचन सुनकर राजा मुडकर देखा मंत्री साढे बारह करोड़ सोना मुहरो से भरे थाल दिखाते है महाराज देख लीजिये ये सोन मुहरे और यह जिनालय दोनो में जो पसद हो रख लीजिये आपका धन मैने जीर्णोद्धार मे लगा दिया अब आप को पुण्य नही चाहिये तो रकम भी जमा करके रखी है। आपको जो चाहिये उठाइये सिद्धराजा के मुँह से तुरन्त निकल गया धन्य है मन्त्रीश्वर तुमने मुझे इतना लाभ देकर मेरा जीवन धन्य बना दिया।

खुश होकर राजा ने 12 गॉव भेट दिये मदिर निर्वाह के लिये। श्रेष्ठि ने साढे बारह क्रोड सुवर्ण मोहरो से बथली मे चार नूतन जिनालयो को बनाये।

(16) जगड ने सवा करोड की बोली लगाकर सघ माला पहनी।

(17) कुमारपाल का पुत्र नृपदेव सिह मृत्यु शय्या पर सो गया उस समय कुमार पाल पूछे बेटा जो इच्छा हो वह बोलो पिताजी इतने बडे राज्य के राजा होते हुये ईंट पत्थर के मदिर बनाये राजा वह कहलाता भरत महाराजा जैसे सोने का मदिर रत्न की प्रतिमा भरवाये। मेरी इच्छा यह थी कि मै राजा बनकर सोने के मदिर बनाउ रत्नमय बिब भराउ।

(18) रावण ने मणिरत्नो का गृह मदिर बनवाकर नीलम रत्नमय प्रभु प्रतिमा विराजमान कर प्रतिदिन जिन भक्ति करता।

(19) जस्वड ने शत्रुजय का उद्धार कराया।

(20) सवचद सोमचद ने एक लाख रुपये से सिद्धाचल तीर्थं पर जिनालय बनाया वह आज ही सवासोमा की टूक के नाम से पहचाना जाता है।

(21) लक्ष्मी पति सिह ने 20 लाख रुपये माता के कहने से जिनालय मे लगाये। भीमा कुडलिया ने सकट के समय भी तीर्थोद्धार का अवसर हाथ से नहीं जाने दिया अपनी कमाई की सात द्रम दान मे दे दिया।

(22) श्रेणिक राजा ने जिस दिशा मे प्रभु विचर रहे थे उसी दिशा म सात कदम आगे जाकर 108 सुवर्ण जौ का स्वास्तिक बनाते थे।

(23) बाणभट्टसूरि आकाश गामिनी विद्या द्वारा सिद्धाचल गिरनार आदि के दर्शन कर आहार पानी करते।

(24) आम राजा ने गौवर्धन पर्वत पर साढे तीन करोड मुद्राएँ खर्च कर जिन मन्दिर बनाये।

(25) रत्नाकर सूरि कहते हैं मैं उस धवलक श्रावक को कैसे भूलूँ जिसने मुझे परिग्रह की आसक्ति से मुक्त किया।

(26) वस्तुपाल राज कहत है मै धर्मगुरु का अपमान करने वालो को माफी नहीं दे सकता। क्षमा के नाम पर कायरता है। मै तो धर्म गुरु की अपमान कराने वाले के हाथ ही कटवा दिये।

(27) पेथडसा के वहाँ ब्रह्मचारी की ओर से कम्बल भेंट आने पर 32 साल की उम्र मे आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत स्वीकार लिया।

(28) कुमार पाल राजा प्रतिदिन वीतराग स्तोत्र एव योग शास्त्र का स्वाध्याय करके मुँह मे पानी डालते। अष्टमि चतुर्दशी को पोषध, सुबह शाम सामायिक शाम को प्रतिदिन आरती करते थे।

(29) राजा विक्रमादित्य एक करोड स्वर्णमुद्रा से सिद्धसेन दिवाकर सूरिका गुरु पूजन किया था।

(30) आमराजा ने सवा करोड स्वर्ण मुद्रा से आचार्य सिद्धसेन दिवाकर का गुरु पूजन किया था। और बाणभट्ट सूरि के आचार्य पद के समय एक करोड मुद्राएँ खर्च की।

(31) झाझणशा ने पूरे गुजरात को पाँच दिन तक भोजन कराया।

(32) कृष्णर्षि जहाँ पारणा करते वहाँ पर श्रावक लोक जिनालय बनाते।

(33) कुमार पाल राजा हेमचन्द्रसूरि की प्रतिदिन 108 सुवर्ण कमलो से गुरु पूजा करते।

(34) अनुपमा देवी ने कारीगरो से कहा, मदिर के काम मे नक्काशी करते-करते जितना सगमरमर का चूर्ण पडेगा उसके वजन जितना सोना तोलकर दिया जायेगा।

(35) विमलमत्री श्रीदेवी आबू पर जिनालय का निर्माण कार्य शुरू कराया। देवी ने कहा विमल तेरे नसीब में 'आरस या वारिस' प्रभु मदिर या पुत्र दोनो मे एक ही है विमलशा ने कहाँ आरस इस दम्पती के सत्त्व का गीत गाता हुआ वह जिनालय विमल वसही के नाम से सुशोभित है।

(36) पेथडशा हेमड के नाम से सदाव्रत चला रहे थे एक दिन हेमड मत्री भोजन करने गये सचालकों को पूछा सदाव्रत कौन चलाता है। जवाब मिला मत्रीश्वर हेमड। मैने तो नही चलाया। पेथडसा से मिले आपको मुझ पर प्रेम है तो देवगिरि मे किसी शुभ स्थान मे जिनालय के लिये जगह चाहिये करोडो रुपयो के व्यय से पेथडशा सुविशाल जिन मन्दिर बनाया।

(37) उदयन मत्री ने मकान खरीदा वहाँ पर सोने का भरा चरु निकला उदयन ने स्वीकार नहीं किया राजा ने फैसला किया उदयन ने मत्री ने उस धन को लेकर जिन मदिर बनाया।

(38) राजा कुमारपाल ने अन्तिम चौदह वर्ष मे चौदह करोड स्वर्ण मुद्राएँ साधर्मिक भक्ति मे व्यय की।

(39) श्री कृष्ण वासुदेव ने 18000 साधुओ को विधिपूर्वक वन्दन कर तीर्थंकर नाम कर्म का बन्ध किया क्षायिक समकित धारी बने चार नरक की बधतोडे। धन्य है। एसे वीर पुरुषो को राजकुमार पालने अन्तिम चौदह वर्ष मे चौदह करोड स्वर्ण मुद्राएँ साधर्मिक भक्ति मे व्यय की।

(40) थराद क आभूसघवी ने 360 साधर्मिक को अपने जैसे श्रीमत बनाया था।

(41) सत्य व्रत के पालन से खुश होकर फिराज शाह ने महण सिह को करोडपति बनाया था।

(42) सम्भव नाथ भगवान ने तीसर भव मे तीर्थंकर नाम कर्म का उपार्जन दुष्काल म की गई साधर्मिक भक्ति ही प्रमुख कारण थी।

(43) माडवगर मे ऐसा नियम था नया साधर्मिक गाँव मे आवे तो उसकी एक ईंट एव सुर्वण मुद्रा देते थे जिससे वह धनाढय बन जाते थे।

(44) सेठ मोतीशा ने शत्रुजय पर मोतीशा की टूक मे भव्य गगन चूबि जिनालय बनाया अनेको मूर्ति भराई। बम्बई मद्रास आदि अनेको स्थान मे भव्य जिनालय दादावाडी आदि अनेको शासन के कार्य किये धन्य है दानवीर सेठ मोतीशा जिन्होने अपने पूर्वजो का गौरव बढाया।

(45) दानवीर जगडुशा ने स० 1315 मे दुषकाल के समय विभिन्न देशो म 281 दानशालाये खोली एव राजाआ को इतना दान दिया था विमलदेव को 8000 मुद्रा हमीर देव को 12000 मुद्रा दिल्ली के सुलतान को 21000 मुद्रा मालवी के राजवी को 18000 मेवाड के राजवी को 3200 मुद्रा अन्न दान दिया था।

(46) खरतर गच्छाचार्य जिनप्रभसूरि प्रतिदिन नवीन पाँच गाथा की रचना करने के बाद ही आहार पानी ग्रहण करते ऐसा अभिग्रह था।

(47) धर्मघोष सूरि सिर्फ छः घटिका मे 500 श्लोक कंठस्थ करते थे।

(48) उपाध्याय यशोविजयजी 5000 श्लोक एक रात्री मे कठस्थ करते थे।

(49) उपाध्याय विनय विजयजी 3000 श्लोक कठस्थ किये थे।

(50) पेथडशा मत्री भगवती सूत्र का ख्याख्यान मे सुनते समय उसमे आने वाले प्रत्येक गोयमा शब्द ही एक सुवर्ण मोहर से पूजा करते थे ऐसे 36000 सुवर्ण मुद्राओ से पूजा की उस द्रव्य से भरुच मे सात ज्ञान भण्डार स्थापित किये।

(51) पेथडशा की पत्नी प्रतिदिन मदिर जाते समय सवासेर स्वर्ण का दान देती थी।

(52) मल्लवादी ने शिला दिव्य राजा की सभा मे बौद्धो को पराजय कर के सिद्धाचल तीर्थ को बौद्धो के अधिपत्य से मुक्त कराया।

(53) शोभन वो स्तुती रचना मे इतने तल्लीन थे कि पात्र मे पथ डाल दिया तो भी पता नही चला।

(54) घन्ना सा ने राणकपूर तीर्थ बनाकर अपने नाम को अमर कर दिया।

जैनम् जयति शासनम्



पुस्तक प्राप्ति स्थान

विजय कुमारी दुगड

बी-61, साउथ एक्सटेशन पार्ट-I

नई दिल्ली 110049

दूरभाष 4621832